शान्ति की शक्ति

साइलेन्स पावर

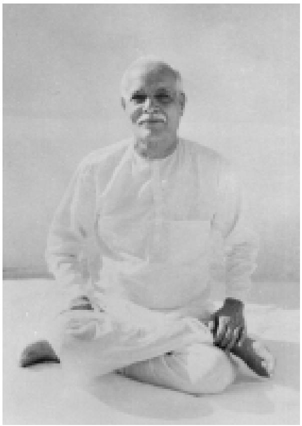

साइलेन्स पावर

कृति

(संकलन)

स्पार्क (SpARC)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
एवं
राजयोग एज्युकेशन एवं शोध प्रतिष्ठान
पाण्डव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान

स्पार्क (SpARC)

स्पार्क (SpARC) एक अनुसन्धान प्रभाग (Research Wing) है जो कि देश तथा विदेश के अनेक स्थानों पर कार्य कर रहा है। स्पार्क (SpARC) शब्द का विस्तार (Fullform) Spiritual Applications Research Centre है और इसका लक्ष्य है विश्व नव-निर्माण के कार्य में अध्यात्म एवं विज्ञान को एक-दूसरे का सहयोगी बनाना। इसी लक्ष्य-पूर्ति के लिये स्पार्क मनन-चिंतन और विचार सागर मंथन के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान को वैज्ञानिक पृष्ठभूमि और विज्ञान के विरोधोक्ति युक्त शाखाओं को आध्यात्मिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हुए दोनों को एक-दूसरे के समीप लाकर आपस में मिलकर कार्य करने के लिए तैयार कर रहा है।

इस कार्य में तीव्र गति से अग्रसर होने के लिए तथा जीवन के समस्त पहलुओं में आध्यात्मिकता का प्रयोग और उपयोग से प्राप्त परिणामों को सर्वमान्य बनाने के लिए प्रभावशाली विधि, साधन और तकनीक का विकास करने आदि कार्य में **स्पार्क सर्व प्रकार के अनुसन्धानों को प्रोत्साहित करता है।**

लोकल चैप्टर:

स्पार्क की गतिविधियों को और अधिक गतिशील बनाने के लिए देश-विदेश में स्पार्क के लोकल चैप्टर्स चल रहे हैं। एक अथवा एक से अधिक सेवाकेन्द्र, शहर, राज्य अथवा देश के 5 से अधिक बी.के. भाई-बहनों के समूह जब मिलकर स्पार्क के गतिविधि को कार्यान्वित करते हैं उसे स्पार्क लोकल चैप्टर (Local Chapter) कहा जाता है। किसी भी स्थान पर लोकल चैप्टर शुरू करने के लिए यह आवश्यक है कि उस स्थान के सेवाकेन्द्र की प्रभारी बहन की स्वीकृति से सेवाकन्द्र पर 5 से अधिक दैवी भाई-बहनों का एक ग्रुप तैयार किया जाए। सभी भाई-बहनें सप्ताह में, 15 दिन में या मास में कम से कम एक बार आपस में मिलकर ईश्वरीय ज्ञान बिन्दु पर रूह-रिहान, विचार-सागर मंथन करें तथा कार्यशाला और परिचिर्चा आदि कार्यक्रम का आयोजन करें। ब्र.कु. भाई-बहनों के आध्यात्मिक उन्नत्ति के साथ-साथ अन्य आत्माओं की सेवा करने के लिए नवीन विधियों का निर्माण कर सकें।

इसके तहत कईं वर्षों से गांधीनगर, गुजरात मुख्य सेवाकेन्द्र के भाई-बहनों का एक ग्रुप अव्यक्त मुरलियों का गहन अध्ययन कर उस पर अभ्यास कर रहा है। इस पुण्य पुरुषार्थ के फल स्वरूप इस ग्रुप ने 40 से अधिक विषयों पर अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों को सुनियोजित तरीके से संकलन किया है। उनमें से **'साइलेन्स पावर'** एक है।

‘शान्ति की शक्ति’
Power of Silence

जैसे साइन्स के साधनों द्वारा समय और आवाज़ कितना भी दूर होते समीप हो गया है ना। जैसे प्लेन द्वारा समय कितना नज़दीक हो गया है, थोड़े समय में कहाँ से कहाँ पहुँच सकते हो। टेलीफोन द्वारा आवाज़ कितना समीप हो गया है। लण्डन के व्यक्ति का आवाज़ भी ऐसे सुनाई देगा जैसे सम्मुख बात कर रहे हैं। ऐसे ही टेलीविजन के साधनों द्वारा कोई भी दृश्य वा व्यक्ति दूर होते हुए भी सम्मुख अनुभव होता है। साइन्स तो आपकी रचना है। आप मास्टर रचयिता हो। साइलेन्स की शक्ति से आप सब भी विश्व की किसी भी दूर रहने वाली आत्मा का आवाज़ सुन सकते हो। कौन-सा आवाज़? साइन्स मुख का आवाज़ सुनाने का साधन बन सकती है लेकिन मन का आवाज़ नहीं पहुँचा सकती। साइलेन्स की शक्ति से हर आत्मा के मन का आवाज़ इतना ही समीप सुनाई देगा जैसे कोई सम्मुख बोल रहा है। आत्माओं के मन में अशान्ति, दु:ख की स्थिति के चित्र ऐसे ही स्पष्ट दिखाई देंगे जैसे टी.वी. द्वारा दृश्य वा व्यक्ति स्पष्ट देखते हो। जैसे इन साधनों का कनेक्शन जोड़ा, स्वीच ऑन किया और स्पष्ट दिखाई और सुनाई देता है। ऐसे ही बाप से कनेक्शन जोड़ा, श्रेष्ठ भावना और कामना का स्वीच ऑन किया तो दूर की आत्माओं को भी समीप अनुभव करेंगे। इसको कहा जाता है विश्व-कल्याणकारी। ऐसी स्थिति को बनाने के लिए विशेष कोन-सा साधन अपनाना पड़े। इन सबका आधार है - साइलेन्स। वर्तमान समय साइलेन्स की शक्ति जमा करो।

(03/12/1979)

साइलेन्स की शक्ति कितनी महान है? साइलेन्स की शक्ति, क्रोध-अग्नि को शीतल कर देती है। साइलेन्स की शक्ति व्यर्थ संकल्पों

की हलचल को समाप्त कर सकती है। साइलेन्स की शक्ति ही कैसे भी पुराने संस्कार हों, ऐसे पुराने संस्कार समाप्त कर देती है। साइलेन्स की शक्ति अनेक प्रकार के मानसिक रोग सहज समाप्त कर सकती है। साइलेंन्स की शक्ति, शान्ति के सागर बाप से अनेक आत्माओं का मिलन करा सकती है। साइलेन्स की शक्ति-अनेक जन्मों से भटकती हुई आत्माओं को ठिकाने की अनुभूति करा सकती है। महान आत्मा, धर्मात्मा सब बना देती है। साइलेन्स की शक्ति - सेकण्ड में तीनों लोकों की सैर करा सकती है। साइलेन्स की शक्ति-कम मेहनत, कम खर्चा बालानशीन करा सकती है। साइलेन्स की शक्ति-समय के ख़ज़ाने में भी एकानामी करा देती है अर्थात् कम समय में ज्यादा सफलता पा सकते हो। साइलेन्स की शक्ति-हाहाकार से जयजयकार करा सकती है। साइलेन्स की शक्ति सदा आपके गले में सफलता की मालायें पहनायेंगी।

(13/11/1981)

(जानकी दादी):- अब तक वाणीमूर्त बने हो फिर बनेंगे साक्षात्कार मूर्त। अभी वाणी से औरों को साक्षात्कार होता है लेकिन फिर होगा सायलेन्स से साक्षात्कार। जब बनेंगे तो सभी के मुख से क्या निकलेगा? यह जो गायन है ना कि सभी परमात्मा के रूप हैं, यह गायन संगम पर ही प्रैक्टिकल में होता है। **भक्तिमार्ग में जो भी बातें चली हैं वह संगम की बातों को मिक्स किया है।** तुम्हारी अन्त में यह स्थिति आती है, जो सभी में साक्षात् बापदादा की मूर्त महसूस होगी।

(23/03/1970)

आजकल साइंस वाले भी विस्तार को समेटने का ही पुरुषार्थ कर रहे हैं। साइन्स पावर वाले भी तुम सायलेंस की शक्ति वालों से कॉपी करते हैं। जैसे-जैसे साइलेंस की शक्ति सेना पुरुषार्थ करती है वैसा ही वह भी पुरुषार्थ कर रहे हैं।

पहले साइलेंस की शक्ति सेना इन्वेन्शन करती है फिर साइंस अपने रूप से इन्वेन्शन करती है। जैसे-जैसे यहाँ रिफाइन होते जाते हैं वैसे ही साइंस भी रिफाइन होती जाती है। जो बातें पहले उन्हों को भी असम्भव लगती थी वह अब सम्भव होती जा रही हैं। वैसे ही यहाँ भी असम्भव बातें सरल और सम्भव होती जाती है। अब मुख्य पुरुषार्थ यही करना है कि आवाज में लाना जितना सहज है उतना ही आवाज से परे जाना सहज हो। इसको ही सम्पूर्ण स्थिति के समीप की स्थिति कहा जाता है।

(05/04/1970)

जो कहा वह किया। संकल्प और कर्म में अन्तर नहीं होता। क्योंकि **संकल्प भी जीवन का अनमोल खजाना है।** जैसे स्थुल खजाने को व्यर्थ नहीं करते हो वैसे शिव शक्तियाँ जिनकी मूर्त में दोनों गुण प्रत्यक्ष रूप में हैं उन्हों का एक भी संकल्प व्यर्थ नहीं होता। एक एक संकल्प से स्वयं का और सर्व का कल्याण होता है। एक सेकेण्ड में, एक संकल्प से भी कल्याण कर सकते हैं। इसलिए शक्तियों को कल्याणी कहते हैं। जैसे बापदादा कल्याणकारी है वैसे बच्चों का भी कल्याणकारी नाम प्रसिद्ध है। अब तो इतना हिसाब देखना पड़े। हमारे कितने सेकेण्ड में, कितने संकल्प सफल हुए, कितने असफल हुए। जैसे आजकल साइंस ने बहुत उन्नति की है जो एक स्थान पर बैठे हुए अपने अस्त्रों द्वारा एक सेकेण्ड में विनाश कर सकते हैं। तो क्या शक्तियों का यह साइलेन्स बल कहाँ भी बैठे एक सेकेण्ड में काम नहीं कर सकता? कहाँ जाने की अथवा उन्हों को आने की भी आवश्यकता नहीं। **अपने शुद्ध संकल्पों द्वारा आत्माओं को खींचकर सामने लायेगा। जाकर मेहनत करने की आवश्यकता नहीं।** अब ऐसे भी प्रभाव देखेंगे। जैसे साकार में कहते रहते थे कि ऐसा तीर लगाओ जो तीर सहित आप के सामने पक्षी आ जाये। अब यह होगा अपनी विलपावर से।

(02/07/1970)

अन्तिम पुरुषार्थ याद का ही है। इसलिए याद की स्टेज वा अनुभव को भी बुद्धि में स्पष्ट समझना आवश्यक है। बिन्दु रुप की स्थिति क्या है और अव्यक्त स्थिति क्या है, दोनों का अनुभव क्या-क्या है? क्योंकि नाम दो कहते हैं तो जरूर दोनों के अनुभव में भी अन्तर होगा। चलते-फिरते बिन्दु रूप की स्थिति इस समय कम भी नहीं लेकिन ना के बराबर ही कहें। इसका भी अभ्यास करना चाहिए। बीच-बीच में एक दो मिनट भी निकाल कर इस बिन्दी रूप की प्रैक्टिस करनी चाहिए। जैसे जब कोई ऐसा दिन होता है तो सारे चलते-फिरते हुए ट्रैफिक को भी रोक कर तीन मिनट साइलेन्स की प्रैक्टिस कराते हैं। सारे चलते हुए कार्य को स्टॉप कर लेते हैं। आप भी कोई कार्य करते हो वा बात करते हो तो बीच-बीच में यह संकल्पों की ट्रैफिक को स्टॉप करना चाहिए। एक मिनट के लिए भी मन के संकल्पों को चाहे शरीर द्वारा चलते हुए कर्म को बीच में रोक कर भी यह प्रैक्टिस करना चाहिए। अगर यह प्रैक्टिस नहीं करेंगे तो बिन्दु रूप की पावरफुल स्टेज कैसे और कब ला सकेंगे? इसलिए यह अभ्यास करना आवश्यक है। बीच-बीच में यह प्रैक्टिस प्रैक्टिकल में करते रहेंगे तो जो आज यह बिन्दु रुप की स्थिति मुश्किल लगती है वह ऐसे सरल हो जायेगी जैसे अभी मैजारिटी को अव्यक्त स्थिति सहज लगती है। पहले जब अभ्यास शुरू किया तो व्यक्त में अव्यक्त स्थिति में रहना भी मुश्किल लगता था। अभी अव्यक्त स्थिति में रह कार्य करना जैसे सरल होता जा रहा है वैसे ही यह बिन्दुरुप की स्थिति भी सहज हो जायेगी। अभी महारथियों को यह प्रैक्टिस करनी चाहिए।

(24/07/1970)

समस्या को फौरन समाप्त कर देंगे तो फिर वंश पैदा नहीं होगा। अंश रहता है तो वंश होता है। अंश को ही खत्म कर देंगे तो वंश कहाँ से आयेगा। तो समझा समस्या के बर्थ को कन्ट्रोल करना है। अभी इशारे में कह रहे हैं फिर सभी प्रत्यक्ष रूप में आपकी स्थिति बोलेगी। छिप नहीं सकेंगे। जैसे नारद

की सूरत सभा के बीच छिप सकी? अभी तो बाप गुप्त रखते हैं लेकिन थोड़े समय के बाद फिर गुप्त नहीं रह सकेगा। उनकी सूरत सीरत को प्रत्यक्ष करेगी। जैसे साइन्स में आजकल इन्वेन्शन करते जाते हैं। कोई भी गुप्त चीज़ स्वत: ही प्रत्यक्ष हो जाये। ऐसे ही साइलेन्स की शक्ति का भी स्वत: ही प्रत्यक्ष रूप हो जायेगा। कहने वा करने से नहीं होगा।

(22/10/1970)

एक शब्द को याद रखने से जीवन को बदल सकते हो। अभी जैसे समय की रफ्तार चल रही है उसी प्रमाण अभी यह पांव पृथ्वी पर नहीं रहने चाहिए। कौन सा पांव? जिससे याद की यात्रा करते हो। कहावत है ना कि फरिश्तों के पांव पृथ्वी पर नहीं होते। तो अभी यह बुद्धि पृथ्वी अर्थात् प्रकृति के आकर्षण से परे हो जायेगी फिर कोई भी चीज नीचे नहीं ला सकती है। फिर प्रकृति को अधीन करने वाले हो जायेंगे। न कि प्रकृति के अधीन होने वाले। जैसे साईन्स वाले आज प्रयत्न कर रहे हैं, पृथ्वी से परे जाने के लिये। वैसे ही साइलेन्स की शक्ति से इस प्रकृति के आकर्षण से परे, जब चाहें तब आधार लें, न कि प्रकृति जब चाहे तब अधीन कर दे। तो ऐसी स्थिति कहाँ तक बनी है? अभी तो बापदादा साथ चलने के लिये सूक्ष्मवतन में अपना कर्त्तव्य कर रहे हैं लेकिन यह भी कब तक? जाना तो अपने ही घर में हैं ना। इसलिये अभी जल्दी-जल्दी अपने को ऊपर की स्थिति में स्थित करने का प्रयत्न करो। साथ चलना, साथ रहना और फिर साथ में राज्य करना है ना। साथ कैसे होगा? समान बनने से। समान नहीं बनेंगे तो साथ कैसे होगा। अभी साथ उड़ना है, साथ रहना है। यह स्मृति में रखो तब अपने को जल्दी समान बना सकेंगे।

(01/11/1970)

पुरुषार्थ का मुख्य आधार कैचिंग पावर पर है। जैसे आजकल साइन्स वाले आवाज को कैच करने का भी प्रयत्न करते हैं। लेकिन साइलेन्स की शक्ति

से आप लोग क्या कैच करते हो? जैसे वह बहुत पहले के साउन्ड को कैच करते हैं, वैसे आप क्या कैच करते हो? अपने 5000 वर्ष पहले के दैवी संस्कार कैच कर सकते हो? कैचिंग पावर इतनी आई है। वह तो दूसरों की साउन्ड को कैच कर सकते हैं। आप अपने असली संस्कारों को सिर्फ कैच नहीं करते, लेकिन अपना प्रैक्टिकल स्वरूप बनाते हो। **सदैव यह स्मृति में रखो कि मैं यही था और फिर बन रहा हूँ। जितना-जितना उन संस्कारों को कैच कर सकेंगे उतना स्वरूप बन सकेगें।** अपनी स्मृति को पावरफुल बनाओ अर्थात् श्रेष्ठ और स्पष्ट बनाओ। जैसे अपने वर्तमान स्वरूप का, वर्तमान संस्कारों का स्पष्ट अनुभव होता है ऐसे अपने आदि स्वरूपों और संस्कारों का भी इतना ही स्पष्ट अनुभव हो। समझा। इतनी कैचिंग पावर चाहिए। जैसे वर्तमान समय में अपनी चलन व कर्त्तव्य स्पष्ट और सहज स्मृति में रहती है। ऐसे ही अपनी असली चलन सहज और स्पष्ट स्मृति में रहे। सदैव यही दृढ़ संकल्प रहे कि यह मैं ही तो था। 5000 वर्ष की बात इतनी स्पष्ट अनुभव में आये जैसे कल की बात। इसको कहते हैं कैचिंग पावर।

(09/12/1970)

जैसे साइन्स की परमाणु शक्ति आज क्या से क्या दिखा रही है। वैसे ही साइलेन्स के शक्तिदल में आप प्रवृत्ति में रहने वाली प्रमाण हो। वह परमाणु शक्ति है और आप लोग सृष्टि के आगे एक प्रमाण हो। तो आप भी प्रमाण बनकर बहुत ही सर्विस कर सकती हो।

(01/03/1971)

स्वदर्शन चक्र के अन्दर फिर यह एक दिन का चक्र। शुरू में ड्रिल करते थे तो चक्र के अन्दर चक्र में जाते थे, फिर निकलते थे ना। तो यह बेहद का 5000 वर्ष का चक्र है। उसमें फिर छोटे-छोटे चक्र हैं। तो अपना वह दिनचर्या का

चक्र सदैव क्लीयर रहे, मूँझे नहीं। तब चक्रवर्ती राजा बनेंगे। रजिस्टर साफ करना आता है ना। आजकल साइन्स ने भी ऐसी इन्वेन्शन की है, जो लिखा हुआ सभी मिट जाये जो मालूम ही न पड़े। तो क्या साइलेन्स की शक्ति से अपने रजिस्टर को रोज साफ़ नहीं कर सकते हो? इसलिए कहा हुआ है कि बाप के प्रिय वा प्रभु प्रिय वा दैवी लोक दोनों के प्रिय कौन बन सकते? **सच्चाई और सफाई वाले प्रभु प्रिय भी है और लोक प्रिय भी और अपने आपको भी प्रिय लगते हैं।** सच्चाई -सफाई को सभी पसन्द करते हैं। रजिस्टर साफ रखना-यह भी सफाई हुई ना। और सच्ची दिल पर साहब राजी हो जाता है अर्थात् हिम्मत और याद से मदद मिल जाती है।

(18/07/1971)

सी.आई.डी.का और क्या अर्थ है? चेकिंग ही सी.आई.डी. है। चेकिंग रूपी सी.आई.डी. होशियार है तो कभी भी दुश्मन से हार नहीं खा सकते। इसलिए अब भी प्रयत्न करो कि पहले से ही मालूम रहे। जैसे बारिस होने वाली होती है तो प्रकृति पहले से ही सावधानी जरूर देती है। अगर नालेजफुल हो तो प्रकृति के विघ्न से वह बच सकता है। अगर नालेजफुल नहीं तो प्रकृति के जो भिन्न-भिन्न छोटी-छोटी चीजें दु:ख की वा बीमारी की निमित्त बनती हैं उनके अधीन बन जाते हैं। कारण क्या होगा? पहचान वा नालेज की कमी। तो जैसे-जैसे याद की शक्ति अर्थात् साइलेन्स की शक्ति अपने में भरती जायेगी तो पहले से ही मालूम पड़ेगा कि आज कुछ होने वाला है। और दिन-प्रतिदिन जो अनन्य महारथी अटेन्शन और चेकिंग में रहते हैं, वह यह अनुभव करते जा रहे हैं। बुखार भी आने वाला होता है तो पहले से ही उसकी निशानियाँ दिखाई पड़ती हैं। तो इसमें भी अगर नालेजफुल हैं तो जो पेपर आने वाला है उसकी कोई निशानियाँ ज़रूर होती हैं लेकिन परखने की शक्ति पावरफुल हो तो कभी हार नहीं हो सकती। **ज्योतिषि भी अपने ज्योतिष की नालेज से, ग्रहों की नालेज से आने वाली आपदाओं को**

जानते हैं। आपकी नालेज के आगे तो वह नालेज कुछ भी नहीं है। तुच्छ कहेंगे। तो जब तुच्छ नालेज वाले एडवान्स को जान सकते हैं अपनी नालेज की पावर से, तो क्या इतनी श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ नालेज से मास्टर नालेजफुल यह नहीं जान सकते? नहीं जान सकते तो इसका कारण यह है कि बुद्धि रूपी नेत्र क्लीयर नहीं हैं। और क्लीयर न होने का कारण क्या? केयरफुल नहीं। केयरफुल न होने के कारण नालेजफुल नहीं। नालेजफुल न होने कारण पावरफुल नहीं। पावरफुल न होने के कारण जो विजय की प्राप्ति होनी चाहिए वह नहीं होती। तो अपने नेत्र को क्लीयर रखना मुश्किल बात है क्या?

(27/07/1971)

एक तो सर्विस में नवीनता, दूसरा निमित्त बनी हुई आत्माओं में नवीनता दिखाई दे। क्योंकि सर्विस का सारा आधार विशेष आत्माओं पर है। अभी तो सब समझते हैं। जैसे साइंस वाले पावरफुल इन्वेन्शन निकाल रहे हैं वैसे यह शक्ति ग्रुप भी पावरफुल साइलेन्स का श्रेष्ठ शस्त्र तैयार कर दिखायेंगे। आपस में सिर्फ मिलना नहीं है लेकिन मिल करके कोई पावरफुल शस्त्र तैयार करना है। जो अति पावरफुल चीज़ होती है वह अन्डरग्राउण्ड होती है। तो यह संगठन भी अन्डरग्राउण्ड है। अन्तर्मुखता में अन्दर जाकर सोचने का है। कोई कमालियत दिखानी है।

(09/10/1971)

अपने कल्याण की वृत्ति से उन्हें स्मृति दिलाते हर आत्मा को गेट-पास दे सकेंगे। बिचारी तड़फती हुई आत्माएं आप श्रेष्ठ आत्माओं से सिर्फ एक सेकेण्ड में अपने जन्म-जन्म की आशा पूरी करने का दान मांगने आयेंगी। इतनी सर्वशक्तियां जमा की हैं जो मास्टर सर्वशक्तिवान् बन एक सेकेण्ड की विधि से उन आत्माओं को सिद्धि प्राप्त कराओ? जब साइंस रचना की शक्ति दिन-प्रतिदिन काल अर्थात् समय के ऊपर विजय प्राप्त करती जा रही है, हर कार्य में बहुत थोड़े समय की

विधि से कार्य की सिद्धि को प्राप्त करते जा रहे हैं। स्विच ऑन किया और कार्य सिद्ध हुआ। यह विधि है ना। तो क्या मास्टर रचयिता, अपने साइलेन्स की शक्ति से वा सर्व शक्तियों से एक सेकण्ड की विधि से कोई को सिद्धि नहीं दे सकते हैं? तो अब इस श्रेष्ठ सेवा की आवश्यकता है। ऐसे सेवाधारी वा खुदाई-खिदमदगार बनो।

(24/10/1971)

बिना साज के राज समझ सकते हो? ऐसे अभ्यासी बने हो जो राज़ आपके मन में हैं वह राज़ दूसरे को बिना साज के समझा सकते हो? पिछाड़ी की सेवा में तो साज़ समा जायेगा, राज़ को ही समझाना पड़ेगा तो ऐसी प्रैक्टिस करनी चाहिए। जब साइंस बहुत कुछ करके दिखा रही हैं; तो क्या साइलेन्स में वह शक्ति नहीं है? जितना-जितना स्वयं राजयुक्त, योगयुक्त बनते जायेंगे उतना-उतना औरों को भी बिना साज के राजयुक्त बना सकते हो। इतनी सारी प्रजा कैसे बनायेंगे? इसी स्पीड से इतनी प्रजा बन सकेगी! पिछली प्रजा के ऊपर भी इतनी मेहनत करेंगे? जैसे ठप्पे बने हुए होते हैं, तो एक सेकेण्ड में लगाते जाते हैं। वैसे ही एक सेकण्ड की पावरफुल स्टेज ऐसे रहेगी जो बिगर बोले, बिगर मेहनत करते दैवी घराने की आत्मा का छाप लगा देंगे। यह ही सर्वशक्तिवान् का गायन है। वरदानी बन एक सेकण्ड में भक्तों को वरदान देना। वरदान देने में मेहनत नहीं लगती, वर्सा पाने में मेहनत है। वर्सा पाने वाले मेहनत कर रहे हैं, मेहनत ले रहे हैं लेकिन वरदानी मूर्ति जब बन जायेंगे फिर मेहनत लेने वाले न लेंगे, न देने वाले मेहनत करेंगे। तो तुम्हारी लास्ट स्टेज है वरदानी मूर्त्त। जैसे लक्ष्मी के हस्तों से स्थूल धन देते हुए दिखाते हैं। यह तुम्हारा लास्ट शक्ति रूप का है, न कि लक्ष्मी का। शक्ति रूप से सर्वशक्तिवान् का वरदान देते हुए का यह चित्र है। जिसको स्थूल धन के रूप में दिखाते हैं। तो ऐसा अपना स्वरूप सदा वरदानी अपने आप को साक्षात्कार होता है? इससे ही समय का अन्दाज़ लगा सकते हो। फिर वरदानी मूर्त्त शक्तियों के आगे सभी

आयेंगे। इसके लिए एक तरफ वरदान का बीज़ पड़ेगा। तो अपने में सर्व शक्ति जमा करनी है। ऐसे वरदानी मूर्त्त बनते और बनाते जाओ। आवाज़ से परे जाना है।

(01/12/1971)

पहली जो बात पूछ रहे थे-सहज युक्ति कौन-सी है। जो रिवाइज कोर्स में भी बहुत रिवाइज हो रही है? वह है अमृतवेले अपने आप से और बाप से रूह-रूहान करना वा अमृतवेले को महत्त्व देना। जैसा नाम कहते हो वैसे ही उस वेला को वरदान भी तो मिला हुआ है। कोई भी श्रेष्ठ कर्म करते है तो आज तक के यादगार में भी वेला को देखते है ना। यहाँ भी पुरुषार्थ के लिए सहज प्राप्ति के लिए सबसे अच्छी वेला कौन-सी है? अमृतवेला। अमृतवेले के समय अपनी आत्मा को अमृत से भरपूर कर देने से सारा दिन कर्म भी ऐसे होंगे। जैसी वेला श्रेष्ठ, अमृत श्रेष्ठ वैसे ही हर कर्म और संकल्प भी सारा दिन श्रेष्ठ होगा। अगर इस श्रेष्ठ वेला को साधारण रीति से चला लेते तो सारा दिन संकल्प और कर्म भी साधारण ही चलते है। तो ऐसे समझना चाहिए यह अमृतवेला सारे दिन के समय का फाउन्डेशन वेला है। अगर फाउन्डेशन कमजोर वा साधरण डालेंगे तो ऊपर की बनावट भी आटोमेटिकली ऐसी होगी। इस कारण जैसे फाउन्डेशन की तरफ सदैव अटेन्शन दिया जाता है वैसे सारे दिन का फाउन्डेशन टाइम अमृतवेला है। उसका महत्व समझकर चलेंगे तो कर्म भी महत्व प्रमाण होंगे। इसको ब्रह्म-मुहूर्त भी क्यों कहते हैं? ब्रह्मा-मुहूर्त है वा ब्रह्म-मुहूर्त है? ब्रह्मा-मुहूर्त भी राइट है, क्योंकि सभी ब्रह्मा समान नये दिन का आरम्भ, स्थापना करते हो। वह भी राइट है, लेकिन ब्रह्म-मुहूर्त का अर्थ क्या है? उस समय का वायुमण्डल ऐसा होता है जो आत्मा सहज ही ब्रह्म-निवासी बनने का अनुभव कर सकती है। दूसरे समय में पुरुषार्थ करके आवाज से, वायुमण्डल से अपने को डिटैच करते हो या मेहनत करते हो। लेकिन उस समय इस मेहनत की आवश्यकता नहीं होती। जैसे ब्रह्म घर शान्तिधाम है वैसे ही अमृतवेले के समय में भी आटोमेटिकली साइलेंस रहती है। साइलेंस के कारण

शान्तस्वरुप की स्टेज वा शान्तिधाम निवासी बनने की स्टेज को सहज ही धारण कर सकते हो। तो जो श्रीमत मिली हुई है, इसको ब्रह्म-मुहूर्त के समय स्मृति में लायेंगे तो ब्रह्म-मुहूर्त वा अमृतवेला के समय स्मृति भी सहज आ जायेगी। देखो, पढ़ाई पढ़ने वाले भी पढ़ाई को स्मृति में रखने के लिए इसी टाइम पढ़ने की कोशिश करते है, क्योंकि इसी समय सहज स्मृति रहती है। तो अपनी स्मृति को भी समर्थवान बनाना है वा स्वत: स्मृतिस्वरुप बनना है तो अमृतवेले की मदद से वा श्रीमत का पालन करने से सहज ही स्मृति को समर्थीवान बना सकते हो। जैसे समय की वैल्यु है इतनी उसी समय को वैल्यु देते हो वा कब नहीं देते हो? वैल्यु का तराजू कब नीचे, कब ऊपर जाता है? क्या होता है? यह बहुत सहज युक्ति है सिर्फ इस युक्ति को इतनी वैल्यु देनी है। जैसे श्रीमत है उसी प्रमाण समय को पहचान कर और समय प्रमाण कर्त्तव्य किया तो बहुत सहज सर्व प्राप्ति कर सकते हो। फिर मेहनत से छूट जायेंगे। छूटना चाहते हो तो उसके लिए जो साधन है, उसको अपनाते जाओ।

(24/12/1972)

आजकल लेक्चर में आपका कम्पीटीशन करें तो इसमें कई और भी जीत लेंगे। लेकिन जो प्रैक्टिकल में है उसमें सभी आपसे हार लेंगे। मुख्य विशेषता प्रैक्टिकल लाइफ की है। प्रैक्टिकल कोई भी बात आप बताओ तो एकदम चुप हो जावेंगे। तो लेक्चर्स से फिर प्रैक्टिकल का भाव प्रकट हो जावेगा। तब वह लेक्चर देने से न्यारा दिखाई दे। जो शब्द बोलते हो वह नैनों से दिखाई दें। यह जो बोलते हैं वह प्रैक्टिकल है, यह अनुभवीमूर्त हैं। तब उसका प्रभाव पड़ सकता है। बाकी सुन-सुन कर तो सभी थक गये हैं। बहुत सुना है। अनेक सुनाने वाले होने कारण सुनने से सभी थके हुये हैं। कहते हैं - सुना तो बहुत है, अब अनुभव करना चाहते हैं, कोई 'प्राप्ति' कराओ। तो लेक्चर में ऐसी पावर होनी चाहिए जो वह एक-एक शब्द अनुभव कराने वाला हो। जैसे आप समझाते हो न कि अपने को आत्मा

समझो, ना कि शरीर। तो ये शब्द बोलने में भी इतनी पावर होनी चाहिए जो सुनने वालों को आपके शब्दों की पावर से अनुभव हो। एक सेकेण्ड के लिये भी अगर उनको अनुभव हो जाता है; तो अनुभव को वह कब छोड़ नहीं सकते, आकर्षित हुआ आपके पास पहुँचेगा। जैसे बीच-बीच में आप भाषण करते-करते उनको साइलेंस में ले जाने का अनुभव कराते हो, तो इस प्रैक्टिस को बढ़ाते जाओ। उन्हों को अनुभव में ले जाते जाओ। इस पुरानी दुनिया से बेहद का वैराग दिलाने चाहते हो तो भाषण में जो प्वाईटस् देते हो वह देते हुये वैराग्य-वृति के अनुभव में ले आओ। वह फील करे कि सचमुच यह सृष्टि जाने वाली है, इससे तो दिल लगाना व्यर्थ है। तो जरुर प्रैक्टिकल करेंगे। उन पंडितों आदि के बोलने में भी पावर होती है। एक सेकेण्ड में खुशी दिला देते, एक सेकेण्ड में रुला देते। तब कहते हैं इनका भाषण इफेक्ट करने वाला है। सारी सभा का हंसाते भी हैं, सभी को श्मशानी वैराग्य में लाते भी हैं ना। जब उन्हों के भाषण में इतनी पावर होती है; तो क्या आप लोगों के भाषण में वह पावर नहीं हो सकती है? अशरीरी बनाना चाहो तो वह अनुभव करा सकते हैं? वह लहर छा जावे। सारी सभा के बीच बाप के स्नेह की लहर छा जावे। उसको कहा जाता है प्रैक्टिकल अनुभव कराना। अब ऐसे भाषण होने चाहिएं, तब कुछ चेंज होगी। वह समझें कि इन्हों के भाषण तो दुनिया से न्यारे हैं। वह भले भाषण में सभा को हंसा लेते, रुला लेते, लेकिन अशरीरीपन का अनुभव नहीं करा सकते, बाप से स्नेह नहीं पैदा करा सकते। कृष्ण से स्नेह करा सकते, लेकिन बाप से नहीं करा सकते। उन्हों को पता नहीं है। तो निराली बात होनी चाहिए। समझो, गीता के भगवान पर प्वाइंट्स देते हो, लेकिन जब तक उनको बाप क्या चीज है, हम आत्मा हैं वह परमात्मा है - जब तक यह अनुभव ना कराओ तब तक यह बात भी सिद्ध कैसे होगी? ऐसा कोई भाषण करने वाला हो जो उन्हों को अनुभव करावे - आत्मा और परमात्मा में रात-दिन का फर्क है। जब अन्तर महसूस करेंगे तो गीता का भगवान सिद्ध हो जावेगा। सिर्फ प्वाइंट्स से उन्हों की बुद्धि में नहीं बैठेगा, और ही लहरें उत्पन्न होंगी। लेकिन अनुभव कराते जाओ

तो अनुभव के आगे कोई बात जीत नहीं सकता। भाषण में अब यह तरीका चेंज करें।

(02/08/1972)

शुरु-शुरु में बहुतों को यह साक्षात्कार होते थे। लाइट ही लाइट दिखाई देती थी। अपने लाइट के क्राउन के भी अनेक बार साक्षात्कार करते थे। जो आदि में सैम्पल था वह अंत में प्रैक्टिकल स्वरूप होगा। संकल्प की सिद्धि का साक्षात्कार होगा। जैसे वाचा से आप डायरेक्शन देती हो ना, वैसे संकल्प से सारे कारोबार चला सकती हो। नीचे पृथ्वी से ऊपर तक डायरेक्शन लेते रहते हैं, तो क्या श्रेष्ठ संकल्प से कारोबार नहीं चल सकती है? साईस ने कापी तो साइलेंस से ही किया है। तो एग्जाम्पल देने अर्थ पहले से ही स्पष्ट रूप में आपके सामने है। कल्प पहले तो आप लोगों ने किया है ना। फिर बोलने की आवश्यकता नहीं। जैसे बोलने में बात को स्पष्ट करते हैं, वैसे ही संकल्प से सारे कारोबार चलें।

(22/11/1972)

जबकि प्रकृति आपकी रचना है, आप तो मास्टर रचयिता हो ना। तो सोचो, जब मेरी रचना में यह पावर है और मुझ मास्टर रचयिता में यह पावर नहीं हो, यह श्रेष्ठ आत्मा का लक्षण है? आज प्रकृति की पावर एक सेकेण्ड में जो चाहे वह प्रैक्टिकल में करके दिखाती है। इसलिए आज की भटकी हुई आत्माएं परमात्म-शक्ति, ईश्वरीय शक्ति वा साईलेन्स की शक्ति को प्रैक्टिकल सबूत रुप में अर्थात् प्रमाण रुप में देखना चाहते हैं। कोई अपकार करे, आप एक सेकेण्ड में अपकार को उपकार में परिवर्तित कर लो। कोई अपने संस्कार वा स्वभाव के रुप में आपके सामने परीक्षा के रुप में आवे लेकिन आप सेकेण्ड में अपने श्रेष्ठ संस्कार, एक की स्मृति से ऐसी आत्मा के प्रति भी रहमदिल के संस्कार वा स्वभाव धारण कर सकते हो। कोई देहधारी दृष्टि से सामने आये आप एक सेकेण्ड में

उनकी दृष्टि को आत्मिक दृष्टि में परिवर्तित कर लो। कोई गिराने की वृत्ति से, वा अपने संगदोष में लाने की दृष्टि से सामने आवे तो आप उनको सदा श्रेष्ठ संग के आधार से उसको भी संगदोष से निकाल श्रेष्ठ संग लगाने वाले बना दो। ऐसी परिवर्तन करने की युक्ति आने से कब भी विघ्न से हार नहीं खायेंगे। सर्व सम्पर्क में आने वाले आप की इस सूक्ष्म श्रेष्ठ सेवा पर बलिहार जावेंगे। जैसे बाप आत्माओं को परिवर्तित करते हैं तो बाप के लिये शुक्रिया गाते हो, बलिहार जाते हो, ऐसे सर्व सम्पर्क में आने वाली आत्माएं आप लोगों का शुक्रिया मानेंगी। एक ही सहज युक्ति है ना।

(24/12/1972)

जब साइन्स वाले पृथ्वी से स्पेस में जाने वालों की हर गति और हर विधि को जान सकते हैं तो क्या याद के बल से आप अपने श्रेष्ठ पुरुषार्थ की गति और विधि को नहीं जान सकते हो? लास्ट में जानेंगे जब आवश्यकता नहीं होगी? अभी से यह जानने का अभ्यास भी होना चाहिए-कैचिंग पॉवर चाहिए। जैसे साइन्स दूर की आवाज को कैच कर चारों ओर सुना सकती है तो आप लोग भी शुद्ध-वाइब्रेशन; शुद्ध-वृत्तियों व शुद्ध-वायुमण्डल को कैच नहीं कर सकती हो? यह कैचिंग पॉवर प्रत्यक्ष रुप में अनुभव होगी। जैसे आजकल दूर से सीन टेलीविजन द्वारा स्पष्ट दिखाई देते हैं, वैसे दिव्य-बुद्धि बनने से, सिर्फ एक याद के शुद्ध-संकल्प में स्थित रहने से आप सभी को भी एक दूसरे की स्थिति व पुरुषार्थ की गति-विधि ऐसे स्पष्ट दिखाई देगी। यह साइन्स भी कहाँ से निकली? साइलेन्स की शक्ति से ही साइन्स निकली है। **साइन्स आप लोगों की वास्तविक स्थिति और सम्पूर्ण स्टेज को समझाने के लिए एक साधन निकला है।** क्योंकि सूक्ष्म शक्ति को जानने के लिये तमोगुणी बुद्धि वालों के लिए कोई स्थूल साधन चाहिये। जिस श्रेष्ठ आत्मा में ये चारों ही विशेषतायें, सम्पूर्ण परसेन्टेज में अर्थात् जिसको सेन्ट परसेन्ट कहते हैं, इमर्ज रुप में होंगी, ऐसी आत्मा में सर्व-सिद्धियों की प्राप्ति दिखाई

देगी। यह सिद्धि अपने प्रेजेन्ट समय के पुरुषार्थ में दिखाई देती हैं? कुछ परसेन्टेज में भी दिखाई देती हैं या यह स्टेज अभी दूर है? कुछ समीप दिखाई देती है। यूँ तो इस मास की रिजल्ट चारों ओर की बहुत अच्छी रही। अब आगे क्या करेंगे? याद की यात्रा में रहने से कोई नये प्लैन्स प्रैक्टिकल में लाने के लिए इमर्ज हुए।

(23/01/1973)

जैसे विनाशकारी आत्मायें विनाश के लिए तड़पती हैं, क्या ऐसे ही आप स्थापना वाले विश्व-कल्याण के लिये तड़पते हो? ऐसी सेल्फ सर्विस और विश्व की सर्विस इन दोनों के लिये नये-नये इन्वेन्शन निकालते हो? जैसे वह लोग अभी इन्वेन्शन कर रहे हैं कि ऐसे पॉवरफुल यन्त्र बनायें जो विनाश सहज और शीघ्र हो जावे तो क्या ऐसे आप महावीर, सायलेन्स की शक्ति के इन्वेन्टर ऐसा प्लेन बना रहे हो कि जो सारे विश्व को परिवर्तन होने में अथवा उसे मुक्ति और जीवनमुक्ति का वरसा लेने में सिर्फ एक सेकेण्ड ही लगे और सहज भी हो जाये? आप मुआफिक पैतीस वर्ष न लगें। तो ऐसी रिफाईन इन्वेन्शन से एक सेकेण्ड में नज़र से निहाल, एक सेकेण्ड में दु:खी से सुखी, निर्बल से बलवान और अशान्ति से शान्ति का अनुभव करा सको। क्या ऐसे रिफाईन रुहानी शस्त्र और युक्तियाँ सोचते हो कि एक सेकेण्ड में उनका तड़पना बन्द हो जाय? जैसे बम द्वारा एक सेकेण्ड में मर जायें, वैसे एक सेकेण्ड में उनको वरदान, महादान दे सको क्या ऐसे महादानी और ऐसे वरदानी बने हो? क्या सर्व की मनोकामनाएँ पूरी करने वाली कामधेनु बने हो, अब क्या स्वयं में कोई कामना तो नहीं रही हुई है ना? अगर अपनी कोई कामना होगी तो कामधेनु कैसे बनेंगे? 'मेरा नाम हो', और 'मेरी शान हो' - यह कामना भी नहीं हो। समझा?

(15/07/1973)

जैसे आप बीच-बीच में भाषण करते-करते उनको सायलेन्स में ले जाने का अनुभव कराते हो तो इस प्रैक्टिस को बढ़ाते जाओ। उनको अनुभव में लाते जाओ। इस पुरानी दुनिया से बेहद का वैराग्य दिलाना चाहते हो तो भाषण में जो प्वाईन्ट्स देते हो, वह देते हुए वैराग्य वृत्ति के अनुभव में ले आओ। वह फील करे सचमुच यह सृष्टि जाने वाली है, इससे तो दिल लगाना व्यर्थ है। तो जरूर प्रैक्टिकल करेंगे।

(02/08/1973)

जैसे आजकल साइंस वाले अपनी साइंस की नॉलेज (विद्या) के आधार पर कैसे भी दु:ख के समय एक इन्जेक्शन द्वारा अल्पकाल के रेस्ट (आराम) का अनुभव कराते हैं ना? वैसे ही कितनी भी आवाज और कितना भी तमोगुणी वातावरण हो, लेकिन साइलेन्स की शक्ति से वेस्ट (व्यर्थ) समाप्त होने के कारण बैस्ट (श्रेष्ठ) स्थिति में स्थित होने से सदा रैस्ट (आराम) अनुभव करोगे, अर्थात् सदा अपने को सुख और शान्ति की शैया पर आराम करता हुआ अनुभव करोगे। जैसे यादगार का चित्र भी है-सागर में जहाँ लहरों की हलचल होती है तो सागर में होते हुए, साँपों की शैया होते हुए भी अर्थात् वातावरण व परिस्थिति दु:खमय होते हुए भी (साँप तो दु:खदाई अर्थात् काटने वाला होता है ना) आराम का अनुभव करोगे। तो इसका भाव यह है कि ऐसी परिस्थितियाँ, ऐसा वातावरण जो काटने वाला हो, हिलाने वाला हो और अपने विष द्वारा मूर्छित करने वाला हो लेकिन ऐसे वातावरण को भी सुख-शान्ति की शैया बना दे। अर्थात् आराम का स्थान बना दे, अर्थात् आत्मा सदा अपने रेस्ट में रहे। तो जैसा यादगार चित्र है क्या वैसे ही प्रैक्टिकल जीवन में अनुभव करते हो? शीतलता में शीतल रहना कोई बड़ी बात नहीं है, आराम के साधनों में आराम से रहना-यह भी साधारण बात है लेकिन बे-आरामी में आराम से रहना इसको कहा जाता है- 'पद्मापद्म भाग्यशाली'। तो ऐसे विषय सागर के बीच रहते हुए पाँच विकारों को अपने आराम व सुख और शान्ति

की शैया बनाना है। अर्थात् क्या अभी से विकारों के ऊपर सदा विजयी बन सदा ज्ञान के मनन और बाप के मिलन में मग्न रहते हो?

(23/09/1973)

प्रदर्शनी में, आप लोग चित्र दिखाते हो ना, कि रावण ने चार तत्वों पर विजय प्राप्त की है, उसमें काल भी दिखते हो न? जब रावण ने अर्थात् रावण की शक्ति साइंस ने अभी भी काफी हद तक तत्वों पर विजय प्राप्त कर ली है, तो साइन्स आपसे पॉवरफुल हुई ना? जब साइन्स की शक्ति अपना प्रत्यक्ष सबूत दे रही है तो साइलेन्स की शक्ति अपना प्रत्यक्ष सबूत क्या अन्त में देंगी? समय पर विजय अर्थात् काल पर विजय। इसकी परसेन्टेज अभी कम है। अपने को निराकारी स्थिति व अव्यक्त स्थिति में स्थित तो करते हो, लेकिन जितना समय स्थित रहना चाहते हो, उतना समय उस स्थिति में स्थित नहीं हो पाते हो। स्टेज के अनुभव भी प्राप्त करते हो, मेहनत भी करते हो, लेकिन काल पर विजय नहीं कर पाते हो। इसका कारण क्या है? **सोचते हो कि आधा घण्टा पॉवरफुल याद में बैठेंगे और आधा घण्टा बैठते भी हो और प्लैन भी बनाते हो लेकिन जितना-जितना जिस स्टेज के लिए सोचते हो, उतना ही समय उस समय उस स्टेज पर स्थित नहीं होते हो। सोचते हो स्विच ऑन थर्ड फ्लोर पर करें, लेकिन पहुँच जाते हो सेकेण्ड फ्लोर पर। वा फर्स्ट या ग्राउण्ट फ्लोर तक पहुँच जाते हो। क्योंकि काल पर विजय नहीं। इसका कारण यह है कि बार-बार सारे दिन में समय गँवाने के अभ्यासी हो। व्यर्थ के ऊपर अटेन्शन देने से ही काल पर विजय प्राप्त करने में समर्थ बनेंगे। जब तक समय व्यर्थ जाता है, तब तक विजय पाने में समर्थ नहीं बन सकते।** इसी कारण, जो मिलन का अनुभव करना चाहते हो व निरन्तर वायदा निभाना चाहते हो वह निभा नहीं सकते। तो अब, अपनी तकदीर की तस्वीर सर्व-तत्वों पर और काल

पर सदा विजयी की बनाओ। जब एक-एक सेकेण्ड, व्यर्थ से समर्थ में चेन्ज करो, तब ही विजयी बनेंगे।

(05/12/1974)

साइन्स का मूल आधार है लाइट। लाइट के आधार से साइन्स का जलवा है, लाइट की ही शक्ति है। ऐसे ही साइलेन्स की शक्ति का आधार है डिवाइन इनसाइट। इन द्वारा साइलेन्स की शक्ति के बहुत वन्डरफुल अनुभव कर सकते हो। यह भी अनुभव होंगे। जैसे स्थूल साधन द्वारा सैर कर सकते हैं, वैसे ही जब चाहों, जहाँ चाहो वहाँ का अनुभव कर सकते हो। न सिर्फ इतना, जो सिर्फ आपको अनुभव हो लेकिन जहाँ आप पहुँचो उन्हों को भी अनुभव होगा कि आज जैसे प्रैक्टिकल मिलन हुआ। यह है सफ़लतामूर्त की सिद्धि। वह तो रिवाजी आत्माओं को भी सिद्धि प्राप्त होती है एक ही समय अनेक स्थानों पर अपना रूप प्रकट कर सकते और अनुभव करा सकते हैं। वह तो अल्प काल की सिद्धि है, लेकिन यह है ज्ञान-युक्त सिद्धि। ऐसे अनुभव भी बहुत होंगे। आगे चलकर कई नई बातें भी तो होगी ना। जैसे शुरू में घर बैठे ब्रह्मा रूप का साक्षात्कार होता था जैसे कि प्रैक्टिकल कोई बोल रहा है, इशारा कर रहा है, ऐसे ही अन्त में भी निमित्त बनी हुई शक्ति सेना का अनुभव होगा।

(11/10/1975)

भक्ति में कई देवियाँ व देवताएं प्रसिद्ध होते हैं, कई प्रसिद्ध नहीं होते। वे देवता व देवी तो माने जाते हैं लेकिन प्रसिद्ध नहीं होते। तो संकल्प और बोल सिद्ध होना यह आधार हैं प्रसिद्ध होने का। इससे ऑटोमेटिकली अव्यक्त फरिश्ता बन जायेंगे और समय बच जायेगा। वाणी में आना ऑटोमेटिकली समाप्त हो जायेगा क्योंकि साइलेन्स-होम अथवा शान्ति धाम में जाना है ना? तो वह साइलेन्स के व आकारी फरिश्तेपन के संस्कार अपनी तरफ खींचेंगे। सर्विस भी इतनी बढ़ती

जायेगी कि जो वाणी द्वारा सेवा करने का चॉन्स ही नहीं मिलेगा। ज़रूर नैनों द्वारा और अपने मुस्कराते हुए मुख द्वारा, मस्तक में चमकती हुई मणि द्वारा सेवा कर सकेंगे। परिवर्तन होगा ना? वह अभ्यास तब बढ़ेगा जब यह पोतामेल रखेंगे - यह है महारथियों का पोतामेल।

(16/10/1975)

हर एक के मस्तक द्वारा मस्तक-मणि को देखते हुए क्या तकदीर की लकीर को पहचान सकती हो? मस्तक बीच चमकती हुई मणि अर्थात् श्रेष्ठ आत्मा के वायब्रेशन द्वारा सहज पहचान हो जाती है। हर एक आत्मा के पुरुषार्थ व प्राप्ति का अनुभव वायब्रेशन द्वारा सहज ही समझ में आ सकता है। जैसे कोई खुशबू की चीज़ फौरन ही वातावरण में फैल जाती है और सहज ही परख में आ जाती है कि यह अच्छी है अथवा नहीं है। इसी प्रकार जितना-जितना परखने की शक्ति बढ़ती जाएगी तो कोई भी आत्मा सामने आयेगी तो वह कहाँ तक रूहानियत की अनुभवी है वह फौरन ही उसके वायब्रेशन द्वारा स्पष्ट समझ में आ जायेगा। परसेन्टेज की परख भी सहज आ जायेगी कि कितने परसेन्टेज में रूहानी स्थिति में स्थित रहने वाला है। जैसे साइन्स के यन्त्रों द्वारा परसेन्टेज का मालूम पड़ जाता है। ऐसे ही साइलेन्स की शक्ति के द्वारा अर्थात् आत्मा की स्थिति द्वारा यह भी समझ में आ जायेगा। इसको कहा जाता है परखने की शक्ति। संस्कारों द्वारा, वाणी द्वारा और चलन द्वारा परखना यह तो कॉमन बात है लेकिन संकल्पों के वायब्रेशन द्वारा परखना - इसको कहा जाता है परखने की शक्ति समझा?

(08/12/1975)

जैसे आजकल साइन्स के साधनों द्वारा सब चीज़ें समीप अनुभव होती जाती हैं - दूर की आवाज़ टेलीफ़ोन के साधन द्वारा समीप सुनने में आती है,

टी.वी. (दूर दर्शन) द्वारा दूर का दृश्य समीप दिखाई देता है, ऐसे ही साइलेन्स की स्टेज द्वारा कितने भी दूर रहती हुई आत्मा को सन्देश पहुँचा सकते हो? वो ऐसे अनुभव करेंगे जैसे साकार में सम्मुख किसी ने सन्देश दिया है। दूर बैठे हुए भी आप श्रेष्ठ आत्माओं के दर्शन और प्रभु के चरित्रों के दृश्य ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कि सम्मुख देख रहे हैं। संकल्प के द्वारा दिखाई देगा अर्थात् आवाज़ से परे संकल्प की सिद्धि का पार्ट बजाएंगे। लेकिन इस सिद्धि की विधि ज्यादा-से-ज्यादा अपने शान्त स्वरूप में स्थित होना है। इसलिए कहा जाता है - साइलेन्स इज़ गोल्ड, यही गोल्डन ऐजड स्टेज कही जाती है।

(07/01/1977)

अपनी वास्तविक साइलेन्स की शक्ति को अच्छी तरह से जान गए हो? जैसे वाणी की शक्ति का, कर्म की शक्ति का प्रत्यक्ष परिणाम दिखाई देता है, वैसे सभी से पावरफुल (शक्तिशाली) साइलेन्स शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण देखा है, अनुभव किया? जैसे वाणी द्वारा किसी आत्मा को परिवर्तन कर सकते हो, वैसे साइलेन्स की शक्ति द्वारा अर्थात् मन्सा द्वारा किसी आत्मा की वृत्ति, दृष्टि को परिवर्तन करने का अनुभव है? वाणी द्वारा तो जो सामने हों उनका ही परिवर्तन करेंगे, लेकिन मन्सा द्वारा वा साईलेन्स की शक्ति द्वारा कितनी भी स्थूल में दूर रहने वाली आत्मा हो, उनको सम्मुख का अनुभव करा सकते हो। जैसे साइन्स (विज्ञान) के यंत्रों द्वारा दूर का दृश्य सम्मुख अनुभव करते हो, वेसे साइलेन्स की शक्ति से भी दूरी समाप्त हो सामने का अनुभव आप भी करेंगे और अन्य आत्माएं भी करेंगी। इसको ही योगबल कहा जाता है। लेकिन जैसे साइन्स के साधन का यंत्र भी तब काम करेगा जिसका कनेक्शन (जोड़) मेन स्टेशन से होगा, इसी प्रकार साइलेन्स की शक्ति द्वारा अनुभव तब कर सकेंगे, जब कि बाप-दादा से निरन्तर क्लीयर कनेक्शन (सीधा सम्बन्ध) होगा। वहाँ सिर्फ कनेक्शन होता है, लेकिन यहाँ

कनेक्शन अर्थात् रिलेशन (सम्बन्ध)। सभी क्लीयर अनुभव होंगे तब मन्सा शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण देख सकेंगे।

(26/01/1977)

ऐसे सदा सुहागिन और सदा भागयवान और सम्पूर्ण भाग्यवान कितने होंगे? निरन्तर डबल लाईट और निरन्तर सर्व प्राप्ति सम्पन्न सम्पूर्ण पवित्र हों, ऐसे कितने मणके होंगे? जो अंगुलियों पर गिनती जितने! ऐसे रत्नों की ही विशेष पूजा होती है। विशोष नौ रत्नों की पूजा होती है ना। तो जो अच्छी क्वालिटी (प्रकार) का रत्न होता है, उस एक रत्न में एक रंग का होते हुए भी सब रंग दिखाई देंगे। जैसे सफ़ेद हीरा होता है, जो बढ़िया हीरा होगा, चमकता हुआ फ्लालेस (दाग रहित) दिखाई देगा। ध्यान से देखेंगे तो सफ़ेद होते हुए भी उसमें सब रंग दिखाई देंगे। इसका कारण क्या है? सर्व शक्तियों के सम्पन्न की निशानी यह है। सर्व शक्तियाँ भिन्न-भिन्न रंग के रूप में दिखाई देती हैं। वह साईन्स (विज्ञान) का हिसाब और यहाँ है साइलेन्स द्वारा सर्व प्राप्तियाँ।

(28/04/1977)

आजकल के जमाने में दूरन्देशी बनने का अभ्यास करना होगा। साइन्स के साधन भी दूर से परखने का प्रयत्न करते हैं। पहले या, तुफ़ान आना और उससे बचाव करना लेकिन अभी ऐसे नहीं है। अभी तो तुफ़ान आ रहा है, उसको जान करके भगाने का प्रयत्न करते हैं। जब साइन्स (विज्ञान) भी आगे बढ़ रही है तो साइलेन्स (शान्ति) की शक्ति कितनी आगे चाहिए? दूर से भगाने के लिए सदैव 'त्रिकालदर्शीपन की स्थिति में स्थित रहो।' हर बात को तीनों कालों से देखो - क्या बात है? वर्तमान रूप क्या है? और पहले भी इस रूप से आई थी और अब जो आई है उसको समाप्त कैसे करें? तो तीनों को देखने से कभी भी माया का वार आपके ऊपर हार खिलाने के निमित्त नहीं बनेगा। लेकिन त्रिकालदर्शी होकर नहीं

देखते, वर्तमान को देखते। इसलिए कभी हार, कभी जीत होती, सदा विजयी नहीं होते। त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित रहने वाले से कभी भी माया बच नहीं सकती। अगर बार-बार माया का वार होता रहेगा तो अति-इन्द्रिय सुख का अनुभव चाहते हुए भी कर नहीं पायेंगे। जो गायन है, 'अति इन्द्रिय सुख संगमयुग का वरदान है' - यह और किसी युग में नहीं होता। यह अब का अनुभव है। तो अगर अति इन्द्रिय सुख का अनुभव नहीं किया तो ब्राह्मण बनकर क्या किया? जो ब्राह्मणपन की विशेषता है - अति इन्द्रिय सुख, वह नहीं किया तो कुछ भी नहीं। इसी कारण सदैव यह देखो कि सदा अति इन्द्रिय सुख में रहते हैं।

(14/05/1977)

दीदी जी से: - आपका विमान तेज है वा दादी का? उनका विमान तो स्थूल है और आपका? वह है साइंस का विमान और आपका साइलेन्स का। साइंस का रचता है साइलेन्स। साइलेन्स की शक्ति से ही साइंस निकली है। रचता तो पॉवरफुल होता है ना! जैसे निमित्त बनी हुई साथी विशेष इस समय किस स्थिति में स्थित है? साक्षात्कार वा वरदानी मूर्त्त, महादानी मूर्त्त हैं, जो भी खजाने हैं उनको (महादानी मूर्त्त) बाप से शक्ति लेते सहज स्वयं की शक्ति द्वारा सर्व को संकल्प द्वारा वायब्रेशन द्वारा लाइट-माइट का अनुभव कराना यह वरदान है। तो जैसे निमित्त एक रत्न बना ऐसे और भी रत्न बनेंगे। विशेष इस सेवा का कंगन बाँधना चाहिए। तब ही सर्विस का नया मोड़ प्रैक्टीकल में दिखाई देगा। निमित्त बनी हुई आत्माएं जो पर्दे के अन्दर हैं, वह स्टेज पर आने की हिम्मत दिखायेगी तब तो नया मोड़ होगा। **सारा समय पूर्वज की पोजीशन पर स्थित हो, स्वयं को तना समझ सर्व शाखाओं को शक्तियों का जल दो। नहीं तो सूखी पड़ी हुई हैं, उन्होंको फिर फिर से ताजा बनाओ।**

(02/06/1977)

विशेष आत्माओं ने अपनी विशेषता क्या दिखाई है? लास्ट विशेषता कौन-सी होगी विशेष आत्माओं की? जिसका इन-एडवान्स (पहले से) बाप-दादा दृश्य देख रहे हैं। वह क्या विशेषता होगी? जैसे साइंस वाले हर चीज़ रिफाईन भी कर रहे हैं और अपनी स्पीड क्वीक (तेज) भी कर रहे हैं। जैसे कहने में आता है मिनट-मोटर वैसे विशेष आत्माओं की लास्ट विशेषता यही रहेगी - सेकेण्ड में किसी भी आत्मा को मुक्ति और जीवन्मुक्ति के अनुभवी बना देंगी। सिर्फ रास्ता नहीं बतलायेगी लेकिन एक सेकेण्ड में शान्ति का वा अतिइन्द्रिय सुख का अनुभव करायेगी। जीवनमुक्ति का अनुभव है सुख, और मुक्ति का अनुभव है शान्ति। सामने आया और अनुभव किया। ऐसी स्पीड जब होगी तब साइंस के ऊपर साइलेन्स की विजय देखते हुए सबके मुख से वाह-वाह का आवाज़ निकलेगा कि साइंस के ऊपर भी इनकी विजय हो गई। जो साइंस नहीं कर सके वह साइलेन्स करके दिखावे। साइंस का लक्ष्य भी है - सबको शान्तिमय, सुखमय जीवन व्यतीत करना। तो जो साइंस नहीं कर सके वह करो तब कहेंगे साइंस के ऊपर विजय। **शान्ति वालों को शान्ति और सुख वालों को सुख मिले, तव आपका गायन करेंगे, आपको पूर्वज मानेंगे, अष्टदेव समझेंगे और बारम्बार बाप की महिमा करेंगे। इसी आधार पर फिर द्वापर में भक्त और धर्मपिता के संस्कार इमर्ज होंगे।** यह विशेष कार्य अब होने वाला है तब समझो लास्ट विजय का समय आ गया। सबको कुछ न कुछ मिलेगा, सिर्फ भातरवासी ही नहीं समझेंगे कि 'हमारा बाबा है', सभी समझेंगे हमारा है तब तो ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर कहा जायेगा ना! दूसरे देश वाले अभी समझते हैं भारत के पिता का परिचय देते हैं, लेकिन जब कहा जाता गाड इज वन (भगवान एक है) तो सभी वन (एक) का अनुभव तो करें ना। जब ऐसे वन का अनुभव करें तब सब समझो विन (विजय) होगी। सबके मुख से एक आवाज़ निकले -हमारा बाबा; तब फिर द्वापर में सभी 'ओ गाड फॉदर' कह पुकारेंगे।

(14/06/1977)

जैसे वाणी द्वारा आत्माओं को बाप से सम्बन्ध जुटाने के नम्बरवार निमित्त बनते हो वैसे अपनी सूक्ष्म स्थिति के वा मास्टर सर्व शक्तिवान वा मास्टर ज्ञान सूर्य की स्थिति द्वारा, आत्माओं को स्वयं के स्थिति वा बाप के सम्बन्ध का अनुभव, पॉवरफुल वातावरण, वायब्रेशन वा स्वयं के शक्ति स्वरूप के सम्पर्क से उन्हें भी करा सकते हो? क्योंकि जैसे समय समीप आ रहा है, पाण्डव सेना के प्रत्यक्ष होने का प्रभाव गुप्त रूप में फैलता जा रहा है। सेवा की रूपरेखा समय प्रमाण और सेवा प्रमाण परिवर्तन अवश्य होगी। जैसे आजकल भी साइंस द्वारा हर चीज़ को क्वान्टिटी (मात्र) बजाए क्वालिटी (गुण) में ला रहे हैं, ऐसा छोटा सा रूप बना रहे हैं, जो रूप है छोटा लेकिन शक्ति अधिक भरी हुई होती है। जैसे मिठास के विस्तार को सैक्रीन के रूप में लाते हैं। विस्तार को सार में ला रहे हैं, इसी प्रकार पाण्डव सेना अर्थात् साइलेन्स की शक्ति वाली श्रेष्ठ आत्माएं भी जो एक घन्टे के भाषण द्वारा किसको परिचय दे सकते हो, वह एक सेकेन्ड की पॉवरफुल दृष्टि द्वारा, पॉवरफुल स्टेज द्वारा, कल्याण की भावना द्वारा, आत्मिक भाव द्वारा 'स्मृति' दिला सकते हो वा अपरोक्ष साक्षात्कार करा सकते हो? अभी ऐसी प्रैक्टिस की आवश्यकता है। **(28/06/1977)**

सुनने का अन्दाज कितना है? इसी सीजन में भी कितना सुना होगा? अब ड्रामा की भावी सुना रही है कि - आवाज़ से परे जाना है। यह शरीर की खिटखिट भी निमित्त सुना रही है कि शिक्षा बहुत हो गई है। **अभी सुनने के बाद समाना अर्थात् स्वरूप बनना - उसकी सीजन है। सुनने की सीजन कितने वर्ष चली! चाहे साकार द्वारा, चाहे रिवाईज कोर्स द्वारा, सुनने का सीजन बहुत चला है। तो अभी स्वरूप द्वारा सर्विस करना। अभी लास्ट यही सीजन रह गया है ना, जिसमें ही प्रत्यक्षता का नगाड़ा बज़ेगा। आवाज़ बन्द होगा, साइलेन्स होगा। लेकिन साइलेन्स द्वारा ही नगाड़ा बजेगा। जब तक मुख से नगाड़े ज्यादा हैं, तब तक प्रत्यक्षता का नहीं। जब**

प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजेगा तब मुख के नगाड़े बन्द हो जाएंगे। गाया हुआ भी है 'साइंस के ऊपर साइलेन्स की जीत', न कि वाणी की। समय की समाप्ति की निशानी क्या होगी? ऑटोमेटीकली आवाज़ में आने की दिल नहीं होगी - प्रोग्राम प्रामाण नहीं, लेकिन नैचुरल स्थिति। जैसे साकार बाप को देखा, तो सम्पूर्णता की निशानी क्या दिखाई दी? दो मिनट हैं या एक मिनट है, उसकी पहचान इस स्थिति से होती जा रही है। ऑटोमेटिक वैराग आएगा ज्यादा आवाज़ में आने से। जैसे अभी चाहते हुए भी आदत आवाज़ में ले आती, वैसे चाहते हुए भी आवाज़ से परे हो जाएंगे। प्रोग्राम बनाकर आवाज में आएंगे। जब यह चेन्ज दिखाई दे, तब समझो अभी विजय का नगाड़ा बजने वाला है। आजकल चारों ओर मैजारिटी से पूछेंगे तो सबको सुख से भी शान्ति आधिक चाहिए। वह एक घड़ी भी शान्ति का अनुभव इतना श्रेष्ठ मानते हैं जैसे भगवान की प्राप्ति हो गई। तो एक सेकेण्ड में शान्ति का अनुभव कराने वाले स्वयं शान्त स्वरूप में स्थित होंगे ना। विनाश कब होगा? उसके लिए कौन निमित्त बनेगा? घड़ी की सुइयां कौन सी होगी? घंटे बजने के निमित्त सुई होती है ना? तो विनाश के घंटे बजने के लिए सुई कौन है?

(30/06/1977)

कर्मयोगी अर्थात् हर कर्म द्वारा बाप से स्नेह और सम्बन्ध का हर आत्मा को साक्षात्कार होगा। जैसे हद की आत्माओं से स्नेह रखने वाली आत्मा का उनके चेहरे और झलक से दिखाई देता है कि कोई से स्नेह में लवलीन है। ऐसे अपने आप से पूछो कि हर कर्म बाप के साथ स्नेही आत्मा का अनुभव कराता है। इसको ही कहा जाता है कर्मयोगी। कर्मयोगी की या सहज राजयोगी की परिभाषा बड़ी गुह्य है। कर्मयोगी या सहज राजयोगी का हर संकल्प बाप के स्नेह के वायब्रेशन फैलाने वाले होंगे जैसे जड़ चित्र भी शान्ति के अल्पकाल के सुख के वायब्रेशन अब तक भी आत्माओं को देने का कार्य कर रहे हैं तो अवश्य चैतन्य रूप में संकल्प द्वारा,

वाणी द्वारा, कर्म द्वारा विश्व में सदा सुख-शान्ति बाप के स्नेह के वायब्रेशन फैलाने का कर्त्तव्य किया है। तब जड़ चित्रों में भी शान्ति है। जब साइन्स का यंत्र गर्मी का या सर्दी का वायब्रेशन वायुमण्डल बना सकते हैं तो मास्टर सर्वशक्तिवान अपने साइलेन्स अर्थात् याद की शक्ति से अपने लगन की स्थिति द्वारा जो वायुमण्डल या वायब्रेशन फैलाना चाहें वह सब बना सकते हैं। ऐसी प्रैक्टिकस करो। अभी-अभी सुख का या शान्ति का वायुमण्डल या शक्ति रूप का वायुमण्डल बना सकते हो। जिस वायुमण्डल के अन्दर जो भी आत्माएँ हों वह अनुभव करें कि यहाँ दु:ख से सुख के वायुमण्डल में आ गये हैं। महसूस करें कि यहाँ बहुत सुख प्राप्त हो रहा है। जैसे एयरकण्डीशन में सर्दी व गर्मी का अनुभव करते हैं कि सचमुच गर्मी से ठण्डी हवा में आ गये हैं। ठण्डी से गर्मी में आ गये हैं। ऐसे आपकी चलन और चेहरे द्वारा आपके संकल्प शक्ति द्वारा सुख-शान्ति और शक्ति का अनुभव करें। जैसे एक सेकेण्ड में अंधकार से रोशनी का अनुभव किया ना। ऐसे आजकल के मनुष्य अपनी शक्ति से अनुभव नहीं कर सकेंगे। लेकिन आप सबको अपनी प्राप्ति के आधार से, याद के आधार से अनुभवी बनाना पड़ेगा। यह है वास्तविक सहज राजयोग या कर्मयोग की परिभाषा। स्वयं प्रति शान्ति का या शक्ति का अनुभव किया यह कोई बड़ी बात नहीं लेकिन अपने याद की शक्ति द्वारा अब विश्व में वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बनाओ। तब कहेंगे नम्बरवन सहज राजयोगी। सिर्फ स्वयं सन्तुष्ट न रह जाओ। सन्तुष्ट रहना और सर्व को सन्तुष्ट करना है। यह है योगी का कर्त्तव्य।

(13/01/1978)

जब रचता सेवाधारी बन गए तो सर्व रचना आप श्रेष्ठ आत्माओं के आगे सेवा के लिए बाँधी हुई है - जब आसुरी रावण अपने साइन्स की शक्ति से प्रकृति अर्थात् तत्वों को आज भी अपने कन्ट्रोल में रख रहे हैं तो आप ईश्वरीय सन्तान मास्टर रचता, मास्टर सर्वशक्तिवान के आगे यह प्रकृति और परिस्थिति दासी

नहीं बन सकती! अपने साइलेन्स की शक्ति को अच्छी तरह से जानते हो वा बहुत शक्तियाँ मिलने के कारण उनके महत्त्व को भूल जाते हा? जब साइन्स की अणु शक्ति महान कर्त्तव्य कर सकती है तो आत्मिक शक्ति, परमात्म-शक्ति क्या कर सकती है उसका अनुभव अभी बहुत थोड़ा और कभी-कभी करते हो। परमात्म-शक्ति को अपना बना सकते, रूप परिवर्तन करा सकते तो प्रकृति और परिस्थिति का रूप और गुण परिवर्तन नहीं कर सकते? तमोगुणी प्रकृति को स्वयं की सतोगुणी स्थिति से परिवर्तन नहीं कर सकते हैं? परिस्थिति पर स्व-स्थिति से विजय नहीं पा सकते हैं? ऐसे मास्टर रचता शक्तिशाली बने हो? बाप-दादा बच्चों की श्रेष्ठ प्राप्ति को देख यही कहते एक-एक बच्चा ऐसी श्रेष्ठ आत्मा है जो एक बच्चा भी बहुत कमाल कर सकता है! तो इतने क्या करेंगे! चाबी तो बहुत बढ़िया मिली है - लगाने वाले लगाते नहीं है।

(01/12/1978)

अभी समय अनुसार अनेक प्रकार के लोग चेकिंग करने आयेंगे। संगठित रूप में जो चैलेन्ज करते हो कि हम सब ब्राह्मण एक की याद में एकरस स्थिति में स्थित होने वाले हैं - तो ब्राह्मण संगठन की चेकिंग होगी। इन्डीविज्युवल तो कोई बड़ी बात नहीं हैं लेकिन आप सब विश्व कल्याणकारी विश्व परिवर्तक हो - विश्व संगठन, विश्व कल्याणकारी संगठन विश्व को अपनी वृत्ति वा वायब्रेशन द्वारा वा अपने स्मृति स्वरूप के समर्थी द्वारा कैसे सेवा करते हैं- उसकी चेकिंग करने बहुत आयेंगे। आज की साइंस द्वारा साइलेन्स शक्ति का नाम बाला होगा। योग द्वारा शक्तियाँ कौन सी और कहाँ तक फैलती हैं उनकी विधि और गति क्या होती है यह सब प्रत्यक्ष दिखाई देंगे। ऐसे संगठन तैयार हैं ? समय प्रमाण अब व्यर्थ की बातों को छोड़ समर्थी स्वरूप बनो। ऐसे विश्व सेवाधारी बनो। इतना बड़ा कार्य जिसके लिए निमित्त बने हुए हो उसको स्मृति में रखो।

(03/12/1978)

जैसे आजकल साइन्स द्वारा अभी-अभी बीज ड़ाला अभी-अभी फल मिला। पहले से तीव्रगति है जो बीज डाला वह प्राप्त हो जाता है। ऐसे ही अपने साइलेन्स के बल से सहज और तीव्रगति से प्रत्यक्षता भी देखेंगे, हाई जम्प लगाने वाले हो ना। पत्थर तोड़ने वाले तो नहीं। जैसी निमित्त आत्मायें होती हैं, वैसे वायुमण्डल भी बनता है, स्वयं सहयोगी हैं तो आने वाली आत्माओं को भी सहयोगी बना देती। स्वयं उलझन में होंगे तो आने वाली आत्माओं में भी वही वायब्रेशन फैलता है। तो निमित्त आत्माओं को सदा निर्विघ्न एक बाप की लगन में मगन रहने वाले, इसी स्थिति में रहना है।

(19/12/1978)

महारथियों ने पुरूषार्थ की कोई नई इन्वेन्शन निकाली है जो बहुत रिफाइन हो - संकल्प किया और हुआ - इसको कहते हैं रिफाइन। ऐसा सहज साधन निकालो जिससे साधना कम हो और सिद्धि ज्यादा हो। जैसे आजकल साइन्स वाले इन्वेन्शन करते हैं दुःख कम हो - और जिस कार्य अर्थ करते हैं वह सफलता भी ज्यादा हो - इसी प्रकार पुरूषार्थ के साधनों में ऐसा सहज साधन इनवैन्ट को अपने अनुभवों के आधार पर जो जैसे सेकेण्ड में साइन्स के साधन विधि को पाता है वैसे यह साइलेन्स का साधन सेकेण्ड में विधि प्राप्त हो। बाप नालेज देते हैं लेकिन जैसे साइन्स प्रयोगशालाओं में सब इन्वेन्शन प्रैक्टिकल में लाते हैं, ऐसे प्रयोग में तो आप बच्चे लाते हैं, प्रयोग में लाने वाले साधन अर्थात् अनुभव में लाने वाले साधन - उनमें से ऐसा कोई सहज साधन सुनाओ जिसमें मेहनत कम हो और अनुभव ज्यादा हो - ऐसे चारों ओर के वातावरण, चारों ओर की कमजोर आत्माओं के समाचार प्रमाण ऐसा साधन निकालो - जैसी बीमारी होती है वैसी दवाई निकाली जाती है - तो चारों ओर के समाचार अनुसार ऐसा साधन निकालो और फिर प्रैक्टिकल करके दिखायें अब महारथियों को ऐसा नया साधन इनवैन्ट करना चाहिए। ऐसा ग्रुप हो जिसको रीसर्च ग्रुप कहते हैं - अब समझा महारथियों को क्या करना है -

फिर कारोबार भी हल्की हो जायेगी।

जैसे पहले-पहले मौन व्रत रखा था तो सब -फ्री हो गए थे, टाइम बच गया था - तो ऐसा कोई साधन निकालो जिससे सबका टाइम बच जाए - मन का मौन हो व्यर्थ संकल्प आवे ही नहीं। यह भी मन का मौन है ना। जैसे मुख से आवाज न निकले वैसे व्यर्थ संकल्प न आयें - यह भी मन का मौन है। तो व्यर्थ खत्म हो जावेगा। सब समय बच जावेगा, तब फिर सेवा आरम्भ होगी। मन के मौन से नई इन्वेन्शन निकलेगी - जैसे शुरू के मौन से नई रंगत निकली वैसे इस मन के मौन से नई रंगत होगी। तो अभी पहले निमित्त कौन बनेंगे। महारथी ग्रुप - जो बाप द्वारा युक्तियाँ मिलती रहती हैं उनको प्रयोग करने के रूप में लाओ। वह रूप रेखा सभी को नहीं आती। वर्णन करना आता है लेकिन उसी साधन से सिद्धि को प्राप्त करें वह प्रयोग करना नहीं आता है - इसलिए योग भी नहीं लगता - तो ऐसा प्लैन बनाओ जिससे सहज ही विधि प्राप्त हो।

(10/01/1979)

पहला पाठ कच्चा है। सेकेण्ड में देह से न्यारे बनने का अभ्यास सेकेण्ड में देह के बन्धन से मुक्त बना देता है। स्वीच आन हुआ और भस्म। जैसे साइन्स के साधनों द्वारा भी वस्तु सेकेण्ड में परिवर्तन हो जाती है वैसे साइलेन्स की शक्ति से, देही के सम्बन्ध से बन्धन खत्म। अब तक भी अगर पहली स्टेज देह के बन्धन में हैं तो क्या कहेंगे! अभी तक पहले क्लास में हैं। जैसे कोई स्टूडेन्ट कमजोर होने के कारण कई वर्ष एक ही क्लास में रहते हैं - **तो सोचो ईश्वरीय पढ़ाई का लास्ट टाइम चल रहा है और अब तक भी देह के सम्बन्ध की पहली चौपड़ी में हैं, ऐसे स्टूडेन्ट को क्या कहेंगे।** किस लाइन में आवेंगे! पाने वाले वा देखने वाले। तो अब तक पहली क्लास में तो नहीं बैठे हो! परधर्म में स्थित होना सहज होता है वा स्वधर्म में? स्वधर्म है देही अर्थात् आत्मिक स्वरूप। परधर्म है देह स्वरूप - तो सहज क्या अनुभव होता है। जैसा नाम है सहज

राजयोगी वैसा ही अनुभव है? वा काम और नाम में फर्क है!

(30/01/1979)

परिचय को पूरा स्पष्ट करना है - एक प्वाइन्ट सुनाकर बाप के तरफ अटेन्शन खिंचवाओ, सारी प्वाइन्टस बोलकर बाप की महिमा के बोल, बोल करके बाप तरफ अटेन्शन खिंचवाओ, बार-बार पत्थर पर स्नेह का पानी डालते जाओ तब यह पत्थर पानी होगा।

और जितना हो सके साइलेन्स का प्रभाव हो - रूप रेखा ही अलौकिक हो -सिम्पुल स्वच्छ, रूहानियत वा प्यूरिटी के वायब्रेशन हों - सुनने वाली जो सहयोगी ब्राह्मण आत्मायें होती उन्हों में भी वायुमण्डल को बनाने का संकल्प हो - जैसे अगरबत्ती वायुमण्डल को परिवर्तन कर देती वैसे सब ब्राह्मण आत्माओं की वृत्ति रहम की वृति अगरबत्ती का काम करे - जो आने से ही उनको महसूस हो यह सभा कोई अलौकिक सभा है।

(05/02/1979)

जैसे साइन्स के साधनों द्वारा समय और आवाज़ कितना भी दूर होते समीप हो गया है ना। जैसे प्लेन द्वारा समय कितना नज़दीक हो गया है, थोड़े समय में कहाँ से कहाँ पहुँच सकते हो। टेलीफोन द्वारा आवाज़ कितना समीप हो गया है। लण्डन के व्यक्ति का आवाज़ भी ऐसे सुनाई देगा जैसे सम्मुख बात कर रहे हैं। ऐसे ही टेलीविजन के साधनों द्वारा कोई भी दृश्य वा व्यक्ति दूर होते हुए भी सम्मुख अनुभव होता है। **साइन्स तो आपकी रचना है। आप मास्टर रचयिता हो। साइलेन्स की शक्ति से आप सब भी विश्व की किसी भी दूर रहने वाली आत्मा का आवाज़ सुन सकते हो। कौन-सा आवाज़? साइन्स मुख का आवाज़ सुनाने का साधन बन सकती है लेकिन मन का आवाज़ नहीं पहुँचा सकती। साइलेन्स की शक्ति से हर आत्मा के मन का आवाज़**

इतना ही समीप सुनाई देगा जैसे कोई सम्मुख बोल रहा है। आत्माओं के मन में अशान्ति, दुःख की स्थिति के चित्र ऐसे ही स्पष्ट दिखाई देंगे जैसे टी.वी. द्वारा दृश्य वा व्यक्ति स्पष्ट देखते हो। जैसे इन साधनों का कनेक्शन जोड़ा, स्वीच ऑन किया और स्पष्ट दिखाई और सुनाई देता है। ऐसे ही बाप से कनेक्शन जोड़ा, श्रेष्ठ भावना और कामना का स्वीच ऑन किया तो दूर की आत्माओं को भी समीप अनुभव करेंगे। इसको कहा जाता है विश्व-कल्याणकारी। ऐसी स्थिति को बनाने के लिए विशेष कोन-सा साधन अपनाना पड़े।

इन सबका आधार है - साइलेन्स। **वर्तमान समय साइलेन्स की शक्ति जमा करो।** मन का आवाज़ संकल्पों के रूप में आवेगा। मन के आवाज़ अर्थात् व्यर्थ संकल्प को समाप्त कर एक समर्थ संकल्प में रहो। संकल्पों के विस्तार को समेट कर सार रूप में लाओ तब साइलेन्स की शक्ति स्वत: ही बढ़ती जावेंगी।

व्यर्थ है बाह्यमुखता और समर्थ है अन्तर्मुखता। ऐसे ही मुख के आवाज़ के भी व्यर्थ को समेट कर समर्थ अर्थात सार में लाओ तब साइलेन्स की शक्ति जमा कर सकेंगे साइलेन्स की शक्ति के विचित्र प्रमाण देखेंगे। ऐसे दूर की आत्मायें आपके सामने आकर कहेंगी कि आप ने मुझे सही रास्ता दिखाया। आपने मुझे ठिकाने का इशारा दिया। आपने मुझे बुलाया और मैं पहुँच गया। आपके दिव्य स्वरूप उनके मस्तक रूपी टी.वी. में स्पष्ट दिखाई देंगे और अनुभव करेंगे कि यह तो सम्मुख मिलन था। इतना स्पष्ट अनुभव करेंगे। इतनी साइलेन्स की शक्ति रूहानी रंगत दिखायेगी। जैसे शुरू में भी दूर बैठे हुए ब्रह्मा बाप के स्वरूप को स्पष्ट देखते इशारा मिलता था कि इस स्थान पर पहुँचो। ऐसे ही अन्त, में आप सब विशेष विश्व-कल्याणकारी आत्माओं का ऐसा ही विचित्र पार्ट चलना है। इसके लिए आत्मा को सर्व बन्धनों से मुक्त, स्वतन्त्र होना चाहिये। जो जब चाहे, जहा चाहे जो शक्ति चाहें उससे कार्य कर सकें। ऐसी निर्बन्धन आत्मा अनेकों को जीवन मुक्त बना सकती है। समझा, कितनी ऊंची मंजिल है? कहाँ तक पहुँचना

है? बेहद सेवा की रूपरेखा कितनी श्रेष्ठ है? अनेक मेहनतों से छूट जायेंगे। लेकिन एक मेहनत करनी पड़ेगी। ऐसी हिम्मत है?

(03/12/1979)

अमेरिका वाले हाई जम्प लगाने वाले हैं या उड़ाने वाले? एक सेकेण्ड में इस पुरानी दुनिया से उड़कर अपने स्वीट साइलेन्स होम में पहुँच जाना। ऐसे उड़ने वाले हो ना? उड़ते पंछी अर्थात सदा डबल लाइट स्थिति में स्थित रहें। ऐसे ही उड़ते पंछी उड़ते रहो और अनेकों को उड़ाते रहो।

जो सुख शान्ति के भिखारी हैं उनकों सुख-शान्ति देकर सम्पन्न बनाओ तो पीस मेकर हो जायेंगे। सभी दिल से आपकी शुक्रिया गायेंगे। अमेरिका में जो सेन्टर खुला है इसमें भी रहस्य है, विशेष कार्य होना है। **विनाश और स्थापना दोनों का साक्षात्कार साथ-साथ होगा। उस तरफ विनाशकारी और इस तरफ पीस मेकर। साइन्स और साइलेन्स, दोनों शक्तियों का मुकाबला देखेंगे।** चारों ओर से अमेरिका को परिवर्तन करने का घेराव डालो। महावीर का दिखाते हैं न कि वह सारी पहाड़ी की पहाड़ी को ले आया, तो आप अमेरिका को परिवर्तन कर साइलेन्स की शक्ति का नाम बाला करो। सदा याद रखो हम शान्ति के सागर के बच्चे शान्ति देवा हैं। जो भी सामने आये उसे पीस मेकर बन शान्ति का दान दो।

(28/12/1979)

जब साइन्स की शक्ति से बिना सीज़न के अनाज पैदा कर लेते हैं तो क्या साइलेन्स की शक्ति संगमयुग की फुल सीज़न होते हुए भी हर मास का फल नहीं दे सकती? जैसे वह लोग साधन अपनाते हैं जो असम्भव से सम्भव कर के दिखाते हैं तो साधना द्वारा पंजाब की धरती को परिवर्तित करो। प्रत्यक्ष फल देना पड़े।

(07/01/1980)

जैसे साइन्स वालों ने चन्द्रमा पर जाकर थोड़ी झलक दिखाई तो सबने प्लॉट खरीदने की तैयारी शुरू कर दी, तो कम से कम साइलेन्स की शक्ति वाले नई दुनिया में प्लाट खरीदने की तैयारी तो करा दो। बुकिंग तो करा लें। जैसे साइन्स की कोई भी इन्वेन्शन पहले प्रयोगशाला में लाकर अनाउन्स करते हैं, ऐसे आप लोग भी पहले अपनी एरिया की प्रयोगशाला में प्लैन का प्रयोग करो। फिर सब मानेंगे। प्लैन की प्रैक्टिकल सफलता निकले। जो प्रदर्शनी वा मेला देख चुके उनके लिए अब नया प्लैन चाहिए। नई आकर्षण चाहिए। तो प्लैनिंग बुद्धि प्लैन निकालो। ड्रामा अनुसार जो विशेषता मिली हुई है, उस विशेषता को कार्य में लगाना अर्थात् विशेष लॉटरी लेना।

नये-नये साधन बनाने का प्लैन निकालो, कॉपी में नहीं, प्रैक्टिकल में। वहाँ के तो कागज़ पर ही रह जाते हैं। लेकिन यह प्रैक्टिकल के प्लैन हों।

(14/01/1980)

सदा अपनी शुभ भावना से वृद्धि करते रहते हो? कैसी भी आत्मायें हो लेकिन सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना रखो। शुभ भावना सफलता को प्राप्त करायेगी। शुभ भावना से सेवा करने का अनुभव है? शुभ भावना अर्थात् रहम दिल। जैसे बाप अपकारियों पर उपकारी है ऐसे ही आपके सामने कैसी भी आत्मा हो लेकिन अपने रहम की वृत्ति से, शुभ भावना से उसे परिवर्तन कर दो। जब साइन्स वाले रेत में खेती पैदा कर सकते हैं तो क्या साइलेन्स वाले धरती का परिवर्तन नहीं कर सकते! संकल्प भी सृष्टि बना देता है। इसलिए सदा धरती को परिवर्तन करने की शुभ भावना हो। अपनी चढ़ती कला के वायब्रेशन द्वारा धरती का परिवर्तन करते चलो। स्व परिवर्तन से धरती परिवर्तन हो जायेगी। धरती में हल चलाने वाले हो ना। थकने वाले तो नहीं। हल चलाने वाले अच्छे अथक होते हैं कलराठी जमीन को भी हरा-भरा कर देते हैं। अब दिलशिकस्त नहीं होना,

दिलखुश रहना तो आपकी खुशी सबको स्वत: ही आकर्षित करेगी।

(23/01/1980)

सुनाया कि सूक्ष्मवतन में मेहनत नहीं करनी पड़ती है चेकिंग करने में। संकल्प का स्विच ऑन किया और हरेक का सब प्रकार का टोटल इमर्ज हो जाता है। साकार दुनिया के माफिक मेहनत नहीं करनी पड़ती है। जो साइन्स के साधन अभी निकाल रहे हैं उसका रिफाइन रूप वहाँ पहले से ही है। यह टी.वी. तो अभी निकली है लेकिन आप बच्चों को सूक्ष्मवतन में स्थूल वतन का दृश्य स्थापना के आदि में ही दिखाकर अनुभव कराया है। साइन्स वाले मेहनती बच्चे हैं, अब सितारों तक मेहनत कर रहे हैं। चन्द्रमा में कुछ नहीं मिला तो सितारें ही सही। लेकिन आप बच्चे साइलेन्स की शक्ति से सितारों से भी परे परमधाम का अनुभव आदि से कर रहे हो फिर भी हरेक बच्चे को मेहनत का फल जरूर मिलता है।

(04/02/1980)

वरदानी रूप द्वारा सेवा करने के लिए पहले स्वयं में शुद्ध संकल्प चाहिए तथा अन्य संकल्पों को सेकेण्ड में कन्ट्रोल करने का विशेष अभ्यास चाहिए। सारा दिन शुद्ध संकल्पों के सागर में लहराता रहे और जिस समय चाहे शुद्ध संकल्पों के सागर के तले में जाकर साइलेंस स्वरूप हो जाए अर्थात् ब्रेक पावरफुल हो। संकल्प शक्ति अपने कन्ट्रोल में हो। साथ-साथ आत्मा की और भी विशेष दो शक्तियाँ बुद्धि और संस्कार, तीनों ही अपने अधिकार में हों। तीनों में से एक शक्ति के ऊपर भी अगर अधिकारी कम है तो वरदानी स्वरूप की सेवा जितनी करनी चाहिए उतनी नहीं कर सकते।

(20/01/1981)

जितना ही साधनों द्वारा सेवा की स्टेज पर आना है उतना ही सिद्धि स्वरूप बन साइलेन्स के स्वरूप की अनुभूति करनी है। सेवा के साधन भी बहुत अच्छे बनाये हैं। जितना विशाल सेवा का यज्ञ रच रहे हैं, वैसे ही संगठित रूप का, ज्वाला रूप शान्ति कुण्ड का महायज्ञ रचना है। यह सेवा का यज्ञ है - विश्व की आत्माओं में वाणी द्वारा हल चलाना। हल चलाने में हलचल होती है। उसके बाद जो बीज डालेंगे उसको शीतलता के रूप से, साइलेन्स की पावर से शीतल जल डालेंगे तभी शीतल जल पड़ने से फल निकलेगा। ऐसे नहीं समझना कि महायज्ञ हुआ तो सेवा का बहुत पार्ट समाप्त किया। यह तो हल चला करके बीज डालेंगे। मेहनत ज्यादा इसमें लगती है। उसके बाद फल निकालने के लिए महादानी के बाद वरदानी की सेवा करनी पड़े। **वरदानी मूर्त अर्थात् स्वयं सदा वरदानों से सम्पन्न। सबसे पहला वरदान कौन सा है? सभी को दिव्य जन्म मिलते ही पहला वरदान कौन-सा मिला? वरदान अर्थात् जिसमें मेहनत नहीं। सहज प्राप्ति हो जाए वह वरदान क्या मिला? हरेक का अलग-अलग वरदान है या एक ही है? सुनाने में तो अलग-अलग अपना वरदान सुनाते हो ना। सभी का एक ही वरदान है जो बिना मेहनत के, बिना सोचे समझे हुए बाप ने कैसी भी कमज़ोर आत्मा को, हिम्मतहीन आत्मा को अपना स्वीकार कर लिया। जो है जैसा है मेरा है। यह सेकेण्ड में वर्से के अधिकारी बनाने की लाटरी कहो, भाग्य कहो, वरदान कहो, बाप ने स्वयं दिया। स्मृति के स्वीच को ऑन कर दिया कि - 'तू मेरा है'। सोचा नहीं था कि ऐसा भाग्य भी मिल सकता है। लेकिन भाग्य विधाता बाप ने भाग्य का वरदान दे दिया। इसी सेकेण्ड के वरदान ने जन्म-जन्मान्तर के वर्से का अधिकारी बनाया, इस वरदान को स्मृति स्वरूप में लाना अर्थात् वरदानी बनना।**

(20/01/1981)

इस वर्ष में जितना सेवा की हलचल उतना ही बिल्कुल जैस अण्डरग्राउण्ड चले जाओ। कोई भी नई इन्वेंशन और शक्तिशाली इन्वेंशन होती है तो उतना अन्डरग्राउण्ड करते हैं तो एकान्तवासी बनना ही अन्डरग्राउण्ड है। जो भी समय मिले, इकट्ठा एक घण्टा वा आधा घण्टा समय नहीं मिलेगा। यह भी अभ्यास हो जायेगा। अभी-अभी बात की, अभी-अभी 5मिनट भी मिले तो सागर के तले में चले जायेंगे। जो आने वाला भी समझेगा कि यह कहाँ और स्थान पर है। यहाँ नहीं है। उनके भी संकल्प ब्रेक में आ जायेंगे। वाणी में आना चाहेंगे तो आ न सकेंगे। साइलेन्स द्वारा ऐसा स्पष्ट उत्तर मिलेगा जो वाणी द्वारा भी कम स्पष्ट होता। **जैसे साकार में देखा बीच-बीच में कारोबार में रहते भी गुम अवस्था की अनुभूति होती थी ना। सुनते-सुनाते डायरेक्शन देते अन्डरग्राउण्ड हो जाते थे। तो अभी इस अभ्यास की लहर चाहिए।** चलते-चलते देखें कि यह जैसे कि गायब है। इस दुनिया में है नहीं। यह फरिश्ता इस देह की दुनिया और देह के भान से परे हो गये। इसको ही सब साक्षात्कार कहेंगे। जो भी सामने आयेगा वह इसी स्टेज में साक्षात्कार का अनुभव करेगा। जैसे शुरू में साक्षात्कार की लहर थी ना। उसी से ही आवाज़ फैला ना। चाहे जादू अथवा कुछ भी समझते थे परन्तु आवाज़ तो इससे हुआ ना। ऐसी स्टेज में जब अनुभव समान साक्षात्कार होंगे तो फिर प्रत्यक्षता होगी। नाम बाला होगा। साक्षात्कार होगा। प्रत्यक्षफल अनुभव होगा। इसी प्रत्यक्ष फल की सीज़न में प्रत्यक्षता होगी। इसी को ही वरदानी रूप कहा जाता। जो आये वह अनुभव कर जाए। बात करते-करते खुद भी गुम दूसरे को भी गुम कर देंगे। यह भी होना है। वाणी द्वारा कार्य चलाकर देख रहे हैं। लेकिन यह अनुभव करने और कराने की स्टेज समस्याओं का हल सेकेण्ड में करेगी। टाइम कम और सफलता ज्यादा होगी। आजकल किसको भी कोई बात वाणी द्वारा दो तो क्या कह देते? हाँ यह तो सब पता है। नालेजफुल हो गये हैं। सेकेण्ड में कहेंगे यह तो हम जानते हैं। यही सुनने को मिलेगा। यह भी सब समझ गये हैं कि फलानी भूल की क्या शिक्षा मिलेगी। तो अब नया तरीका चाहिए। वह यह है। अनुभूति की

कमी है, पाइंटस की कमी नहीं है। एक सेकेण्ड भी किसी को अनुभूति करा दो, शक्ति रूप की, शान्ति रूप की तो वह चुप हो जायेंगे।

(20/01/1981)

अभी-अभी पुरुषार्थी, अभी-अभी प्रालब्धी। संगम के पुरुषार्थी, सतयुग के प्रालब्धी नहीं। संगमयुग के प्रालब्धी बनना है। अभी अभी बीज बोओ,अभी-अभी फल खाओ। जब साइंस वाले भी हर कार्य में प्राप्ति के गति को तीव्र बना रहे हैं, तो साइलेंस की शक्ति वाले अपने गति को उससे भी ज्यादा तीव्र करेंगे ना। वा एक जन्म में करना और दूसरे जन्म में पाना? वे लोग आवाज की गति से भी तेज जाना चाहते हैं। सब कार्य सेकेण्ड की गति से भी आगे करना चाहते हैं। इतने सारे विश्व का विनाश कितने थोड़े समय में करने के लिए तैयार हो गये हैं? तो स्थापना के निमित्त बनी हुई आत्मायें सेकेण्ड में करना, सेकेण्ड में पाना, ऐसी तीव्र गति के अनुभवी नहीं होंगे। तो समझा-अभी क्या करना है? प्रत्यक्षफल खाओ। प्रत्यक्षफल नहीं अच्छा लगता? मेहनत करने वाला फल अच्छा लगता है? मेहनत का सूखा फल खा के तो ऐसे कमजोर बन गये, नयनहीन, बुद्धिहीन, श्रेष्ठ कर्महीन बन गये। अब तो ताजा प्रत्यक्षफल खाओ। मेहनत को मुहब्बत में बदल दो।

(03/11/1981)

आवाज से परे जाने की युक्ति जानते हो? अशरीरी बनना अर्थात् आवाज़ से परे हो जाना। शरीर है तो आवाज़ है। शरीर से परे हो जाओ तो साइलेंस। साइलेंस की शक्ति कितनी महान है, इसके अनुभवी हो ना? साइलेंस की शक्ति द्वारा सृष्टि की स्थापना कर रहे हो। साइंस की शक्ति से विनाश, साइलेंस की शक्ति से स्थापना। तो ऐसे समझते हो कि हम अपनी साइलेंस की शक्ति द्वारा स्थापना का कार्य कर रहे हैं। हम ही स्थापना के कार्य के निमित्त हैं तो स्वयं साइलेंस रुप में स्थित रहेंगे तब स्थापना का कार्य कर सकेंगे। अगर स्वयं हलचल

में आते तो स्थापना का कार्य सफल नहीं हो सकता। **विश्व में सबसे प्यारे से प्यारी चीज है- 'शान्ति अर्थात् साइलेंस'।** इसके लिए ही बड़ी-बड़ी कानफ्रेंस करते हैं। शान्ति प्राप्त करना ही सबका लक्ष्य है। यही सबसे प्रिय और शक्तिशाली वस्तु है। और आप समझते हो साइलेंस तो हमारा 'स्वधर्म' है। आवाज़ में आना जितना सहज लगता है उतना सेकेंड में आवाज़ से परे जाना - यह अभ्यास है? साइलेंस की शक्ति के अनुभवी हो? कैसी भी अशान्त आत्मा को शान्त स्वरुप होकर शान्ति की किरणें दो तो अशान्त भी शान्त हो जाए। शान्ति स्वरुप रहना अर्थात् शान्ति की किरणें सबको देना। यही काम है। विशेष शान्ति की शक्ति को बढ़ाओ। स्वयं के लिए भी औरों के लिए भी शान्ति के दाता बनो। भक्त लोग शान्ति देवा कहकर याद करते हैं ना? **देव यानी देने वाले। जैसे बाप की महिमा है शान्ति दाता, वैसे आप भी शान्तिदेवा हो। यही सबसे बड़े ते बड़ा महादान है। जहाँ शान्ति होगी वहाँ सब बातें होंगी।** तो सभी शान्ति देवा हो, अशान्ति के वातावरण में रहते स्वयं भी शान्त स्वरुप और सबको शान्त बनाने वाले, जो बापदादा का काम है, वही बच्चों का काम है। बापदादा अशान्त आत्माओं को शान्ति देते हैं तो बच्चों को भी फालों फादर करना है। ब्राह्मणों का धन्धा ही यह है।

(06/11/1981)

सभी बच्चों को बापदादा सदा 'सहजयोगी भव' का वरदान दे रहे हैं। सिर्फ एक बिन्दी को याद करो। सबसे सरल मात्रा बिन्दी है। तो बापदादा सिर्फ बिन्दी का ही हिसाब बताते हैं। स्वयं भी बिन्दु रुप बनो, याद भी बिन्दु को करो और ड्रामा के हर दृश्य को जाने, करने के बाद बिन्दु की मात्रा लगा दो। एक बिन्दु की मात्रा में आप, बाप और रचना, सब आ जाता है। तो जानना ही क्या है- 'बिन्दु'। करना भी क्या है - 'बिन्दु को याद'। इसी बिन्दु की मात्रा के महत्व को जान सदा सहजयोगी बन सकते हो। कितना भी बड़ा विस्तार है लेकिन समाया हुआ-बिन्दु में

है। बीज बिन्दु, उसी में सारा वृक्ष समाया हुआ है। आत्मा बिन्दु उसी में 84 जन्मों के संस्कार समाये हुए हैं। 5 हजार वर्ष के ड्रामा को अब संगम के अन्त में समाप्त कर रहे हो, अब ड्रामा का चक्र पूरा हुआ। अर्थात् जो चक्र बीत चुका उसको फुल स्टाप अर्थात् बिन्दी लगाये, बिन्दी बन, अब घर जाना है। बिन्दु के साथ बिन्दु बनकर जाना है। घर भी सर्व बिन्दुओं का घर है। संकल्प, कर्म, संस्कार सब मर्ज अर्थात् बिन्दी लगी हुई है। समाप्ति की मात्रा है ही बिन्दु। सर्वगुण, सर्वज्ञान के खजानों के सागर...लेकिन सागर भी है 'बिन्दु'। सम्बन्ध और सम्पर्क मे भी आओ तो सर्व के मस्तक में क्या चमक रहा है-बिन्दु। सर्व कार्यकर्ता कौन हैं? बिन्दु ही हैं ना। चाहे धरनी से चन्द्रमा तक पहुंचे तो भी बिन्दु पहुंचा। चाहे आप साइलेन्स की शक्ति से 3 लोकों तक पहुंचते तो भी कौन पहुंचता-बिन्दु। साइंस की शक्ति या साइलेन्स की शक्ति, निर्माण करने की शक्ति वा निर्वाण में जाने की शक्ति है तो बिन्दु ना! बीज से इतना सारा वृक्ष विस्तार को पाता लेकिन विस्तार के बाद समाता किसमें है? बीज अर्थात् बिन्दु में। तो अनादि अविनाशी है ही बिन्दु। आप भी तीन कालों की नालेज, तीन लोकों की नालेज प्राप्त करते हो लेकिन प्राप्त करने वाला कौन? 'बिन्दु'। आदि से अन्त तक वैरायटी पार्ट बजाया लेकिन पार्टधारी कौन? किसने पार्ट बजाया? बिन्दु ने। तो **महत्व सारा बिन्दु का है। और बिन्दु को जाना तो सब कुछ जाना। सब कुछ पाया। बिन्दु रुप में स्थित हो जो संकल्प करो, जो भावना रखो, जो बोल बोलो, जो कर्म करो, जैसे बिन्दु महान है वैसे सर्व बातें महान हो जाती हैं अर्थात् स्वतः श्रेष्ठ हो जाती हैं।**

(11/11/1981)

आज निर्वाण अर्थात् वाणी से परे शान्त स्वरुप स्थिति का अनुभव करा रहे हैं। आप आत्माओं का स्वधर्म और सुकर्म, स्व स्वरुप, स्वदेश है ही शान्त। संगम युग की विशेष शक्ति भी साइलेंस की शक्ति है। आप सभी संगमयुगी आत्माओं का लक्ष्य भी यही है कि अब स्वीट साइलेन्स होम में जाना है। इसी

अनादि लक्षण-शान्त स्वरुप रहना और सर्व को शान्ति देना - इसी शक्ति की विश्व में आवश्यकता है। सर्व समस्याओं का हल इसी साइलेन्स की शक्ति से होता है। क्यों? साइलेन्स अर्थात् शान्त स्वरुप आत्मा एकान्तवासी होने के कारण सदा एकाग्र रहती है और एकाग्रता के कारण विशेष दो शक्तियाँ सदा प्राप्त होती हैं। एक- **परखने की शक्ति**। दूसरी- **निर्णय करने की शक्ति**। यही विशेष दो शक्तियाँ व्यवहार वा परमार्थ दोनों की सर्व समस्याओं का सहज साधन है।

परमार्थ मार्ग में विघ्न विनाशक बनने का साधन है- माया को परखना। और परखने के बाद निर्णय करना। न परखने के कारण ही भिन्न-भिन्न माया के रुपों को दूर से भगा नहीं सकते हैं। परमार्थी बच्चों के सामने माया भी रायल ईश्वरीय रुप रच करके आती है। जिसको परखने के लिए एकाग्रता की शक्ति चाहिए। और एकाग्रता की शक्ति साइलेन्स की शक्ति से ही प्राप्त होती है।

वर्तमान समय ब्राह्मण आत्माओं में तीव्रगति का परिवर्तन कम है। क्योंकि माया के रायल ईश्वरीय रोल्ड गोल्ड को रीयल गोल्ड समझ लेते हैं। जिस कारण वर्तमान न परखने के कारण बोल क्या बोलते हैं। मैंने जो किया वा कहा- वह ठीक बोला। मैं किसमें रांग हूँ! ऐसे ही तो चलना पड़ेगा! रांग होते भी अपने को रांग नहीं समझेंगें। कारण? परखने की शक्ति की कमी। माया के रायल रुप को रीयल समझ लेते। परखने की शक्ति न होने के कारण यथार्थ निर्णय भी नहीं कर सकते। स्व-परिवर्तन करना है वा पर-परिवर्तन होना है, यह निर्णय नहीं कर सकते। इसलिए परिवर्तन की गति तीव्र चाहिए। समय तीव्रगति से आगे बढ़ रहा है। लेकिन समय प्रमाण परिवर्तन होना और स्व के श्रेष्ठ संकल्प से परिवर्तन होना - इसमें प्राप्ति की अनुभूति में रात-दिन का अन्तर है। **जैसे आजकल की सवारी कार चलाते हो ना! एक है सेल्फ स्टार्ट होना और दूसरा है धक्के से स्टार्ट होना। तो दोनों में अन्तर है ना। तो समय के धक्के से परिवर्तन होना यह है पुरुषार्थ की गाड़ी धक्के से चलना। सवारी में चलना नहीं हुआ, सवारी को चलाना हुआ। समय के आधार पर परिवर्तन होना अर्थात्**

सिर्फ थोड़ा सा हिस्सा प्राप्ति का प्राप्त करना। जैसे एक होते हैं मालिक, दूसरे होते हैं थोड़े से शेयर्स लेने वाले। कहाँ मालिकपन, अधिकारी और कहाँ अंचली लेने वाले। इसका कारण क्या हुआ? साइलेन्स के शक्ति की अनुभूति नहीं है जिसके द्वारा परखने और निर्णय करने की शक्ति प्राप्त होने के कारण परिवर्तन तीव्रगति से होता है। समझा- **साइलेन्स की शक्ति कितनी महान है? साइलेन्स की शक्ति, क्रोध-अग्नि को शीतल कर देती है। साइलेन्स की शक्ति व्यर्थ संकल्पों की हलचल को समाप्त कर सकती है। साइलेन्स की शक्ति ही कैसे भी पुराने संस्कार हों, ऐसे पुराने संस्कार समाप्त कर देती है। साइलेन्स की शक्ति अनेक प्रकार के मानसिक रोग सहज समाप्त कर सकती है। साइलेंन्स की शक्ति, शान्ति के सागर बाप से अनेक आत्माओं का मिलन करा सकती है। साइलेन्स की शक्ति-अनेक जन्मों से भटकती हुई आत्माओं को ठिकाने की अनुभूति करा सकती है। महान आत्मा, धर्मात्मा सब बना देती है। साइलेन्स की शक्ति - सेकण्ड में तीनों लोकों की सैर करा सकती है।** समझा कितनी महान है? साइलेन्स की शक्ति-कम मेहनत, कम खर्चा बालानशीन करा सकती है। साइलेन्स की शक्ति-समय के खज़ाने में भी एकानामी करा देती है अर्थात् कम समय में ज्यादा सफलता पा सकते हो। साइलेन्स की शक्ति-हाहाकार से जयजयकार करा सकती है। साइलेन्स की शक्ति सदा आपके गले में सफलता की मालायें पहनायेंगी। जयजयकार भी हो गई, मालायें भी पड़ गई, बाकी क्या रहा? सब कुछ हो गया ना। तो सुना आप कितने महान हो? महान शक्ति को कार्य में कम लगाते हो।

वाणी से तीर चलाना आ गया है, अब 'शान्ति' का तीर चलाओ। जिससे रेत में भी हरियाली कर सकते हो। कितना भी कड़ा सा पहाड़ हो लेकिन पानी निकाल सकते हो। वर्तमान समय 'शान्ति की शक्ति' प्रैक्टिकल में लाओ। मधुबन की धरनी भी क्यों आकर्षण करती है? शान्ति की अनुभूति होती हैं ना। ऐसे ही चारों और के सेवाकेन्द्र और प्रवृति के स्थान - 'शान्ति कुण्ड' बनाओ। तो

चारों ओर शान्ति की किरणें विश्व की आत्माओं को शान्ति की अनुभूति की तरफ आकर्षित करेंगी। चुम्बक बन जायेंगे। ऐसा समय आयेगा जो आपके सर्व स्थान शान्ति प्राप्ति के चुम्बक बन जायेंगे, आपको नही जाना पड़ेगा वह स्वयं आयेंगे। लेकिन तब, जब सर्व में शान्ति की महान शक्ति निरन्तर संकल्प बोल और कर्म में हो जायेगी। तब ही 'मास्टर शान्ति देवा' बन जायेंगे। तो अभी समझा क्या करना है?

(13/11/1981)

साइलेन्स की शक्ति से दैवी स्वराज्य की स्थापना-साइलेन्स की शक्ति से सारे विश्व पर दैवी राजस्थान का फाउन्डेशन डाल रहे हो ना। वह आपस में लड़ते हैं और बाप दैवी राजस्थान बना रहे हो, क्या बनना है? यह उन्हों को क्या पता वह तो अपना-अपना प्रयत्न करते रहते हैं लेकिन भावी क्या है - उसको तो आप जानते हो? तो सभी बच्चे साइलेन्स की शक्ति से दैवी स्वराज्य बना रहे हो ना? उनकी है जबान की शक्ति, या बाहुबल, शस्त्रों की शक्ति और आपकी है साइलेन्स की शक्ति। इसी शक्ति के द्वारा दैवी राज्य स्थापन हो ही जायेगा - यह तो अटल निश्चय है ना। वे भी समझते हैं कि वर्तमान समय कोई ईश्वरीय शक्ति चाहिए जो कार्य करे। लेकिन गुप्त होने के कारण जान नहीं सकते हैं। आप जानते हो और कर भी रहे हो।

(26/11/1981)

फारेन में भी अनुभव के आगे सब झुक जाते हैं। साइंस, साइलेंस की शक्ति के आगे झुकेगी जरुर। अभी बड़े-बड़े साइंस वाले भी नाउम्मीद होने लग गये हैं। कहां जायेंगे? जहां आप साइलेंस वालो की किरणें दिखाई देंगी वहां ही नजर जायेगी। आपके एटम से ही उन्होंने एटम बनाया है। कापी तो आपही कि की है। अगर आत्मिक शक्ति नहीं होते तो यह एटामिक बाम्बस बनाने वाला कौन?

(29/12/1981)

सभी स्वतन्त्र हो ना? आर्डर मिले अपने स्वीट होम में चले जाओ तो कितने समय में जा सकते हो? सेकण्ड में जा सकते हो ना। आर्डर मिले अपने मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज द्वारा, अपनी सर्वशक्तियों की किरणें द्वारा अधंकार में रोशनी लाओ, ज्ञान सूर्य, अधंकार को मिटा लो, तो सेकण्ड में यह बेहद की सेवा कर सकते हो? ऐसे मास्टर ज्ञान सूर्य बने हो? जब साइन्स के साधन सेकण्ड में अधंकार से रोशनी कर सकते हैं तो हे ज्ञान सूर्य बच्चे, आप कितने समय में रोशनी कर सकते हो? साइन्स से तो साइलेन्स की शक्ति अति श्रेष्ठ है। तो ऐसे अनुभव करते हो कि सेकण्ड में स्मृति का स्विच आन करते अधंकार में भटकी हुई आत्मा को रोशनी में लाते हैं? क्या समझते हो?

(31/12/1981)

यह अटेन्शन ऐसा जादू का कार्य करेगा जो अनेक आत्माओं के अनेक प्रकार के टेन्शन को समाप्त कर बाप तरफ अटेन्शन खिंचवायेगा। जैसे आजकल साइंस के अनेक साधन ऐसे हैं - स्विच आन करने से चारों ओर का किचड़ा, गंदगी अपने तरफ खींच लेते हैं। चारों ओर जाना नहीं पड़ता लेकिन पावर द्वारा स्वतः ही खिंच जाता है। ऐसे साइलेंस की शक्ति द्वारा, इस अटेन्शन के समर्थ स्वरूप द्वारा, अनेक आत्माओं के टेन्शन समाप्त कर देंगे अर्थात् वे आत्मायें अनुभव करेंगी कि हमारा टेन्शन जो अनेक तरह से बहुत समय से परेशान कर रहा था वह कैसे समाप्त हो गया! किसने समाप्त किया! इसी अनुभूति द्वारा अटेन्शन जायेगा - शिव शक्ति कम्बाइण्ड रूप की तरफ।

(12/01/1982)

ऐसी समान आत्मा अर्थात् एवररेडी आत्मा - साकारी दुनिया और साकारी शरीर में होते हुए भी बुद्धियोग की शक्ति द्वारा सदा ऐसा अनुभव करेगी कि मैं आत्मा चाहे सूक्ष्मवतन में, चाहे मूलवतन में, वहाँ ही बाप के साथ रहती हूँ।

सेकण्ड में सूक्ष्मवतन वासी, सेकण्ड में मूलवतनवासी, सेकण्ड में साकार वतन वासी हो कर्मयोगी बन कर्म का पार्ट बजाने वाली हूँ लेकिन अनेक बार अपने को बाप के साथ सूक्ष्मवतन और मूलवतन में रहने का अनुभव करेंगे।

फुर्सत मिली और सूक्ष्मवतन व मूलवतन में चले गये। ऐसे सूक्ष्मवतन वासी, मूलवतनवासी की अनुभूति करेंगे जैसे कार्य से फुर्सत मिलने के बाद घर में चले जाते हैं। दफ्तर का काम पूरा किया तो घर में जायेंगे वा दफ्तर में ही बैठे रहेंगे! ऐसे एवररेडी आत्मा बार-बार अपने को अपने घर के निवासी अनुभव करेंगी। जैसे कि घर सामने खड़ा है। अभी-अभी यहाँ, अभी-अभी वहाँ। साकारी वतन के कमरे से निकल मूलवतन के कमरे में चले गये।

ऐसी समान आत्मा बन्धनमुक्त होने के कारण ऐसे अनुभव करेगी जैसे उड़ता पंछी बन ऊँचे से ऊँचे उड़ते जा रहे हैं और ऊँची स्थिति रूपी स्थान पर स्थित होते अनुभव करेंगे कि यह सब नीचे हैं। मैं सबसे ऊपर हूँ। जैसे विज्ञान की शक्ति द्वारा 'स्पेस' में चले जाते हैं तो धरनी का आकर्षण नीचे रह जाता है और वह स्वयं को सबसे ऊपर अनुभव करते और सदा हल्का अनुभव करते हैं। ऐसे साइलेन्स की शक्ति द्वारा स्वयं को विकारों की आकर्षण, वा प्रकृति की आकर्षण सबसे परे उड़ती हुई स्टेज अर्थात् सदा डबल लाइट रूप अनुभव करेंगे। उड़ने की अनुभूति सब आकर्षण से परे ऊँची है। सर्व बन्धनों से मुक्त है। इस स्थिति की अनुभूति होना अर्थात् ऊँची उड़ती कला वा उड़ती हुई स्थिति का अनुभव होना।

(27/03/1982)

सर्व आत्माओं की आश पूर्ण होने का समय आ गया है। समय सबकी बुद्धि को प्रेर रहा है। गुप्त कार्य जो चल रहा है वह कार्य सभी को अपनी तरफ खींच रहा है लेकिन वह जान नहीं सकते कि यह संकल्प क्यों आ रहा है! बनाया भी खुद और फिर यूज़ न करें यह संकल्प क्यों चल रहा है! तो स्थापना का कार्य प्रेरित कर रहा है लेकिन वह जानते नहीं। यह आप स्वयं समझते हो कि परिवर्तन में

विनाश के सिवाए स्थापना होगी नहीं। लेकिन भावना तो उन्हों की भी वही है ना! उन्हों की भावना को लेकर यह खुशखबरी उन्हों को सुनाओ तो विधि यही सुनायेंगे कि - 'शान्ति के सागर द्वारा ही शान्ति होगी'। हम सब एक हैं। यह ब्रदरहुड की भावना किस आधार से बन सकती? जिससे यह संकल्प ही ना उठे, मेहनत नहीं करनी पड़े। कभी हथियार यूज़ करें, कभी नहीं करें। लेकिन यह संकल्प ही समाप्त हो जाए, ब्रदरहुड हो जाए, यह है विधि। ब्रदरहुड आ गया तो बाप तो है ही। ऐसे खुशखबरी के रूप से उन्हों को सुनाओ। शान्ति का पाठ पढ़ना पड़ेगा। शान्ति की विधि से अशान्ति खत्म होगी। लेकिन वह शान्ति आवे कैसे? उसके लिए फिर 'मन्त्र' देना पड़े। शान्ति का पाठ पढ़ाते हो ना! मैं भी शान्त, घर भी शान्त, बाप भी शान्ति का सागर, धर्म भी शान्त। तो ऐसा पाठ पढ़ाओ। शान्ति ही शान्ति का पाठ। दो घड़ी के लिए तो अनुभव करेंगे ना। **एक घड़ी भी डेड साइलेन्स की अनुभूति हो जाए तो वह बार-बार आपको थैंक्स देंगे। आपको ही भगवान समझने लग जायेंगे। क्योंकि बहुत परेशान हैं ना।** जितनी ज्यादा बड़ी बुद्धि है उतनी बड़ी परेशानी भी है, ऐसी परेशान आत्माओं को अगर ज़रा भी अंचली मिल जाती तो वही उन्हों के लिए एक जीवन का वरदान हो जाता। जिसको भी चांस मिले वह बोलते-बोलते शान्ति में ले जाएँ। एक सेकण्ड भी अनुभूति में उन्हों को ले जाएँ तो वह बहुत-बहुत थैंक्स मानेंगे। वातावरण ऐसा बना दो जो सभी ऐसे अनुभव करें जैसे कोई शान्ति की किरण आ गई है। चाहे एक, आधा सेकण्ड ही अनुभव हो क्योंकि यह तो वायुमण्डल द्वारा होगा ना! ज्यादा समय नहीं रह सकेंगे। एक आधा सेकण्ड भी वायुमण्डल ऐसा हल्का बन जाए तो अन्दर से बहुत शुक्रिया मानेंगे। क्योंकि विचारे बहुत हलचल में हैं। उन्हों को देख बापदादा को तो रहम आता है। ना रात की नींद, न दिन की, भोजन भी खाने की रीति से नहीं खाते। जैसे कि ऊपर में बोझ पड़ा हुआ है। क्या होगा, कैसे होगा! तो ऐसी आत्माओं को एक झलक भी मिल जाए तो क्या मानेंगे! उन्हों के लिए तो समझो सूर्य नीचे उतर आया। एक झलक ही चाहिए। ज्यादा समय तो वह

शक्ति को धारण भी नहीं कर सकेंगे। यह तो थोड़ी घड़ी की बात है। जैसे लहर आती और चली जाती है। इतना भी अनुभव हुआ तो उन्हों के लिए तो बहुत है क्योंकि बहुत परेशान हैं। उन्हों को थोड़ा तिनके का सहारा भी बहुत है।

(13/06/1982)

आज बाप दादा अमृतवेले चारों ओर बच्चों के पास चक्कर लगाने गये। चक्कर लगाते हुए बाप दादा आज अपनी शक्ति सेना वा पाण्डव सेना, सभी की तैयारी देख रहे थे कि कहाँ तक सेना शक्तिशाली शस्त्रधारी एवररेडी हुई है। समय का इंतजार है वा स्वयं सदा ही सम्पन्न रहने का इंतजाम करने वाली है। तो आज बापदादा सेनापति के रूप में सेना को देखने गये। विशेष बात, साइन्स की शक्ति पर साइलेन्स के शक्ति की विजय है। तो साइलेन्स की शक्ति संगठित रूप में और व्यक्तिगत रूप में कहाँ तक प्राप्त कर ली है? वह देख रहे थे। साइलेन्स की शक्ति द्वारा प्रत्यक्ष फल रूप में स्व-परिवर्तन, वायुमण्डल-परिवर्तन, वृत्ति-परिवर्तन, संस्कार-परिवर्तन कहाँ तक कर सकते हैं वा किया है तो आज सेना के हरेक सैनिक की साइलेन्स के शक्ति की प्रयोगशाला चेक की कि कहाँ तक प्रयोग कर सकते हैं।

स्मृति में रहना, वर्णन करना वह भी आवश्यक है लेकिन वर्तमान समय के प्रमाण सर्व आत्मायें प्रत्यक्षफल देखना चाहती हैं। प्रत्यक्ष फल अर्थात् प्रैक्टिकल प्रूफ देखने चाहती हैं। तो तन के ऊपर साइलेन्स की शक्ति का प्रयोग करते हैं। ऐसे ही मन के ऊपर, कर्म के ऊपर, सम्बन्ध सम्पर्क में आने से सम्बन्ध सम्पर्क में क्या प्रयोग होता है, कितनी परजेन्टेज में होता है? - यह विश्व की आत्मायें भी देखने चाहती हैं। हरेक ब्राह्मण आत्मा भी स्व में प्रत्यक्ष प्रूफ के रूप में सदा विशेष से विशेष अनुभव करने चाहती है। रिजल्ट में साइलेन्स की शक्ति का जितना महत्व है, उतना उसे विधि पूर्वक प्रयोग में लाने में अभी कम है। चाहना बहुत है, नालेज भी है लेकिन प्रयोग करते हुए आगे बढ़ते चलो। साइलेन्स शक्ति की प्राप्ति की महीनता अनुभव करते, स्व प्रति वा अन्य प्रति कार्य में लगाना, उसमें अभी और

विशेष अटेन्शन चाहिए। विश्व की आत्माओं वा सम्बन्ध, सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को महसूस हो कि शान्ति की किरणें इन विशेष आत्मा वा विशेष आत्माओं द्वारा मिल रही है। हरेक से चलता फिरता **'शान्ति यज्ञ कुण्ड'** का अनुभव हो। जैसे आपकी रचना में छोटा-सा फायरफ्लाई दूर से ही अपनी रोशनी का अनुभव कराता है। दूर से ही देखते सब कहेंगे यह फायरफ्लाई आ रहा है, जा रहा है। ऐसे इस बुद्धि द्वारा अनुभव करें कि यह शान्ति का अवतार शान्ति देने आ गया है। चारों ओर की अशान्त आत्मायें, शान्ति की किरणों के आधार पर शान्ति कुण्ड की तरफ खिंची हुई आवें। जैसे प्यासा पानी की तरफ स्वत: ही खिंचता हुआ जाता है। ऐसे आप शान्ति के अवतार आत्माओं की तरफ खिंचे हुए आवें। इसी शान्ति की शक्ति का अभी और अधिक प्रयोग करो। शान्ति की शक्ति वायरलेस से भी तेज़ आपका संकल्प किसी भी आत्मा प्रति पहुँचा सकती है। जैसे साइन्स की शक्ति परिवर्तन भी कर लेती, वृद्धि भी कर लेती है, विनाश भी कर लेती, रचना भी कर लेती, हाहाकार भी मचा देती और आराम भी दे देती। लेकिन साइलेन्स की शक्ति का विशेष यंत्र है - 'शुभ संकल्प', इस संकल्प के यंत्र द्वारा जो चाहो वह सिद्धि स्वरूप में देख सकते हो। पहले स्व के प्रति प्रयोग करके देखो। तन की व्याधि के ऊपर प्रयोग करके देखो तो शान्ति की शक्ति द्वारा कर्म बन्धन का रूप, मीठे सम्बन्ध के रूप में बदल जायेगा। बन्धन सदा कड़वा लगता है, सम्बन्ध मीठा लगता है। यह कर्मभोग - कर्म का कड़ा बन्धन साइलेन्स की शक्ति से पानी की लकीर मिसल अनुभव होगा। भोगने वाला नहीं, भोगना भोग रही हूँ - यह नहीं लेकिन साक्षी दृष्टा हो इस हिसाब किताब का दृश्य भी देखते रहेंगे। इसलिए तन के साथ-साथ मन की कमजोरी, डबल बीमारी होने के कारण जो कड़े भोग के रूप में दिखाई देता है वह अति न्यारा और बाप का प्यारा होने के कारण डबल शक्ति अनुभव होने से कर्मभोग के हिसाब की शक्ति के ऊपर वह डबल शक्ति विजय प्राप्त कर लेगी। बीमारी चाहे कितनी भी बड़ी हो लेकिन दुःख वा दर्द का अनुभव नहीं करेंगे। जिसको दूसरी भाषा में आप कहते हो कि 'सूली से कांटे के समान'

अनुभव होगा। ऐसे टाइम में प्रयोग करके देखो। कई बच्चे करते भी हैं। इसी प्रकार से तन पर, मन पर, संस्कार पर अनुभव करते जाओ और आगे बढ़ते जाओ। यह रिसर्च करो। इसमें एक दो को नहीं देखो। यह क्या करते, इसने कहाँ किया है। पुराने करते वा नहीं करते, बड़े नहीं करते, छोटे करते, यह नहीं देखो। पहले मैं इस अनुभव में आगे आ जाऊं क्योंकि यह अपने आन्तरिक पुरुषार्थ की बात है। जब ऐसे व्यक्तिगत रूप में इसी प्रयोग में लग जायेंगे। वृद्धि को पाते रहेंगे तब एक-एक के शान्ति की शक्ति का संगठित रूप में विश्व के सामने प्रभाव पड़ेगा। अभी फर्स्ट स्टेप विश्व शान्ति की कान्फ्रेन्स कर निमंत्रण दिया लेकिन शान्ति की शक्ति का पुंज जब सर्व के संगठित रूप में प्रख्यात होगा तो आपको निमंत्रण आयेंगे कि हे शक्ति, शान्ति के अवतार इस अशान्ति के स्थान पर आकर शान्ति दो। जैसे सेवा में अभी भी जहाँ अशान्ति का मौका (मृत्यु) होता है तो आप लोगों को बुलाते हैं कि आओ आकर शान्ति दो। और **यह धीरे-धीरे प्रसिद्ध भी होता जा रहा है कि ब्रह्माकुमारियाँ ही शान्ति दे सकती हैं। ऐसे हर अशान्ति के कार्य में आप लोगों को निमंत्रण आयेंगे। जैसे बीमारी के समय सिवाए डाक्टर के कोई याद नहीं आता ऐसे अशान्ति के कोई भी बातों में सिवाए आप शान्ति-अवतारों के और कोई दिखाई नहीं देगा।** तो अभी शक्ति सेना, पाण्डव सेना, विशेष शान्ति की शक्ति का प्र-योग करो। प्रयोग करके दिखाओ। शान्ति की शक्ति का केन्द्र प्रत्यक्ष करो। समझा क्या करना है?

(21/02/1983)

ऐसे विशेष साइलेन्स की शक्ति उन आत्माओं को दो। अभी संकल्प उठता है कि कोई सहारा, कोई नया रास्ता मिलना चाहिए। अभी चाह उत्पन्न हो रही है। अब राह दिखाना आप सबका कार्य है। 'एकता और दृढ़ता' - यह दो साधन हैं राह दिखाने के। संगठन की शुभ भावना ऐसी आत्माओं को भावना का फल दिलाने के निमित्त बनेगी। सर्व का शुभ संकल्प, उन आत्माओं में भी शुभ

कार्य करने के संकल्प को उत्पन्न करेगा। इसी विधि को अभी से अपनाओ। फिर भी बड़ा कार्य सफल तब होता है जब सबके शुभ संकल्पों की आहुति पड़ती है। समझा। बापदादा तो यही सभी के प्रति कहते हैं कि कोई बच्चा वंचित न रह जाए। आप सभी तो मालामाल हो गये ना।

(03/12/1983)

शान्ति की शक्ति के अनुभव को भी अनुभव करते हो? क्योंकि शान्ति की शक्ति सारे विश्व को शान्तिमय बनाने वाली है। आप भी शान्तिप्रिय आत्मा हो ना! शान्ति की शक्ति द्वारा साइन्स की शक्ति को भी यथार्थ रुप से कार्य में लगाने से विश्व का कल्याण करने के निमित्त बन सकते हो। साइन्स की शक्ति भी आवश्यक है लेकिन सिर्फ़ सतोप्रधान बुद्धि बनने से इसका यथार्थ रुप से प्रयोग कर सकते हैं। आप सिर्फ़ इसी नालेज की कमी है कि यथार्थ रीति से इसको कार्य में कैसे लगायें! यही साइन्स इस नालेज के आधार पर नई सृष्टि की स्थापना के निमित्त बनेगी। लेकिन आप वह नालेज न होने कारण विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। तो अभी इसी साइन्स की शक्ति को साइलेन्स की शक्ति के आधार से बहुत ही अच्छे कार्य में लगाने के निमित्त बनो। इसमें भी नोबल प्राइज लेंगे ना! क्योंकि आवश्यकता इसी कार्य की है। तो जब जिस कार्य की आवश्यकता है उसमें निमित्त बनने वाले को सभी श्रेष्ठ आत्मा की नज़र से देखेंगे। तो समझा क्या करना है! अभी साइन्स और साइलेन्स का कनेक्शन कैसा है और दोनों के कनेक्शन से कितनी सफलता हो सकती है इसकी रिसर्च करो। रिसर्च की रुचि है ना! अभी यह करना। इतना बड़ा कार्य करना है। ऐसी दुनिया बनायेंगे ना।

(05/03/1984)

जैसे साइंस वाले इस साकार सृष्टि से, पृथ्वी से ऊपर अन्तरिक्ष यान द्वारा अपना कार्य शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। स्थूल से सूक्ष्म में जा रहे हैं।

क्यों? सूक्ष्म शक्तिशाली होता है। मंसा शक्ति भी 'अन्तर्मुखी यान' है। जिस द्वारा जहाँ भी चाहो, जितना जल्दी चाहो पहुँच सकते हो। जैसे साइंस द्वारा पृथ्वी की आकर्षण से परे जाने वाले स्वत: ही लाइट (हल्के) बन जाते हैं। ऐसे मंसा शक्तिशाली आत्मा स्वत: ही डबल लाइट स्वरूप सदा अनुभव करती है। जैसे अन्तरिक्ष यान वाले ऊँचे होने के कारण सारे पृथ्वी के जहाँ के भी चित्र खींचने चाहें खींच सकते हैं ऐसे साइलेन्स की शक्ति से अन्तर्मुखी यान द्वारा मंसा शक्ति द्वारा किसी भी आत्मा को चरित्रवान बनने की, श्रेष्ठ आत्मा बनने की प्रेरणा दे सकते हो! साइंस वाले तो हर चीज़ पर समय और सम्पत्ति खूब लगाते हैं, लेकिन आप बिना खर्चे थोड़े समय में बहुत सेवा कर सकते हो।

(28/01/1985)

आपको देखकर मुख से यह निकले - 'बाबा!' तभी कहेंगे पावरफुल दर्पण हो। अकेली आत्मा नहीं दिखाई दे, बाप दिखाई दे। इसी को कहा जाता है यथार्थ सेवाधारी। समझा! जितना आपके हर संकल्प में, बोल में 'बाबा-बाबा' होगा उतना औरों को आप से 'बाबा' दिखाई देगा। जैसे आजकल के साइंस के साधनों से आगे जो पहली चीज़ दिखाते वह गुम हो जाती और दूसरी दिखाई देती। ऐसे आपके साइलेन्स की शक्ति आपको देखते हुए आपको गुम कर दे। बाप को प्रत्यक्ष कर दे। ऐसी शक्तिशाली सेवा हो। बाप से संबंध जोड़ने से आत्मायें सदा शक्तिशाली बन जाती हैं। अगर आत्मा से संबंध जुट जाता तो सदा के लिए शक्तिशाली नहीं बन सकते। समझा। सेवाधारियों की विशेष सेवा क्या है? अपने द्वारा बाप को दिखाना। आपको देखें और 'बाबा-बाबा' के गीत गाने शुरू कर दें। ऐसी सेवा करते हो ना!

(21/02/1985)

बापदादा सभी बच्चों की रूह-रूहान तीन रूपों से सुन रहे हैं। एक नयनों की भाषा में बोल रहे हैं। 2.भावना की भाषा में, 3. संकल्प की भाषा में बोल रहे हैं। मुख की भाषा तो कामन भाषा है। लेकिन यह तीन प्रकार की भाषा रूहानी योगी जीवन की भाषा है। जिसको रूहानी बच्चे और रूहानी बाप जानते हैं। और अनुभव करते हैं। जितना-जितना अन्तर्मुखी स्वीट साइलेन्स स्वरूप में स्थित होते जायेंगे - उतना इन तीन भाषाओं द्वारा सर्व आत्माओं को अनुभव करायेंगे। यह अलौकिक भाषायें कितनी शक्तिशाली हैं। मुख की भाषा सुनकर और सुनाकर मैजारिटी थक गये हैं। मुख की भाषा में किसी भी बात को स्पष्ट करने में समय भी लगता है। लेकिन नयनों की भाषा इशारा देने की भाषा है। मन के भावना की भाषा चेहरे के द्वारा भाव रूप में प्रसिद्ध होती हैं। चेहरे का भाव मन की भावना को सिद्ध करता है। जैसे कोई भी किसी के सामने जाता है, स्नेह से जाता है वा दुश्मनी से जाता है, वा कोई स्वार्थ से जाता है तो उसके मन का भाव चेहरे से दिखाई देता है। किस भावना से कोई आया है वह नैन-चैन बोलते हैं। तो भावना की भाषा चेहरे के भाव से जान भी सकते हो, बोल भी सकते हो। ऐसे ही संकल्प की भाषा यह भी बहुत श्रेष्ठ भाषा है। क्योंकि संकल्प शक्ति सबसे श्रेष्ठ शक्ति है, मूल शक्ति है। और सबसे तीव्रगति की भाषा यह संकल्प की भाषा है। कितना भी कोई दूर हो, कोई साधन नहीं हो लेकिन संकल्प की भाषा द्वारा किसी को भी मैसेज दे सकते हो। अन्त में यही संकल्प की भाषा काम में आयेगी। साइन्स के साधन जब फेल हो जाते हैं तो यह साइलेन्स का साधन काम में आयेगा। लेकिन कोई भी कनेक्शन जोड़ने के लिए सदा लाइन क्लीयर चाहिए। जितना-जितना एक बाप और उन्हीं द्वारा सुनाई हुई नालेज में वा उसी नालेज द्वारा सेवा में सदा बिज़ी रहने के अभ्यासी होंगे उतना श्रेष्ठ संकल्प होने के कारण लाइन क्लीयर होगी। व्यर्थ संकल्प ही डिस्टर्बेन्स हैं। जितना व्यर्थ समाप्त हो समर्थ संकल्प चलेंगे उतना संकल्प श्रेष्ठ, भाषा इतनी ही स्पष्ट अनुभव करेंगे। जैसे मुख की भाषा से अनुभव करते हो। संकल्प की भाषा सेकण्ड में मुख की भाषा से बहुत ज़्यादा किसी को भी अनुभव

करा सकते हैं। तीन मिनट के भाषण का सार सेकण्ड में संकल्प की भाषा से अनुभव करा सकते हो। सेकण्ड में जीवन-मुक्त का जो गायन है वह अनुभव करा सकते हो।

(04/12/1985)

साकार रूप में भी निमित्त बन कर्म सिखलाने के लिए पूरे 84 जन्म लेने वाली ब्रह्मा की आत्मा निमित्त बनी। कर्म में कर्म बन्धनों से मुक्त होने में, कर्म सम्बन्ध को निभाने में, देह में रहते विदेही स्थिति में स्थित रहने में, तन के बन्धनों को मुक्त करने में, मन की लगन में मगन रहने की स्थिति में, धन का एक-एक नया पैसा सफ़ल करने में, साकार ब्रह्मा, साकार जीवन में निमित्त बने। कर्मबन्धनी आत्मा, कर्मातीत बनने का एक्ज़ाम्पल बने। तो साकार जीवन को फ़ालो करना सहज है ना! यही पाठ हुआ फ़ालो फ़ादर। प्रश्न भी चाहे तन के पूछते, सम्बन्ध के पूछते वा धन के पूछते हैं। सब प्रश्नों का जवाब - ब्रह्मा बाप की जीवन है। जैसे आजकल के साइंस वाले हर एक प्रश्न का उत्तर कम्प्यूटर से पूछते हैं। क्योंकि समझते हैं मनुष्य की बुद्धि से यह कम्प्यूटर एक्यूरेट है। बनाने वाले से भी बनी हुई चीज़ को एक्यूरेट समझ रहे हैं। लेकिन आप साइलेन्स वालों के लिए ब्रह्मा की जीवन ही एक्यूरेट कम्प्यूटर है। इसलिए क्या, कैसे के बजाए जीवन के कम्प्यूटर से देखो। कैसा और क्या का क्वेश्चन ऐसे ही बदल जायेगा। प्रश्नचित्त के बजाए प्रसन्नचित्त हो जायेंगे। प्रश्नचित्त हलचल बुद्धि है। इसलिए प्रश्न का चिन्ह भी टेढ़ा है। क्वेश्चन लिखो तो टेढ़ा बांका हैं ना? और प्रसन्नचित्त है बिन्दी। तो बिन्दी में कोई टेढ़ापन है? चारों तरफ से एक ही है। बिन्दी को किसी भी तरफ से देखो तो सीधा ही देखेंगे। और एक जैसा ही देखेंगे। चाहे उल्टा चाहे सुल्टा देखो। प्रसन्नचित्त अर्थात् एक रस स्थिति में एक बाप को फ़ालो करने वाले। फ़िर भी सार क्या निकला? फ़ालो ब्रह्मा, साकार रूप फ़ादर वा फ़ालो आकार रूप ब्रह्मा फ़ादर। चाहे

ब्रह्मा बाप को फ़ालो करो चाहे शिव बाप को फ़ालो करो। लेकिन शब्द वही है - **'फालो फादर'**।

(19/12/1985)

यह विशेष दिन विशेष कंगन बाँधना चाहिए और किसी भी हद की बातों में संकल्प शक्ति, समय की शक्ति, व्यर्थ न गँवाएं, हर संकल्प से, हर समय विशाल सेवा के निमित्त बन मंसा शक्ति से भी सहयोगी बनना है। ऐसे नहीं कि आबू में कान्फ्रन्स हो रही है, हम तो फलाने देश में बैठे हैं, नहीं। आप सभी विशाल कार्य में सहयोगी हो। वातावरण वायुमण्डल बनाओ। जब साइन्स की शक्ति से एक देश से दूसरे देश तक राकेट भेज सकते हैं तो क्या साइलेन्स की शक्ति से आप शुभ भावना, कल्याण की भावना द्वारा यहाँ आबू में मन्सा द्वारा सहयोगी नहीं बन सकते? कोई साकार में वाणी से, कर्म से निमित्त बनेंगे। कोई मन्सा सेवा में निमित्त बनेंगे। लेकिन जितना दिन प्रोग्राम चलता है चाहे 5 दिन चाहे 6 दिन चलता, इतना ही समय हर ब्राह्मण आत्मा को सेवा का कंगन बंधा हुआ हो कि मुझ आत्मा को निमित्त बन सफ़लता को लाना है। हर एक अपने को जिम्मेवार समझे। इसका भाव यह नहीं समझना कि सभी ज़िम्मेवार हैं तो भाषण का चांस मिलना चाहिए। या विशेष कोई ड्यूटी मिले तब ज़िम्मेवार हैं। इनको जिम्मेवारी नहीं कहते। जहाँ भी हो, जो भी ड्यूटी मिली है, चाहे दूर बैठने की, चाहे स्टेज पर आने की - मुझे सहयोगी बनना ही है। इसको कहा जाता है सारे विश्व में सेवा की रूहानियत की लहर फैलाना। खुशी की, उमंग-उत्साह की लहर फैल जाएँ। ऐसे सहयोगी हो? इस कान्फ्रेन्स में नवीनता दिखायेंगे ना? गोल्डन जुबली है तो चारों ओर गोल्डन एज आने वाली है, इसके खुशी की लहर फैल जाए। जो भयभीत आत्मायें हैं, ना उम्मीद आत्मायें हैं उन्हों में श्रेष्ठ भविष्य की उम्मीद पैदा करो।

(30/12/1985)

मुहब्बत से जो मेहनत करते हैं उसका फल बहुत अच्छा निकलता है। यह सभी के सहयोग की विशेषता है। कोई भी बात हो लेकिन पहले दृढ़ता, स्नेह का संगठन चाहिए। उससे सफलता प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देती है। दृढ़ता कलराठी जमीन में भी फल पैदा कर सकती है। आजकल साइंस वाले भी रेत में भी फल पैदा करने का प्रयत्न कर रहें हैं। तो साइलेन्स की शक्ति क्या नहीं कर सकती है।

(04/03/1986)

कम से कम सभी को थोड़ा साइलेन्स में रहने का अभ्यास कराने के निमित्त तो बन जायेंगे। अगर कोई सही रीति से एक मिनट भी साइलेन्स का अनुभव करे तो वह एक मिनट का साईलेन्स का अनुभव बार-बार उनको स्वत: ही खींचता रहेगा। क्योंकि सभी को शांति चाहिए। लेकिन विधि नहीं आती है। संग नहीं मिलता है। जबकि शांति प्रिय सब आत्मायें है तो ऐसी आत्माओं को शांति की अनुभूति होने से स्वत: ही आकर्षित होते रहेंगे।

(04/03/1986)

बापदादा सभी बच्चों की स्वीट साइलेन्स की स्थिति को देख रहें हैं। एक सेकेण्ड में साइलेन्स की स्थिति में स्थित हो जाना यह प्रैक्टिस कहाँ तक की है। इस स्थिति में जब चाहें तब स्थित हो सकते हैं वा समय लगता है? क्योंकि अनादि स्वरूप 'स्वीट साइलेन्स' है। आदि स्वरूप आवाज में आने का है। लेकिन अनादि अविनाशी संस्कार - 'साइलेन्स' है। तो अपने अनादि संस्कार, अनादि स्वरूप को, अनादि स्वभाव को जानते हुए जब चाहो तब उस स्वरूप में स्थित हो सकते हो? 84 जन्म आवाज में आने के हैं इसलिए ज़्यादा अभ्यास आवाज में आने का है। लेकिन अनादि स्वरूप और फिर इस समय चक्र पूरा होने के कारण वापिस साइलेन्स होम में जाना है। अब घर जाने का समय समीप है। अब आदि मध्य अन्त तीनों ही काल का पार्ट समाप्त कर अपने अनादि स्वरूप, अनादि स्थिति में स्थित

होने का समय है। इसलिए इस समय यही अभ्यास ज़्यादा आवश्यक है। अपने आपको चेक करो कि कर्मेन्द्रिय-जीत बने हैं? आवाज में नहीं आने चाहें तो यह मुख का आवाज अपनी तरफ खींचता तो नहीं है? इसी को ही रूहानी ड्रिल कहा जाता है।

जैसे वर्तमान समय के प्रमाण शरीर के लिए सर्व बीमारियों का इलाज 'एक्सरसाइज' सिखाते हैं, तो इस समय आत्मा को शक्तिशाली बनाने के लिए यह रूहानी एक्सरसाइज का अभ्यास चाहिए। चारों ओर कितना भी वातावरण हो, हलचल हो लेकिन आवाज में रहते आवाज से परे स्थिति का अभ्यास अभी बहुत काल का चाहिए। शान्त वातावरण में शान्ति की स्थिति बनाना यह कोई बड़ी बात नहीं है। अशान्ति के बीच आप शान्त रहो, यही अभ्यास चाहिए। ऐसा अभ्यास जानते हो? चाहे अपनी कमजोरियों की हलचल हो, संस्कारों के व्यर्थ संकल्पों की हलचल हो। ऐसी हलचल के समय स्वयं को अचल बना सकते हो वा टाइम लग जाता है? क्योंकि टाइम लगना यह कभी भी धोखा दे सकता है। समाप्ति के समय में ज्यादा समय नहीं मिलना है। फाइनल रिजल्ट का पेपर कुछ सेकण्ड और मिनटों का ही होना है। लेकिन चारों ओर की हलचल के वातावरण में अचल रहने पर ही नम्बर मिलना है। अगर बहुतकाल हलचल की स्थिति से अचल बनने में समय लगने का अभ्यास होगा तो समाप्ति के समय क्या रिजल्ट होगी? इसलिए यह रूहानी एक्सरसाइज का अभ्यास करो। मन को जहाँ और जितना समय स्थित करना चाहो उतना समय वहाँ स्थित कर सको। फाइनल पेपर है बहुत ही सहज। और पहले से ही बता देते हैं कि यह पेपर आना है। लेकिन नम्बर बहुत थोड़े समय में मिलना है। स्टेज भी पावरफुल हो।

देह, देह के सम्बन्ध, देह-संस्कार, व्यक्ति या वैभव, वायब्रेशन, वायुमण्डल सब होते हुए भी आकर्षित न करे। इसी को ही कहते हैं - 'नष्टोमोहा समर्थ स्वरूप'। तो ऐसी प्रैक्टिस है? लोग चिल्लाते रहें और आप अचल रहो। प्रकृति भी, माया भी सब लास्ट दाँव लगाने लिए अपने तरफ कितना भी खींचे लेकिन

आप न्यारे और बाप के प्यारे बनने की स्थिति में लवलीन रहो। इसको कहा जाता - देखते हुए न देखो। सुनते हुए न सुनो। ऐसा अभ्यास हो। इसी को ही 'स्वीट साइलेन्स' स्वरूप की स्थिति कहा जाता है। फिर भी बापदादा समय दे रहा है। अगर कोई भी कमी है तो अब भी भर सकते हो। क्योंकि बहुतकाल का हिसाब सुनाया। तो अभी थोड़ा चांस है। इसलिए इस प्रैक्टिस की तरफ फुल अटेन्शन रखो। पास विद आनर बनना या पास होना इसका आधार इसी अभ्यास पर है। ऐसा अभ्यास है? समय की घण्टी बजे तो तैयार होंगे या अभी सोचते हो तैयार होना है। इसी अभ्यास के कारण 'अष्ट रत्नों की माला' विशेष छोटी बनी है। बहुत थोड़े टाइम की है। जैसे आप लोग कहते हो ना सेकण्ड में मुक्ति वा जीवनमुक्ति का वर्सा लेना सभी का अधिकार है। तो समाप्ति के समय भी नम्बर मिलना थोड़े समय की बात है। लेकिन जरा भी हलचल न हो। बस बिन्दी कहा और बिन्दी में टिक जायें। बिन्दी हिले नहीं। ऐसे नहीं कि उस समय अभ्यास करना शुरू करो - मैं आत्मा हूँ...मैं आत्मा हूँ.. यह नहीं चलेगा। क्योंकि सुनाया - वार भी चारों ओर का होगा। लास्ट ट्रायल सब करेंगे। प्रकृति में भी जितनी शक्ति होगी, माया में भी जितनी शक्ति होगी, ट्रायल करेगी। उनकी भी लास्ट ट्रायल और आपकी लास्ट कर्मातीत, कर्मबन्धन मुक्त स्थिति होगी। दोनों तरफ की बहुत पावरफुल सीन होगी। वह भी फुलफोर्स, यह भी फुलफोर्स। लेकिन सेकण्ड की विजय, विजय के नगाड़े बजायेगी। समझा लास्ट पेपर क्या है! सब शुभ संकल्प तो यही रखते भी हैं और रखना भी है कि नम्बरवन आना ही है। तो सबमें चारों ओर की बातों में विन होंगे तभी वन आयेंगे। अगर एक बात में ज़रा भी व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ समय लग गया तो नम्बर पीछे हो जायेगा। इसलिए सब चेक करो। चारों ही तरफ चेक करो। डबल विदेशी सबमें तीव्र जाने चाहते हैं ना! इसलिए तीव्र पुरुषार्थ वा फुल अटेन्शन इस अभ्यास में अभी से देते रहो। समझा! क्वेश्चन को भी जानते हो और टाइम को भी जानते हो। फिर तो सब पास होने चाहिए! अगर पहले से क्वेश्चन का पता होता

है तो तैयारी कर लेते हैं। फिर पास हो जाते हैं। आप सभी तो पास होने वाले होना!

(16/03/1986)

डबल विदेशी अर्थात् सदा अपने स्व-स्वरूप, स्वदेश, स्वराज्य के स्मृति में रहने वाले। डबल विदेशियों को विशेष कौनसी सेवा करनी है? अभी साइलेन्स की शक्ति का अनुभव विशेष रूप से आत्माओं को कराना। यह भी विशेष सेवा है। जैसे साइंस की पावर नामीग्रामी है ना। बच्चे-बच्चे को मालूम है कि साइंस क्या है। ऐसे साइलेन्स-पावर साइन्स से भी ऊंची है। वह दिन भी आना है। साइलेन्स के पावर की प्रत्यक्षता अर्थात् बाप की प्रत्यक्षता। जैसे साइन्स प्रत्यक्ष प्रूफ दिखाती है, वैसे साइलेन्स पावर का प्रैक्टिकल प्रूफ है आप सबका जीवन। जब इतने सब प्रैक्टिकल प्रूफ दिखाई देंगे तो न चाहते हुए सभी की नजर में सहज आ जायेंगें। जैसे यह (पिछले वर्ष) पीस का कार्य किया ना, इसको स्टेज पर प्रैक्टिकल में दिखाया। ऐसे ही चलते-फिरते पीस के मॉडल दिखाई दें तो साइंस वालों की भी नजर साइलेन्स वालों के ऊपर अवश्य जायेगी। समझा? साइंस की इन्वेन्शन विदेश में ज्यादा होती है। तो साइलेन्स के पावर का आवाज भी वहाँ से सहज फैलेगा। सेवा का लक्ष्य तो है ही, सभी को उमंग-उत्साह भी है। सेवा के बिना रह नहीं सकते। जैसे भोजन के बिना रह नहीं सकते, ऐसे सेवा के बिना भी रह नहीं सकते। इसलिए बापदादा खुश है।

(05/10/1987)

जब साइन्स की शक्ति अल्पकाल के लिए किसी का दु:ख-दर्द समाप्त कर लेती है, तो पवित्रता की शक्ति अर्थात् साइलेन्स की शक्ति दु:ख-दर्द समाप्त नहीं कर सकती? साइन्स की दवाई में अल्पकाल की शक्ति है तो पवित्रता की शक्ति में, पवित्रता की दुआ में कितनी बड़ी शक्ति है? समय प्रमाण जब आज के व्यक्ति दवाइयों से कारणे-अकारणे तंग होंगे, बीमारियाँ अति में जायेंगी तो समय

पर आप पवित्र देव वा देवियों के पास दुआ लेने लिए आयेंगे कि हमें दुःख, अशान्ति से सदा के लिए दूर करो। पवित्रता की दृष्टि-वृति साधारण शक्ति नहीं है। यह थोड़े समय की शक्तिशाली दृष्टि वा वृति सदाकाल की प्राप्ति कराने वाली है। जैसे अभी जिस्मानी डॉक्टर्स और जिस्मानी हॉस्पिटल्स समय प्रति समय बढ़ते भी जाते हैं, फिर भी डॉक्टर्स को फुर्सत नहीं, हॉस्पिटल्स में स्थान नहीं। रोगियों की सदा ही क्यू लगी हुई होती है। ऐसे आगे चल हॉस्पिटल्स वा डॉक्टर्स पास जाने का, दवाई करने का, चाहते हुए भी जा नहीं सकेंगे। मैजारिटी निराश हो जायेंगे तो क्या करेंगे? **जब दवा से निराश होंगे तो कहाँ जायेंगे? आप लोगों के पास भी क्यू लगेगी।** जैसे अभी आपके वा बाप के जड़ चित्रों के सामने 'ओ दयालू, दया करो' कहकर दया वा दुआ मांगते रहते हैं, ऐसे आप चैतन्य, पवित्र, पूज्य आत्माओं के पास 'ओ पवित्र देवियों वा पवित्र देव! हमारे ऊपर दया करो' - यह मांगने के लिए आयेंगे। आज अल्पकाल की सिद्धि वालों के पास शफा लेने वा सुख-शान्ति की दया लेने के लिए कितने भटकते रहते हैं! समझते हैं - दूर से भी दृष्टि पड़ जाए। तो आप परमात्म-विधि द्वारा सिद्धि-स्वरूप बने हो। जब अल्पकाल के सहारे समाप्त हो जायेंगे तो कहाँ जायेंगे?

(14/11/1987)

आज सर्वशक्तिवान बापदादा अपने शक्ति सेना को देख रहे हैं। यह रूहानी शक्ति सेना विचित्र सेना है। नाम रूहानी सेना है लेकिन विशेष साइलेन्स की शक्ति है, शान्ति देने वाली अहिंसक सेना है। तो आज बापदादा हर एक शान्ति देवा बच्चे को देख रहे हैं कि हर एक ने शान्ति की शक्ति कहाँ तक जमा की है? यह शान्ति की शक्ति इस रूहानी सेना के विशेष शस्त्र हैं। हैं सभी शस्त्रधारी लेकिन नम्बरवार हैं। शान्ति की शक्ति सारे विश्व को अशान्त से शान्त बनाने वाली है, न सिर्फ मनुष्य आत्माओं को लेकिन प्रकृति को भी परिवर्तन करने वाली है। शान्ति की शक्ति को अभी और भी गुह्य रूप से जानने और अनुभव करने का है। जितना

इस शक्ति में शक्तिशाली बनेंगे, उतना ही शान्ति की शक्ति का महत्व, महानता का अनुभव ज्यादा करते जायेंगे। अभी वाणी की शक्ति से सेवा के साधनों की शक्ति अनुभव कर रहे हो और इस अनुभव द्वारा सफलता भी प्राप्त कर रहे हो। लेकिन वाणी की शक्ति वा स्थूल सेवा के साधनों से ज्यादा साइलेन्स की शक्ति अति श्रेष्ठ है। साइलेन्स की शक्ति के साधन भी श्रेष्ठ हैं। जैसे वाणी की सेवा के साधन चित्र, प्रोजेक्टर वा वीडियो आदि बनाते हो, ऐसे शान्ति की शक्ति के साधन - 'शुभ संकल्प, शुभ-भावना और नयनों की भाषा है'। जैसे मुख की भाषा द्वारा बाप का वा रचना का परिचय देते हो, ऐसे साइलेन्स की शक्ति के आधार पर नयनों की भाषा से नयनों द्वारा बाप का अनुभव करा सकते हो। जैसे प्रोजेक्टर द्वारा चित्र दिखाते हो, वैसे आपके मस्तक के बीच चमकता हुआ आपका वा बाप का चित्र स्पष्ट दिखा सकते हो। जैसे वर्तमान समय वाणी द्वारा याद की यात्रा का अनुभव कराते हो, ऐसे साइलेन्स की शक्ति द्वारा आपका चेहरा (जिसको मुख कहते हो) आप द्वारा भिन्न-भिन्न याद की स्टेजस का स्वत: ही अनुभव करायेगा। अनुभव करने वालों को यह सहज महसूस होगा कि इस समय बीजरूप स्टेज का अनुभव हो रहा है वा फरिश्ते-रूप का अनुभव हो रहा है वा भिन्न-भिन्न गुणों का अनुभव आपके इस शक्तिशाली फेश से स्वत: ही होता रहेगा।

जैसे वाणी द्वारा आत्माओं को स्नेह के सहयोग की भावना उत्पन्न कराते हो, ऐसे आपकी शुभ भावना स्नेह के भावना की स्थिति में स्वयं स्थित होंगे। तो जैसी आपकी भावना होगी वैसी भावना उन्हों में भी उत्पन्न होगी। आपकी शुभ भावना उन्हों की भावना को प्रज्वलित करेगी। जैसे दीपक, दीपक को जगा देता है, ऐसे आपकी शक्तिशाली शुभ भावना औरों में भी सर्वश्रेष्ठ भावना सहज ही उत्पन्न करायेगी। जैसे वाणी द्वारा अभी सारा स्थूल कार्य करते रहते हो, ऐसे साइलेन्स के शक्ति के श्रेष्ठ साधन - शुभ संकल्प की शक्ति से स्थूल कार्य भी ऐसे ही सहज कर सकते हो वा करा सकते हो। जैसे साइन्स की शक्ति के साधन टेलीफोन, वायरलेस हैं, ऐसे यह शुभ संकल्प सम्मुख बात करने वा टेलीफोन,

वायरलेस द्वारा कार्य कराने का अनुभव करायेगा। ऐसे साइलेन्स की शक्ति में विशेषतायें हैं। साइलेन्स की शक्ति कम नहीं है। लेकिन अभी वाणी की शक्ति को, स्थूल साधनों को ज्यादा कार्य में लगाते हो, इसलिए यह सहज लगते हैं। साइलेन्स की शक्ति के साधनों को प्रयोग में नहीं लाया है, इसलिए इनका अनुभव नहीं है। वह सहज लगता है, यह मेहनत का लगता है। लेकिन समय परिवर्तन प्रमाण यह शान्ति की शक्ति के साधन प्रयोग में लाने ही होंगे।

इसलिए, हे शान्ति देवा श्रेष्ठ आत्मायें! इस शान्ति की शक्ति को अनुभव में लाओ। जैसे वाणी की प्रैक्टिस करते-करते वाणी के शक्तिशाली हो गये हो, ऐसे शान्ति की शक्ति के भी अभ्यासी बनते जाओ। आगे चल वाणी वा स्थूल साधनों के द्वारा सेवा का समय नहीं मिलेगा। ऐसे समय पर शान्ति की शक्ति के साधन आवश्यक होंगे। क्योंकि जितना जो महान् शक्तिशाली शस्त्र होता है वह कम समय में कार्य ज्यादा करता हैं। और जितना जो महान शक्तिशाली होता है वह अति सूक्ष्म होता है। तो वाणी से शुद्ध-संकल्प सूक्ष्म हैं, इसलिए सूक्ष्म का प्रभाव शक्तिशाली होगा। अभी भी अनुभवी हो, जहाँ वाणी द्वारा कोई कार्य सिद्ध नहीं होता है तो कहते हो - यह वाणी से नहीं समझेंगे, शुभ भावना से परिवर्तन होंगे। जहाँ वाणी कार्य को सफल नहीं कर सकती, वहाँ साइलेन्स की शक्ति का साधन शुभ-संकल्प, शुभ-भावना, नयनों की भाषा द्वारा रहम और स्नेह की अनुभूति कार्य सिद्ध कर सकती है। जैसे अभी भी कोई वाद-विवाद वाला आता है तो वाणी से और ज्यादा वाद-विवाद में आ जाता है। उसको याद में बिठाए साइलेन्स की शक्ति का अनुभव कराते हो ना। एक सेकण्ड भी अगर याद द्वारा शान्ति का अनुभव कर लेते हैं तो स्वयं ही अपनी वाद-विवाद की बुद्धि को साइलेन्स की अनुभूति के आगे सरेन्डर कर देते हैं। तो इस साइलेन्स की शक्ति का अनुभव बढ़ाते जाओ। अभी यह साइलेन्स की शक्ति की अनुभूति बहुत कम है। साइलेन्स की शक्ति का रस अब तक मैजारिटी ने सिर्फ अंचली मात्र अनुभव किया है। हे शान्ति-देवा। आपके भक्त आपके जड़ चित्रों से शान्ति का अल्पकाल

का अनुभव करते हैं, ज्यादा करके मांगते भी शान्ति है क्योंकि शान्ति में सुख समाया हुआ है। तो बापदादा देख रहे थे शान्ति की शक्ति के अनुभवी आत्मायें कितनी हैं, वर्णन करने वाली कितनी हैं और प्रयोग करने वाली कितनी हैं। इसके लिए - 'अन्तर्मुखता और एकान्तवासी बनने की आवश्यकता है'। बाहरमुखता में आना सहज है लेकिन अन्तर्मुखी का अभ्यास अभी समय प्रमाण बहुत चाहिए। कई बच्चे कहते हैं - एकान्तवासी बनने का समय नहीं मिलता, अन्तर्मुखी-स्थिति का अनुभव करने का समय नहीं मिलता, क्योंकि सेवा की प्रवृति, वाणी के शक्ति की प्रवृति बहुत बढ़ गई है। लेकिन इसके लिए कोई इकट्ठा आधा वा एक घण्टा निकालने की आवश्यकता नहीं है। सेवा की प्रवृति में रहते भी बीच-बीच में इतना समय मिल सकता है जो एकान्तवासी बनने का अनुभव करो।

एकान्तवासी अर्थात् कोई भी एक शक्तिशाली स्थिति में स्थित होना। चाहे बीजरूप स्थिति में स्थित हो जाओ, चाहे लाइट-हाउस, माइट-हाउस स्थिति में स्थित हो जाओ अर्थात् विश्व को लाइट-माइट देने वाले - इस अनुभूति में स्थित हो जाओ। चाहे फरिश्तेपन की स्थिति क्षरा औरों को भी अव्यक्त-स्थिति का अनुभव कराओ। एक सेकण्ड वा एक मिनट अगर इस स्थिति में एकाग्र हो स्थित हो जाओ तो यह एक मिनट की स्थिति स्वयं आपको और औरों को भी बहुत लाभ दे सकती है। सिर्फ इसकी प्रैक्टिस चाहिये। अब ऐसा कौन है जिसको एक मिनट भी फुर्सत नहीं मिल सकती? जैसे पहले ट्रैफिक कन्ट्रोल का प्रोग्राम बना तो कई सोचते थे - यह कैसे हो सकता? सेवा की प्रवृति बहुत बड़ी है, बिजी रहते हैं। लेकिन लक्ष्य रखा तो हो रहा है ना। प्रोग्राम चल रहा है ना। सेन्टर्स पर यह ट्रैफिक कन्ट्रोल का प्रोग्राम चलाते हो वा कभी मिस करते, कभी चलाते? यह एक ब्राह्मण कुल की रीति है, नियम है। जैसे और नियम आवश्यक समझते हो, ऐसे यह भी स्व-उन्नति के लिए वा सेवा की सफलता के लिए, सेवाकेन्द्र के वातावरण के लिए आवश्यक है। ऐसे अन्तर्मुखी, एकान्तवासी बनने के अभ्यास के लक्ष्य को लेकर अपने दिल की लगन से बीच-बीच में समय निकालो। महत्व जानने वाले को समय

स्वत: ही मिल जाता है। महत्व नहीं है तो समय भी नहीं मिलता। एक पॉवरफुल स्थिति में अपने मन को, बुद्धि को स्थित करना ही एकान्तवासी बनना है। जैसे साकार ब्रह्मा बाप को देखा, सम्पूर्णता की समीपता की निशानी - सेवा में रहते, समाचार भी सुनते-सुनते एकान्तवासी बन जाते थे। यह अनुभव किया ना। एक घण्टे के समाचार को भी 5 मिनट में सार समझ बच्चों को भी खुश किया और अपनी अन्तर्मुखी, एकान्तवासी स्थिति का भी अनुभव कराया। सम्पूर्णता की निशानी - अन्तर्मुखी, एकान्तवासी स्थिति चलते-फिरते, सुनते, करते अनुभव किया। तो फालो फादर नहीं कर सकते हो? ब्रह्मा बाप से ज्यादा जिम्मेवारी और किसकी है क्या? ब्रह्मा बाप ने कभी नहीं कहा कि मैं बहुत बिजी हूँ। लेकिन बच्चों के आगे एग्जैम्पल बने। ऐसे अभी समय प्रमाण इस अभ्यास की आवश्यकता है। सब सेवा के साधन होते हुए भी साइलेन्स की शक्ति के सेवा की आवश्यकता होगी क्योंकि साइलेन्स की शक्ति अनुभूति कराने की शक्ति है। वाणी की शक्ति का तीर बहुत करके दिमाग तक पहुँचता है और अनुभूति का तीर दिल तक पहुँचता है। तो समय प्रमाण एक सेकण्ड में अनुभूति करा लो - यही पुकार होगी। सुनने-सुनाने के थके हुए आयेंगे। साइलेन्स की शक्ति के साधनों द्वारा नजर से निहाल कर देंगे। शुभ संकल्प से आत्माओं के व्यर्थ संकल्पों को समाप्त कर देंगे। शुभ भावना से बाप की तरफ स्नेह की भावना उत्पन्न करा लेंगे। ऐसे उन आत्माओं को शान्ति की शक्ति से सन्तुष्ट करेंगे, तब आप चैतन्य शान्ति देव आत्माओं के आगे 'शान्ति देवा, शान्ति देवा' कह करके महिमा करेंगे और यही अंतिम संस्कार ले जाने के कारण द्वापर में भक्त आत्मा बन आपके जड़ चित्रों की यह महिमा करेंगे। यह ट्रैफिक कन्ट्रोल का भी महत्व कितना बड़ा है और कितना आवश्यक है - यह फिर सुनायेंगे। लेकिन शान्ति की शक्ति के महत्व को स्वयं जानो और सेवा में लगाओ। समझा?

(18/11/1987)

जैसे साइन्स की शक्ति धरनी की आकर्षण से परे कर लेती है, ऐसे साइलेन्स की शक्ति इन सब हद की आकर्षणों से दूर ले जाती है। इसको कहते हैं सम्पूर्ण सम्पन्न बाप समान स्थिति। तो ऐसी स्थिति के अभ्यासी बने हो? स्थूल कर्मेन्द्रियाँ - यह तो बहुत मोटी बात है। कर्मेन्द्रिय-जीत बनना, यह फिर भी सहज है। लेकिन मन-बुद्धि-संस्कार, इन सूक्ष्म शक्तियों पर विजयी बनना - यह सूक्ष्म अभ्यास है। जिस समय जो संकल्प, जो संस्कार इमर्ज करने चाहें वही संकल्प, वही संस्कार सहज अपना सकें - इसको कहते हैं सूक्ष्म शक्तियों पर विजय अर्थात् राजऋषि स्थिति। जैसे स्थूल कर्मेन्द्रियों को आर्डर करते हो कि यह करो, यह न करो। हाथ नीचे करो, ऊपर हो, तो ऊपर हो जाता है ना। ऐसे संकल्प और संस्कार और निर्णयशक्ति 'बुद्धि' ऐसे ही आर्डर पर चले। आत्मा अर्थात् राजा, मन को अर्थात् संकल्प शक्ति को आर्डर करे कि अभी-अभी एकाग्रचित हो जाओ, एक संकल्प में स्थित हो जाओ। तो राजा का आर्डर उसी घड़ी उसी प्रकार से मानना - यह है राज-अधिकारी की निशानी। ऐसे नहीं कि तीन चार मिनट के अभ्यास बाद मन माने या एकाग्रता के बजाए हलचल के बाद एकाग्र बने, इसको क्या कहेंगे? अधिकारी कहेंगे? तो एसी चेकिंग करो। क्योंकि पहले से ही सुनाया है कि अन्तिम समय की अन्तिम रिजल्ट के समय एक सेकेण्ड का क्वेश्चन एक ही होगा। इन सूक्ष्म शक्तियों के अधिकारी बनने का अभ्यास अगर नहीं होगा अर्थात आपका मन राजा का आर्डर एक घड़ी के बजाए तीन घड़ियों में मानता है तो राज्य अधिकारी कहलायेंगें वा एक सेकेण्ड के अन्तिम पेपर में पास होगें? कितने मार्क्स मिलेंगे?

(27/11/1987)

सभी दृष्टि द्वारा शक्तियों की प्राप्ति की अनुभूति करने के अनुभवी हो ना! जैसे वाणी द्वारा शक्ति की अनुभूति करते हो। मुरली सुनते हो तो समझते हो ना शक्ति मिली। ऐसे दृष्टि द्वारा शक्तियों की प्राप्ति के अनुभूति के अभ्यासी बने हो

या वाणी द्वारा अनुभव होता है, दृष्टि द्वारा कम। दृष्टि द्वारा शक्ति कैच कर सकते हो? क्योंकि कैच करने के अनुभवी होंगे तो दूसरों को भी अपने दिव्य दृष्टि द्वारा अनुभव करा सकते हैं। और आगे चल कर वाणी द्वारा सबको परिचय देने का समय भी नहीं होगा और सरकमस्टांस भी नहीं होंगे, तो क्या करेंगे? वरदानी दृष्टि द्वारा, महादानी दृष्टि द्वारा महादान देंगे, वरदान देंगे। तो पहले जब स्वयं में अनुभव होगा तब दूसरों को करा सकेंगे। दृष्टि द्वारा शान्ति की शक्ति, प्रेम की शक्ति, सुख वा आनन्द की शक्ति सब प्राप्त होती है। जड़ मूर्तियों के आगे भी जाते हैं तो जड़ मूर्ति बोलती तो नहीं है ना! फ़िर भी भक्त आत्माओं को कुछ-न-कुछ प्राप्ति होती है, तब तो जाते हैं। कैसे प्राप्ति होती है? उनकी दिव्यता के वायब्रेशन से और दिव्य नयनों की दृष्टि को देख कर वायब्रेशन लेते हैं। कोई भी देवता या देवी की मूर्ति में विशेष अटेन्शन नयनों के तरफ़ देखेंगे। हरेक का अटेन्शन सूरत की तरफ़ जाता है। क्योंकि मस्तक के द्वारा वायब्रेशन मिलते हैं, नयनों के द्वारा दिव्यता की अनुभूति होती है। वह आप चैतन्य मूर्तियों की जड़ मूर्तियाँ हैं। आप सबने चैतन्य में यह सेवा की है तब जड़ मूर्तियाँ बनी हैं। तो दृष्टि द्वारा शक्ति लेना और दृष्टि द्वारा शक्ति देना - यह प्रैक्टिस करो। शान्ति के शक्ति की अनुभूति बहुत श्रेष्ठ है। जैसे वर्तमान समय साइंस की शक्ति का प्रभाव है, हर एक अनुभव करते हैं। लेकिन साइंस की शक्ति साइलेन्स की शक्ति से ही निकली है ना! जब साइंस की शक्ति अल्पकाल के लिए प्राप्ति करा रही है तो साइलेन्स की शक्ति कितनी प्राप्ति करायेगी। पद्मगुणा तो इतनी शक्ति जमा करो। बाप की दिव्य दृष्टि द्वारा स्वयं में शक्ति जमा करो। तब समय पर दे सकेंगे। अपने लिए ही जमा किया और कार्य में लगा दिया अर्थात् कमाया और खाया। जो कमाते हैं और खा के खत्म कर देते हैं उनका कभी जमा का खाता नहीं रहता और जिसके पास जमा का खाता नहीं होता है उसको समय पर धोखा मिलता है। धोखा मिलेगा तो दुःख की प्राप्ति होगी। अगर साइलेन्स की शक्ति जमा नहीं होगी, दृष्टि के महत्त्व का अनुभव नहीं होगा तो लास्ट समय श्रेष्ठ पद प्राप्त करने में धोखा खा लेंगे फ़िर दुःख होगा। पश्चाताप्

होगा ना। इसलिए अभी से बाप की दृष्टि द्वारा प्राप्त हुई शक्तियों को अनुभव करते जमा करते रहो।

(23/11/1989)

जैसे साइंस के साधन दूर बैठे आत्माओं से समीप का सम्बन्ध कराने के निमित्त बन जाते हैं, आपकी आवाज़ पहुँच जाती है, आपका सन्देश पहुँच जाता है, दृश्य पहुँच जाता है। तो जब साइंस की शक्ति अल्पकाल के लिए समीपता का फल दे सकती है तो आपके साइलेन्स की शक्तिशाली शुभभावना दूर बैठे भी आत्माओं को फल नहीं दे सकेगी? लेकिन इसका आधार है - अपने अन्दर इतनी शान्ति की शक्ति जमा हो! साइलेन्स की शक्ति यह अलौकिक अनुभव करा सकती है। आगे चल कर यह प्रत्यक्ष प्रमाण अनुभव करते रहेंगे।

(27/11/1989)

साइलेन्स की शक्ति को अच्छी तरह से जानते हो? साइलेन्स की शक्ति सेकण्ड में अपने स्वीट होम, शान्तिधाम में पहुँचा देती है। साइन्स वाले तो और फास्ट गति वाले यंत्र निकालने का प्रयत्न कर रहे हैं। लेकिन आपका यंत्र कितनी तीव्रगति का है! सोचा और पहुँचा! ऐसा यंत्र साइन्स में हैं जो इतना दूर बिना खर्च के पहुँच जाएं? वो तो एक-एक यंत्र बनाने में कितना खर्चा करते हैं, कितना समय और कितनी एनर्जी लगाते हैं, आपने क्या किया? बिना खर्चे मिल गया। 'यह संकल्प की शक्ति सबसे फास्ट है।' आपको शुभ संकल्प का यंत्र मिला है, दिव्य बुद्धि मिली है। शुद्ध मन और दिव्यबुद्धि से पहुँच जाते हो। जब चाहे तब लौट आओ, जब चाहो तब चले जाओ। साइन्स वालों को तो मौसम भी देखनी पड़ती है। आपको तो यह भी नहीं देखना पड़ता कि आज बादल हैं, नहीं जा सकेंगे। आजकल देखो - बादल तो एवररेडी हैं या कभी फागी आती है? एवररेडी है? सेकण्ड में जा सकते हैं - ऐसी तीव्रगति है? माया कभी रुकावट तो नहीं डालती

है? मास्टर सर्वशक्तिवान को कोई रोक नहीं सकता। जहाँ सर्वशक्तियां हैं वहाँ कौन रोकेगा! कोई भी शक्ति की कमी होती है तो समय पर धोखा मिल सकता है। मानो सहनशक्ति आप में है लेकिन निर्णय करने की शक्ति कमजोर है, तो जब ऐसी कोई परिस्थिति आयेगी जिसमें निर्णय करना हो, उस समय नुकसान हो जायेगा। होती एक ही घड़ी निर्णय करने की है - हाँ या ना, लेकिन उसका परिणाम कितना बड़ा होता है! तो सब शक्तियां अपने पास चेक करो। ऐसे नहीं ठीक है, चल रहे हैं योग तो लगा रहे हैं। लेकिन योग से जो प्राप्तियाँ हैं - वह सब हैं? या थोड़े में खुश हो गये कि बाप तो अपना हो गया। बाप तो अपना है लेकिन प्रापर्टी (वर्सा) भी अपनी है ना या सिर्फ बाप को पा लिया - ठीक है? वर्से के मालिक बनना है ना? बाप की प्रापर्टी है 'सर्वशक्तियाँ' इसलिए बाप की महिमा ही है 'सर्वशक्तिवान् आलमाइटी अथार्टी।' सर्वशक्तियों का स्टॉक जमा है? या इतना ही है - कमाया और खाया, बस! **बापदादा ने सुनाया है कि आगे चलकर आप मास्टर सर्वशक्तिवान के पास सब भिखारी बनकर आयेंगे। पैसे या अनाज के भिखारी नहीं लेकिन 'शक्तियों' के भिखारी आयेंगे। तो जब स्टाक होगा तब तो देंगे ना! दान वही दे सकता जिसके पास अपने से ज्यादा है।** अगर अपने जितना ही होगा तो दान क्या करेंगे? तो इतना जमा करो। संगम पर और काम ही क्या है? जमा करने का ही काम मिला है। सारे कल्प में और कोई युग नहीं है जिसमें जमा कर सको। फिर तो खर्च करना पड़ेगा, जमा नहीं कर सकेंगे। तो जमा के समय अगर जमा नहीं किया तो अन्त में क्या कहना पड़ेगा - 'अब नहीं तो कब नहीं' फिर टू लेट (ऊदद र्ूेंं) का बोर्ड लग जायेगा। अभी तो लेट का बोर्ड है, टू लेट का नहीं।

(14/01/1990)

जैसे आवाज में आना अति सहज लगता है ऐसे ही आवाज से परे हो जाना इतना सहज है? यह बुद्धि की एक्सरसाइज़ सदैव करते रहना चाहिए। जैसे शरीर

की एक्सरसाइज़ शरीर को तन्दुरुस्त बनाती है ऐसे आत्मा की एक्सरसाइज़ आत्मा को शक्तिशाली बनाती है। तो यह एक्सरसाइज़ आती है या आवाज में आने की प्रैक्टिस ज्यादा है? अभी-अभी आवाज में आना और अभी-अभी आवाज से परे हो जाना - जैसे वह सहज लगता है वैसे यह भी सहज अनुभव हो। क्योंकि आत्मा मालिक है। सभी राजयोगी हो, प्रजायोगी तो नहीं? राजा का काम है आर्डर पर चलाना। तो यह मुख भी आपके आर्डर पर हो - जब चाहो तब चलाओ और जब चाहो तब नहीं चलाओ। आवाज से परे हो जाओ लेकिन इस रुहानी एक्सरसाइज़ में सिर्फ मुख की आवाज से परे नहीं होना है। मन से भी आवाज में आने के संकल्प से परे होना है। मुख से चुप हो जाओ और मन में बातें करते रहो। आवाज से परे अर्थात मुख और मन दोनों की आवाज से परे, शान्ति के सागर में समा जायें। यह स्वीट साइलेन्स की अनुभूति कितनी प्यारी है! अनुभवी तो हो ना। एक सेकेण्ड भी आवाज से परे हो स्वीट साइलेन्स की स्थिति में स्थित हो जाओ। तो कितना प्यारा लगता है?

साइलेन्स प्यारी क्यों लगती है? क्योंकि आत्मा का स्वधर्म ही शान्त है, ओरिजनल देश भी शान्ति देश है। इसलिए आत्मा को स्वीट साइलेन्स बहुत प्यारी लगती है। एक सकेण्ड में भी आराम मिल जाता है। कितनी भी मन से, तन से थके हुए हो लेकिन अगर एक मिनट भी स्वीट साइलेन्स में चले जाओ तो तन और मन को आराम ऐसा अनुभव होगा जैसे बहुत समय आराम करके कोई उठता है तो कितना फ्रेश होता है! कभी भी कोई हलचल होती है, लड़ाई झगड़ा या हल्ला-गुल्ला कुछ भी होता है तो एक दो को क्या कहते है? शान्त हो जाओ। क्योंकि शान्ति में आराम है। तो आप भी सारे दिन में समय प्रति समय, जब भी समय मिले स्वीट साइलेन्स में चले जाओ। अनुभव में खो जाओ - बहुत अच्छा लगेगा। अशरीरी बनने का अभ्यास सहज हो जायेगा। क्योंकि अन्त में अशरीरीपन का अभ्यास ही काम में आयेगा। सेकेण्ड में अशरीरी हो जायें। चाहे अपना पार्ट भी कोई चल रहा हो लेकिन अशरीरी बन आत्मा साक्षी हो अपने शरीर का भी पार्ट

देखे। मैं आत्मा न्यारी हूँ, शरीर से यह पार्ट करा रही हूँ। यही न्यारेपन की अवस्था अन्त में विजयी या पास विद् ऑनर का सर्टिफिकेट देंगी।

(16/03/1992)

दिव्य बुद्धि प्राप्त करने वाली आत्मायें सदा अदिव्य को भी दिव्य बना देती हैं। जैसे गाया जाता है कि पारस अगर लोहे को लगता है तो वह भी पारस बन जाता है। तो दिव्य बुद्धि अर्थात् पारस बुद्धि। ऐसे बने हो? क्योंकि बुद्धि हर बात को ग्रहण करती है। दिव्य बुद्धि दिव्यता को ही ग्रहण करेगी। ऐसे परिवर्तन कर सकते हो। अदिव्य को दिव्य बना सकते हो? या अदिव्यता का प्रभाव पड़ जायेगा? कोई अदिव्य बात हो जाये, अदिव्य कार्य हो जाये - उसका प्रभाव आपके ऊपर पड़ेगा? दिव्य बुद्धि के वरदान से परिवर्तन-शक्ति अदिव्य को भी दिव्य के रूप में बदल देगी। अदिव्य वातावरण या अदिव्य चलन, बोल दिव्य बुद्धि के ऊपर असर नहीं करेंगे। ऐसी स्थिति वाले को ही दिव्य बुद्धि वरदानी-मूर्त कहा जायेगा। जैसे- वाटर-प्रूफ होता है, आग-प्रूफ होता है। साइन्स के साधन वाटर-प्रूफ बना देते हैं, आग-प्रूफ बना सकते हैं। तो साइलेन्स की शक्ति परिवर्तन नहीं कर सकती है, प्रूफ नहीं बना सकती हैं? नॉलेज रखना और चीज है-यह दिव्य है, यह अदिव्य है। लेकिन प्रभाव में आना और चीज है। दिव्यता की शक्ति श्रेष्ठ है या अदिव्यता की शक्ति श्रेष्ठ है? तो दिव्यता का प्रभाव अदिव्यता पर पड़ना चाहिए ना। तो अभी दिव्य बुद्धि के वरदान को कार्य में लगाओ। लगाना तो आता है या कभी भूल जाते हो? आधा कल्प भूलने वाले बने लेकिन अभी अभूल बनना है।

(12/11/1992)

'जितना' और 'उतना' शब्द क्यों निकलता है? कहते हो सुख-शान्ति की जननी पवित्रता है। जब भी अतीन्द्रिय सुख वा स्वीट साइलेन्स का अनुभव कम होता है, इसका कारण पवित्रता का फाउण्डेशन कमज़ोर है। पहले भी सुनाया है

कि पवित्रता सिर्फ़ ब्रह्मचर्य का व्रत नहीं, ये व्रत भी महान् है क्योंकि इस ब्रह्मचर्य के व्रत को आज की महान् आत्मा कहलाने वाले भी मुश्किल तो क्या लेकिन असम्भव समझते हैं। तो असम्भव को अपने दृढ़ संकल्प द्वारा सम्भव किया है और सहज पालन किया है इसलिये ये व्रत भी धारण करना कम बात नहीं है। बापदादा इस व्रत को पालन करने वाली आत्माओं को दिल से दुआओं सहित मुबारक देते हैं। लेकिन बापदादा हर एक ब्राह्मण बच्चे को सम्पूर्ण और सम्पन्न देखना चाहते हैं। **(23/12/1993)**

बापदादा ने पहले भी इशारा दिया है कि ज्ञानी-योगी आत्मायें बने हो, अब ज्ञान और योग के शक्ति को प्रयोग में लाने वाले प्रयोगशाली आत्मायें बनो। जैसे साइन्स की शक्ति का प्रयोग दिखाई देता है ना, लेकिन साइन्स की शक्ति के प्रयोग का भी मूल आधार क्या है? आज जो भी साइन्स ने प्रयोग कर साधन दिये हैं, उन सब साधनों का आधार क्या है? साइन्स के प्रयोग का आधार क्या है? मैजारिटी देखेंगे लाइट है। लाइट द्वारा ही प्रयोग होता है। अगर कम्प्युटर भी चलता है तो किसके आधार से? कम्प्युटर माइट है लेकिन आधार लाइट है ना। तो आपके साइलेन्स की शक्ति का भी आधार क्या है? लाइट है ना। जब वह प्रकृति की लाइट द्वारा एक लाइट अनेक प्रकार के प्रयोग प्रैक्टिकल में करके दिखाती है तो आपकी अविनाशी परमात्म लाइट, आत्मिक लाइट और साथ-साथ प्रैक्टिकल स्थिति लाइट, तो उससे क्या नहीं प्रयोग हो सकता! आपके पास स्थिति भी लाइट है और मूल स्वरूप भी लाइट है। जब भी कोई प्रयोग करना चाहते हो तो पहले अपने मूल आधार को चेक करो। जैसे कोई भी साइन्स के साधन को यूज़ करेंगे तो पहले चेक करेंगे ना कि लाइट है या नहीं है। ऐसे जब योग का, शक्तियों का, गुणों का प्रयोग करते हो तो पहले ये चेक करो कि मूल आधार आत्मिक शक्ति, परमात्म शक्ति वा लाइट (हल्की) स्थिति है? अगर स्थिति और स्वरूप डबल लाइट है तो प्रयोग की सफलता बहुत सहज कर सकते हो। और सबसे पहले इस

अभ्यास को शक्तिशाली बनाने के लिये पहले अपने पर प्रयोग करके देखो। हर मास वा हर 15 दिन के लिये कोई न कोई विशेष गुण वा कोई न कोई विशेष शक्ति का स्व प्रति प्रयोग करके देखो। क्योंकि संगठन में वा सम्बन्ध-सम्पर्क में पेपर तो आते ही हैं तो पहले अपने ऊपर प्रयोग में चेक करो कोई भी पेपर आया लेकिन जो शक्ति वा जो गुण का प्रयोग करने का लक्ष्य रखा, उसमें कहाँ तक सफलता मिली? और कितने समय में सफलता मिली? जैसे साइन्स का प्रयोग दिन-प्रतिदिन थोड़े समय में प्रत्यक्ष रूप का अनुभव कराने में आगे बढ़ रहा है तो समय भी कम करते जाते हैं। थोड़े समय में सफलता ज्यादा-यह साइन्स वालों का भी लक्ष्य है। ऐसे जो भी लक्ष्य रखा उसमें समय को भी चेक करो और सफलता को भी चेक करो। जब स्व के प्रति प्रयोग में सफल हो जायेंगे तो दूसरी आत्माओं के प्रति प्रयोग करना सहज हो जायेगा और जब स्व के प्रति सफलता अनुभव करेंगे तो आपके दिल में औरों के प्रति प्रयोग करने का उमंग-उत्साह स्वतः ही बढ़ता जायेगा। अन्य आत्माओं के सम्बन्ध-सम्पर्क में स्व के प्रयोग द्वारा उन आत्माओं को भी आपके प्रयोग का प्रभाव स्वतः ही पड़ता रहेगा।

(01/02/1994)

इस वर्ष क्या करेंगे? कहने में तो कहते हो कि इस वर्ष के मिलन की अन्तिम बारी है। लेकिन अन्त, आदि की याद ज्यादा दिलाता है। आदि, मध्य की याद दिलाता है लेकिन अन्त आदि की याद दिलाता। तो अन्त नहीं, लेकिन आदि है। तीव्र गति के उड़ान की आदि है। जो अनादि रफ्तार है, अनादि स्वरूप है आत्म स्वरूप, तो अनादि स्वरूप की रफ्तार क्या है? कितनी तेज़ रफ्तार है! आजकल के भिन्न-भिन्न साइन्स के साधनों के तीव्र गति से भी तीव्र गति। साइन्स के साधनों की रफ्तार फिर भी साइन्स, साइन्स द्वारा रफ्तार को कट भी कर सकती, पकड़ सकती है लेकिन आत्मा की गति को कोई अभी तक न पकड़ सका है, न पकड़ सकता है। इसमें ही साइन्स अपने को फेल समझती है। और जहाँ साइन्स फेल है

वहाँ साइलेन्स की शक्ति से जो चाहो वो कर सकते हो। तो आत्म शक्ति की उड़ान की तीव्र गति की आदि करो। चाहे स्व परिवर्तन में, चाहे किसी की भी वृत्ति परिवर्तन में, चाहे वायुमण्डल परिवर्तन में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क के परिवर्तन में अभी तीव्र गति लाओ। तीव्रता की निशानी है सोचा और हुआ।

(14/04/1994)

जब यह नेचुरल स्थिति हो जाये कि हर व्यक्ति को, बात को पॉजिटिव वृत्ति से देखो, सुनो या सोचो तो कैसी स्थिति रहेगी? आजकल के साइन्स द्वारा भी ऐसे साधन निकले हैं जो रफ़ माल को भी बहुत सुन्दर रूप में बदल देते हैं। देखा है ना - क्या से क्या बना देते हैं! तो आपकी वृत्ति क्या ऐसा परिवर्तन नहीं कर सकती? आवे निगेटिव रूप में लेकिन आप निगेटिव को पॉजिटिव वृत्ति से बदल दो। अगर हलचल में आते हैं तो उसका कारण है-निगेटिव सुनना, सोचना वा बोलना या करना। ये मॉडल बनाते हो ना - न सोचो, न देखो, न बोलो, न करो। साइलेन्स की पॉवर क्या निगेटिव को पॉजिटिव में नहीं बदल सकती! आपका मन और बुद्धि ऐसा बन जाये जो निगेटिव टच नहीं करे, सेकण्ड में परिवर्तन हो जाये। ऐसे तीव्र गति की अनुभूति कर सकते हो? मन और बुद्धि ऐसा तीव्र गति का यन्त्र बन जाये। बन सकता है कि टाइम लगेगा? कि निगेटिव बात आयेगी तो कहेंगे कि थोड़ा सोचने तो दो, देखें तो सही क्या है! क्विक स्पीड से परिवर्तन हो जाये - इसको कहा जाता है ब्राह्मण जीवन का मज़ा, मौज़। अगर जीना है तो मौज़ से जीयें। सोच-सोचकर जीना वो जीना नहीं है। आप लोग औरों को कहते हो कि राजयोग जीने की कला है। तो आप लोग राजयोगी जीवन वाले हो ना! कि कहने वाले हो? जब राजयोग जीने की कला है तो राजयोगियों की कला क्या है? यही है ना? तो उत्सव मनाना अर्थात् मौज में रहना। मन भी मौज में, तन भी मौज में, सम्बन्ध-सम्पर्क भी मौज में।

(26/02/1995)

सभी दूर-दूर से प्यार से आये हैं। बापदादा विदेश को भी देख रहा है। भिन्न टाइम होते भी बहुत प्यार से समय देकर सुन रहे हैं। (विदेश में 200 स्थानों पर सैटलाइट द्वारा मुरली सुन रहे हैं) देखो यह भी फास्ट गति है ना। यहाँ का आवाज विदेश में 200 स्थान पर पहुंच रहा है, यह भी आवाज की गति फास्ट है ना। यह भी इन्वेन्शन है ना। तो आप साइलेन्स के पावर की गति फास्ट नहीं कर सकते हो? साइन्स ने भारत का आवाज विदेश तक पहुंचाया और आप अपने दिल की शुभ भावनायें आत्माओं को नहीं पहुंचा सकते हो! पहुंचा सकते हैं ना? नहीं तो साइन्स आगे चली जायेगी, साइलेन्स की पावर थोड़ा कम दिखाई देगी। इसलिए साइलेन्स की शक्ति को प्रत्यक्ष करो। सभी में है। एक ब्राह्मण भी नहीं है जो कहे कि मेरे में साइलेन्स की शक्ति नहीं है। सभी में है, कितने ब्राह्मण हैं? इतने ब्राह्मणों की सकाश क्या नहीं कर सकती? सभी में साइलेन्स की शक्ति है? तो अभी एक मिनट में सभी अपने साइलेन्स की शक्ति इमर्ज करो। एकदम साइलेन्स मन से, तन से इमर्ज करो। **(बापदादा ने डेड साइलेन्स की ड्रिल करवाई)**

(28/11/1997)

दादियों से:- सीजन की समाप्ति निर्विघ्न हुई? बापदादा यही वर्तमान समय देखने चाहते हैं कि जो विशेष निमित्त आत्मायें हैं, जैसे मुख का आवाज साइन्स के साधनों से दूर बैठे पहुंचता है, ऐसे मन का आवाज संकल्प यह भी ऐसे ही पहुंचे, जैसे यह साइन्स द्वारा मुख का आवाज पहुंचता है। जैसे शुरू में साक्षात्कार होते थे, इशारे मिलते थे, और उसी इशारे से कईयों को जागृति भी आई, ऐसे अभी जो आदि में हुआ वह अन्त में, पहले तो स्थापना थी तो एक ब्रह्मा बाप द्वारा साक्षात्कार हुआ, लेकिन अभी प्रैक्टिकल में शक्तियों का पार्ट है, ब्रह्मा बाप शिव बाप गुप्त है, बैकबोन है लेकिन स्टेज पर शक्तियों का पार्ट है, तो शक्तियां अनन्य भी बहुत हैं। वह एक ब्रह्मा बाप ने किया, अभी ऐसी मनोबल की शक्ति प्रत्यक्ष हो जैसे मुख का आवाज क्लीयर पहुंचता है ना। ऐसे मन का आवाज धीरे-धीरे

पहुंचता जाए, बाप आ गया। सिर्फ यह आवाज भी पहुंच गया तो ढूढ़ने तो लगेंगे। फिर आपेही पहुंचेंगे। लेकिन यह मनोबल की सेवा अभी होनी चाहिए। यह सारे विश्व तक आवाज कुछ साइन्स और कुछ साइलेन्स की शक्ति द्वारा ही पहुँचेगा, जिसको मन का आवाज पहुँचेगा वह समझो ज्यादा समीप आयेंगे और जिसको मुख का आवाज पहुँचेगा, उनमें से नम्बरवार होंगे। इसलिए अभी यह साइलेन्स की विशेषता क्या है और साइलेन्स के बल से क्या-क्या कर सकते हैं, हो सकता है इस विषय पर ज्यादा अटेन्शन क्योंकि समय कम है और सेवा विश्व की हर आत्मा को सन्देश पहुंचाना है। इसलिए बापदादा ने कहा कि कुछ सुनायेंगे क्योंकि निमित्त तो आप हो वायुमण्डल में लहर फैलाने के निमित्त तो आप ही हैं। हैं ना? तो ऐसी लहर फैलाओ। सभी सहयोगी बन जाओ। अभी मन का आवाज मुख के आवाज से भी ज्यादा काम कर सकता है। तो ऐसे ग्रुप बनाओ जो इस कार्य के रुचि वाले हों और इसकी रिहर्सल करते रहें। जैसे पहले शुरू में याद का अभ्यास किया, सेवा के नये-नये प्लैन्स बनाये तो उससे इतनी वृद्धि हुई है ना। अभी जैसे पहली रचना हुई, मुख द्वारा डायरेक्ट, फिर हुई मन्सा संकल्प द्वारा ब्रह्मा द्वारा, अभी है शक्तियों द्वारा, जो कहते हैं कि शक्तियों ने वाण चलाये। तो यह वाण जो संकल्प द्वारा स्पष्ट आवाज पहुंच जाए, कोई बुला रहा है, कोई कुछ कह रहा है। जैसे कोई-कोई को स्वप्न पीछे पड़ जाता है, जब तक वह काम पूरा नहीं करता तो बार-बार स्वप्न उसको जागृत करता रहता। कई रिधि सिधि वाले भी कुछ विधि से करते हैं। लेकिन योग की विधि द्वारा यह आवाज फैले। ऐसे सेवा के प्लैन बनाओ। जैसे अभी यह उत्सवों का वर्ष मनाया ना। अभी वह तो हो गया, अभी फिर ऐसी कोई लहर फैलाओ जो विहंग मार्ग की सेवा हो। मुख की विहंग मार्ग की सेवायें तो बहुत की। उसकी रिजल्ट तो है ही। अभी फिर कोई नवीनता। समझा। देखेंगे कौन-कौन इसमें नम्बर लेता है।

(30/03/1998)

बापदादा कहते हैं आप लोगों ने ही प्रकृति को सेवा दी है कि खूब सफाई करो, उसको लम्बा-लम्बा झाड़ू दिया है, सफा करो। तो घबराते क्यों हो? आपके आर्डर से वह सफाई करायेगी तो आप क्यों हलचल में आते हो? आपने ही तो आर्डर दिया है। तो अचल-अडोल बन मन और बुद्धि को बिल्कुल शक्तिशाली बनाए अचल-अडोल स्थिति में स्थित हो जाओ। प्रकृति का खेल देखते चलो। घबराना नहीं। आप अलौकिक हो, साधारण नहीं हो। साधारण लोग हलचल में आयेंगे, घबरायेंगे। अलौकिक, मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मायें खेल देखते अपने विश्व-कल्याण के कार्य में बिजी रहेंगे। अगर मन और बुद्धि को फ्री रखा तो घबरायेंगे। मन और बुद्धि से लाइट हाउस हो, लाइट फैलायेंगे, इस कार्य में बिजी रहेंगे तो बिजी आत्मा को भय नहीं होगा, साक्षीपन होगा; और कोई भी हलचल हो अपने बुद्धि को सदा ही क्लीयर रखना, क्यों क्या में बुद्धि को बिजी वा भरा हुआ नहीं रखना, खाली रखना। एक बाप और मैं.. तब समय अनुसार चाहे पत्र, टेलीफोन, टी.वी. वा आपके जो भी साधन निकले हैं, वह नहीं भी पहुंचे तो बापदादा का डायरेक्शन क्लीयर कैच होगा। यह साइंस के साधन कभी भी आधार नहीं बनाना। यूज़ करो लेकिन साधनों के आधार पर अपनी जीवन को नहीं बनाओ। कभी-कभी साइंस के साधन होते हुए भी यूज़ नहीं कर सकेंगे। इसलिए साइलेन्स का साधन - जहाँ भी होंगे, जैसी भी परिस्थिति होगी बहुत स्पष्ट और बहुत जल्दी काम में आयेगा। लेकिन अपने बुद्धि की लाइन क्लीयर रखना। समझा। आप ही तो आह्वान कर रहे हैं कि जल्दी-जल्दी गोल्डन एज आ जावे। तो गोल्डन एज में यह सफाई चाहिए ना। तो प्रकृति अच्छी सफाई करेगी।

(13/02/1999)

चारों ओर हलचल है, प्रकृति के सभी तत्व खूब हलचल मचा रहे हैं, एक तरफ भी हलचल से मुक्त नहीं हैं, व्यक्तियों की भी हलचल है, प्रकृति की भी हलचल है, ऐसे समय पर जब इस सृष्टि पर चारों ओर हलचल है तो आप क्या

करेंगे? सेफ्टी का साधन कौन -सा है? सेकण्ड में अपने को विदेही, अशरीरी वा आत्म-अभिमानी बना लो तो हलचल में अचल रह सकते हो। इसमें टाइम तो नहीं लगेगा? क्या होगा? अभी ट्रायल करो - एक सेकण्ड में मन-बुद्धि को जहाँ चाहो वहाँ स्थित कर सकते हो? (ड्रिल) इसको कहा जाता है - 'साधना'। अच्छा।

(13/02/1999)

वैज्ञानिकों को बहुत अच्छा अनुभव है। जैसे साइंस दिनप्रतिदिन अति सूक्ष्म, महीन होती जाती है। ऐसे आप साइलेन्स और साइंस - दोनों के अनुभवी हो। तो अपने हमजिन्स को साइलेन्स का महत्व सुनाओ। उनका भी कल्याण करो। कल्याण करना आता है ना? साइलेन्स भी एक विज्ञान है, साइलेन्स का विज्ञान क्या है, उसकी इन्हों को पहचान दो। साइलेन्स के विज्ञान से क्या-क्या होता है, यह जानने से साइंस भी ज्यादा रिफाइन कर सकेंगे क्योंकि हमारी नई दुनिया में भी विज्ञान तो काम में आयेगा ना! लेकिन रिफाइन रूप में होगा। अभी के विज्ञान की इन्वेन्शन में फायदा भी है, नुकसान भी है। लेकिन नई दुनिया में रिफाइन विज्ञान होने के कारण नुकसान का नाम-निशान नहीं होगा। तो ऐसे जो बड़े-बड़े वैज्ञानिक हैं उन्हों को साइलेन्स का ज्ञान दो। तो फिर अपनी नई दुनिया में रिफाइन विज्ञान का कार्य करने में मददगार बनेंगे।

(30/11/1999)

बापदादा ने पहले भी इशारा दिया है - सबसे बड़ा खजाना है जो वर्तमान और भविष्य बनाता है, वह है श्रेष्ठ खजाना, श्रेष्ठ संकल्प का खजाना। संकल्प शक्ति बहुत बड़ी शक्ति है जो आप बच्चों के पास है - श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति। संकल्प तो सबके पास हैं लेकिन श्रेष्ठ शक्ति, शुभ-भावना शुभ-कामना की संकल्प शक्ति, मन-बुद्धि एकाग्र करने की शक्ति - यह आपके पास ही है। और जितना आगे बढ़ते जायेंगे इस संकल्प शक्ति को जमा करते जायेंगे, व्यर्थ नहीं

गंवायेंगे, व्यर्थ गंवाने का मुख्य कारण है -व्यर्थ संकल्प। व्यर्थ संकल्प, बापदादा ने देखा है मैजारिटी बच्चों के सारे दिन में व्यर्थ अभी भी है। जैसे स्थूल धन को एकानामी से यूज़ करने वाले सदा ही सम्पन्न रहते हैं और व्यर्थ गंवाने वाले कहाँ न कहाँ धोखा खा लेते हैं। ऐसे श्रेष्ठ शुद्ध संकल्प में इतनी ताकत है जो आपके कैचिंग पावर, वायब्रेशन कैच करने की पावर, बहुत बढ़ सकती है। यह वायरलेस, यह टेलीफोन.... जैसे यह साइंस का साधन कार्य करता है वैसे यह शुद्ध संकल्प का खजाना, ऐसा ही कार्य करेगा जो लण्डन में बैठे हुए कोई भी आत्मा का वायब्रेशन आपको ऐसे ही स्पष्ट कैच होगा जैसे यह वायरलेस या टेलीफोन, टी.वी. यह जो भी साधन हैं....कितने साधन निकल गये हैं, इससे भी स्पष्ट आपकी कैचिंग पावर, एकाग्रता की शक्ति से बढ़ेगी। यह आधार तो खत्म होने ही हैं। यह सब साधन किस आधार पर हैं? लाइट के आधार पर। जो भी सुख के साधन हैं मैजारिटी लाइट के आधार पर हैं। तो क्या आपकी आध्यात्मिक लाइट, आत्म लाइट यह कार्य नहीं कर सकती! जो चाहो वायब्रेशन नजदीक के, दूर के कैच कर सकेंगे। अभी क्या है, एकाग्रता की शक्ति मन-बुद्धि दोनों ही एकाग्र हो तब कैचिंग पावर होगी। बहुत अनुभव करेंगे। संकल्प किया - नि:स्वार्थ, स्वच्छ, स्पष्ट वह बहुत क्विक अनुभव करायेगा। साइलेन्स की शक्ति के आगे यह साइन्स झुकेगी। अभी भी समझते जाते हैं कि साइंस में भी कोई मिसिंग हैं जो भरनी चाहिए। इसलिए **बापदादा फिर से अन्डरलाइन करा रहा है कि अन्तिम स्टेज, अन्तिम सेवा - यह संकल्प शक्ति बहुत फास्ट सेवा करायेगी। इसीलिए संकल्प शक्ति के ऊपर और अटेन्शन दो। बचाओ, जमा करो। बहुत काम में आयेगी।** प्रयोगी इस संकल्प की शक्ति से बनेंगे। साइंस का महत्व क्यों है? प्रयोग में आती है तब सब समझते हैं हाँ साइंस अच्छा काम करती है। तो साइलेन्स की पावर का प्रयोग करने के लिए एकाग्रता की शक्ति चाहिए और एकाग्रता का मूल आधार है - मन की कन्ट्रोलिंग पावर, जिससे मनोबल बढ़ता है। मनोबल की बड़ी महिमा है, यह रिद्धि-सिद्धि वाले भी मनोबल द्वारा

अल्पकाल के चमत्कार दिखाते हैं। आप तो विधि पूर्वक, रिधि सिद्धि नहीं, विधि पूर्वक कल्याण के चमत्कार दिखायेंगे जो वरदान हो जायेंगे, आत्माओं के लिए यह संकल्प शक्ति का प्रयोग वरदान सिद्ध हो जायेगा। तो पहले यह चेक करो कि मन को कन्ट्रोल करने की कन्ट्रोलिंग पावर है? सेकण्ड में जैसे साइन्स की शक्ति, स्विच के आधार से, स्विच आन करो, स्विच आफ करो - ऐसे सेकण्ड में मन को जहाँ चाहो, जैसे चाहो, जितना समय चाहो, उतना कन्ट्रोल कर सकते हैं? बहुत अच्छे-अच्छे स्वयं प्रति भी और सेवा प्रति भी सिद्धि रूप दिखाई देंगे। लेकिन बापदादा देखते हैं कि संकल्प शक्ति के जमा का खाता अभी साधारण अटेन्शन है। जितना होना चाहिए उतना नहीं है। संकल्प के आधार पर बोल और कर्म ऑटोमेटिक चलते हैं। अलग-अलग मेहनत करने की जरूरत ही नहीं है, आज बोल को कन्ट्रोल करो, आज दृष्टि को अटेन्शन में लाओ, मेहनत करो, आज वृत्ति को अटेन्शन से चेंज करो। अगर संकल्प शक्ति पावरफुल है तो यह सब स्वत: ही कन्ट्रोल में आ जाते हैं। मेहनत से बच जायेंगे। तो संकल्प शक्ति का महत्व जानो।

(15/12/1999)

ब्रह्मा की तपस्या का फल आप बच्चों को मिल रहा है। तपस्या का प्रभाव इस मधुबन भूमि में समाया हुआ है। साथ में बच्चे भी हैं, बच्चों की भी तपस्या है लेकिन निमित्त तो ब्रह्मा बाप कहेंगे। जो भी मधुबन तपस्वी भूमि में आते हैं तो ब्राह्मण बच्चे भी अनुभव करते हैं कि यहाँ का वायुमण्डल, यहाँ के वायब्रेशन सहजयोगी बना देते हैं। योग लगाने की मेहनत नहीं, सहज लग जाता है और कैसी भी आत्मायें आती हैं, वह कुछ न कुछ अनुभव करके ही जाती हैं। ज्ञान को नहीं भी समझते लेकिन अलौकिक प्यार और शान्ति का अनुभव करके ही जाते हैं। कुछ न कुछ परिवर्तन करने का संकल्प करके ही जाते हैं। यह है ब्रह्मा और ब्राह्मण बच्चों की तपस्या का प्रभाव। साथ में सेवा की विधि - भिन्न-भिन्न प्रकार की सेवा बच्चों से प्रैक्टिकल में कराके दिखाई। उसी विधियों को अभी विस्तार में

ला रहे हो। तो जैसे ब्रह्मा बाप के त्याग, तपस्या, सेवा का फल आप सब बच्चों को मिल रहा है। **ऐसे हर एक बच्चा अपने त्याग, तपस्या और सेवा का वायब्रेशन विश्व में फैलाये।** जैसे साइन्स का बल अपना प्रभाव प्रत्यक्ष रूप में दिखा रहा है ऐसे साइन्स की भी रचता साइलेन्स बल है। साइलेन्स बल को अभी प्रत्यक्ष दिखाने का समय है। **साइलेन्स बल का वायब्रेशन तीव्रगति से फैलाने का साधन है - मन-बुद्धि की एकाग्रता।** यह एकाग्रता का अभ्यास बढ़ना चाहिए। एकाग्रता की शक्तियों द्वारा ही वायुमण्डल बना सकते हो। हलचल के कारण पावरफुल वायब्रेशन बन नहीं पाता।

बापदादा आज देख रहे थे कि एकाग्रता की शक्ति अभी ज्यादा चाहिए। सभी बच्चों का एक ही दृढ़ संकल्प हो कि अभी अपने भाई-बहिनों के दु:ख की घटनायें परिवर्तन हो जाएं। दिल से रहम इमर्ज हो। क्या जब साइन्स की शक्ति हलचल मचा सकती है तो इतने सभी ब्राह्मणों के साइलेन्स की शक्ति, रहमदिल भावना द्वारा वा संकल्प द्वारा हलचल को परिवर्तन नहीं कर सकती! जब करना ही है, होना ही है तो इस बात पर विशेष अटेन्शन दो। जब आप ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर के बच्चे हैं, आपके ही सभी बिरादरी हैं, शाखायें हैं, परिवार है, आप ही भक्तों के ईष्ट देव हो। यह नशा है कि हम ही ईष्ट देव हैं? तो भक्त चिल्ला रहे हैं, आप सुन रहे हो! वह पुकार रहे हैं - हे ईष्ट देव, आप सिर्फ सुन रहे हो, उन्हों को रेसपान्ड नहीं करते हो? तो बापदादा कहते हैं हे भक्तों के ईष्ट देव अभी पुकार सुनो, रेसपान्ड दो, सिर्फ सुनो नहीं। क्या रेसपान्ड देंगे? परिवर्तन का वायुमण्डल बनाओ। आपका रेसपान्ड उन्हों को नहीं मिलता तो वह भी अलबेले हो जाते हैं। चिल्लाते हैं फिर चुप हो जाते हैं।

(18/01/2000)

बिन्दी रूप में कर्म करते हुए कभी-कभी व्यक्त शरीर में आ जाना पड़ता है लेकिन बापदादा ने देखा कि साइंस वालों ने एक लाइट के आधार से रोबट

बनाया है, सुना है ना! चलो देखा नहीं सुना तो है। माताओं ने सुना है? आपको चित्र दिखा देंगे। वह लाइट के आधार से रोबट बनाया है और वह सब काम करता है। और फास्ट गति से करता है, लाइट के आधार से। और साइंस का प्रत्यक्ष प्रमाण है। तो बापदादा कहते हैं क्या साइलेन्स की शक्ति से, साइलेन्स की लाइट से आप कर्म नहीं कर सकते? नहीं कर सकते? आप भी एक रूहानी रोबट की स्थिति तैयार करो। जिसको कहेंगे रूहानी कर्मयोगी, फरिश्ता कर्मयोगी। पहले आप तैयार हो जाना। बापदादा ऐसे रूहानी चलते-फिरते कर्मयोगी फरिश्ते देखने चाहते हैं। अमृतवेले उठो, बापदादा से मिलन मनाओ, रूह-रूहान करो, वरदान लो। जो करना है वह करो। लेकिन बापदादा से रोज़ अमृतवेले 'कर्मयोगी फरिश्ता भव' का वरदान लेके फिर कामकाज में आओ।

(16/12/2000)

बापदादा ने देखा। सुना नहीं देखा कि इस बारी डबल फारेनर्स ने साईलेन्स के बहुत अच्छे-अच्छे अनुभव किये। सभी का सुन तो नही सकते है, लेकिन सुन लिया है। अच्छे उमंग उत्साह से प्रोग्राम किया, और आगे भी अपने अपने देश मे जाके भी यह साइलेन्स का अनुभव बीच-बीच मे करते रहना। चाहे जितना सत्य निकाल सको क्योंकि साइलेन्स का प्रभाव सेवा पर भी पड़ता ही हैं। तो अच्छे प्रोग्राम किये। बापदादा खुश है। आगे भी बढ़ाते रहना। उडते रहना, उडाते रहना।

(20/02/2001)

अच्छा है, यहाँ का वायुमण्डल बहुत सहयोग देता है। जैसे साइन्स वाले साइन्स की शक्ति से वायुमण्डल को परिवर्तन कर देते हैं ना। गर्मी में सर्दी, हवा का वायुमण्डल बना देते हैं ना! सर्दी में गर्मी का वायुमण्डल बना देते हैं, तो साइलेन्स की शक्ति आध्यात्मिक स्मृति का वायुमण्डल बना देती है क्योंकि यहाँ

सेवा करते वृत्ति में क्या रहता है? यज्ञ सेवा है, यज्ञ का पुण्य बहुत बड़ा होता है। तो इस अविनाशी यज्ञ में सेवा करने से वृत्ति श्रेष्ठ बन जाती है। तो वायुमण्डल भी श्रेष्ठ बन जाता है।

(02/02/2007)

अभी के समय के महत्व प्रमाण जब जानते भी हो कि हर कदम में पदम समाया हुआ है, तो बढ़ाने का तो बुद्धि में रखते हो लेकिन गंवाने का भी तो बुद्धि में रखो। अगर कदम में पदम बनता भी है तो कदम में पदम गंवाते भी तो हो, या नहीं? तो अभी मिनट की बात भी गई, दूसरों के लिए कहते हो वन मिनट साइलेन्स में रहो लेकिन आप लोगों के लिए सेकण्ड की बात होनी चाहिए। जैसे हाँ और ना सोचने में कितना टाइम लगता है? सेकण्ड। तो परिवर्तन शक्ति इतनी फास्ट चाहिए। समझा। ठीक है, नहीं ठीक है, ना ठीक को बिन्दी और ठीक को प्रैक्टिकल में लाना है। अभी बिन्दी के महत्व को कार्य में लगाओ। तीन बिन्दियों को तो जानते हो ना! लेकिन बिन्दी को समय पर कार्य में लगाओ। जैसे साइंस वाले सब बात में तीव्र गति कर रहे हैं, और परिवर्तन की शक्ति भी ज्यादा कार्य में लगा रहे हैं। तो साइलेन्स की शक्ति वाले अभी लक्ष्य रखो अगर परिवर्तन करना है, नॉलेजफुल हो तो अभी पावरफुल बनो, सेकण्ड की गति से।

(15/12/2006)

(दादीजी के प्रति) अभी योग किया ना सभी ने, यह प्यार की निशानी है। अभी और जोर से योग करो जो दादी मधुबन में पहुँच जायेगी। जैसे वह आक्सीजन देते हैं ना, वेन्टीलेटर से देते हैं तो साइंस पावर से आपकी साइलेन्स पावर कम थोड़ेही है। और योग लगाओ, पावरफुल योग, देखो आपके योग से डॉक्टर्स को टचिंग हुई, कोई तो विधि चेंज की ना, अभी धीरे-धीरे कर रहे हैं, आप सभी के

दृढ़ संकल्प से विधि भी निकल आयेगी। ठीक है ना! और योग लगाओ, योग को कम नहीं करना।

(17/03/2007)

नया संसार अब परमात्म संस्कार के आधार से बनाने वाले हैं। तो सिर्फ अभी पुरुषार्थ नहीं करना है लेकिन पुरुषार्थ की प्रालब्ध भी अभी अनुभव करनी हे। सुख के साथ शान्ति को भी चेक करो - अशान्त सरकमस्टांश, अशान्त वायुमण्डल उसमें भी आप शान्ति के सागर के बच्चे सदा कमल पुष्प के समान अशान्ति को भी शान्ति के वायुमण्डल में परिवर्तन कर सकते हो? शान्त वायुमण्डल है, उसमें आपने शान्ति की अनुभूति की, यह कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन आपका वायदा है अशान्ति को शान्ति में परिवर्तन करने वाले हैं।

(31/03/2007)

नया संसार अब परमात्म संस्कार के आधार से बनाने वाले हैं। तो सिर्फ अभी पुरुषार्थ नहीं करना है लेकिन पुरुषार्थ की प्रालब्ध भी अभी अनुभव करनी हे। सुख के साथ शान्ति को भी चेक करो - अशान्त सरकमस्टांश, अशान्त वायुमण्डल उसमें भी आप शान्ति के सागर के बच्चे सदा कमल पुष्प के समान अशान्ति को भी शान्ति के वायुमण्डल में परिवर्तन कर सकते हो? शान्त वायुमण्डल है, उसमें आपने शान्ति की अनुभूति की, यह कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन आपका वायदा है अशान्ति को शान्ति में परिवर्तन करने वाले हैं।

(31/03/2007)